।। ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

जनवरी-फरवरी-मार्च 2025 संयुक्त अंक

वर्ष 17 अंक 10-11-12

कुल पृष्ठ - 60 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

महात्मा जी के ये वचन सुनकर पड़ोसी लोग महात्मा जी को कहने लगे कि महात्मा जी ! इसने तो आपको बहुत खराब गालियां दी हैं, अपशब्द कहे हैं फिर भी आप इस मूर्ख को हाथ जोड़ रहे हो? यह सुनकर पड़ोसियों को समझाते हुए महात्मा जी कहने लगे कि किसी ने भी अभी तक मुझे नहीं पहचाना था पर इसने मुझे पहचान कर बहुत ही अच्छा उपदेश दिया है। क्या उपदेश दिया है, सुनो। पहला शब्द ''खरियल'' इसके द्वारा कहा गया है। ''खरियल'' शब्द की परिभाषा होती है, बदलना। सो पहले मैं निराकार था, अब बदलकर साकार बन गया हूँ। दूसरा ''कपटी'' कहकर इसने पुकारा सो यह शरीर एक पट्टी अर्थात् वस्त्र है, मतलब शरीर रूपी चोला पहन कर आया हूँ। तीसरा इसने ''ढोंगी'' कहा, सो यह उसका कहना सोलह आने सच है, क्योंकि ढोंग का आश्रय लेकर घर के कार्य-व्यवहार, काम-धन्धे से भाग कर आया हूँ। फिर इसने एक अति उत्तम शब्द का प्रयोग कर सावधान किया है। वह शब्द है-''पापी''। यह कहता है कि अरे महात्मा जी! आपने घरबार तो छोड़ा पर अब इधर-उधर भटक कर अपना अमूल्य समय मत गंवाना, जल्दी से ''पा'' अर्थात् प्राप्त कर, ''पी'' माने परमात्मा। अर्थात् परमात्मा को जल्दी प्राप्त कर। फिर इसने ''बदमाश'' कह कर पुकारा। ''बद'' नाम है खराब का ''माश'' कहते है मांस को अर्थात् यह रक्त, मांस, मज्जा व हड्डियों का बना शरीर बिना भगवान के भजन के किसी काम नहीं आता इसलिए सब झंझटों को छोड़कर ''नामुराद'' अर्थात् प्रभु के प्यारे नामों की आराधना कर। इसने फिर कहा ''निभागा'' अर्थात् संसार के नाना रूप-रंगों को त्याग कर। ''हरामी'' अर्थात् हरि जो परमात्मा है, उसमें जाकर विश्रामी हो। महात्मा जी के इन शब्दों को सुनकर जिस व्यक्ति के द्वारा उपरोक्त शब्दों का प्रयोग किया गया था, उसी व्यक्ति की आँखें पानी से भर आयीं और महात्मा जी के चरणों में गिरकर क्षमा याचना कर कहने लगा कि हे प्रभो ! मुझ अपराधी पर दया करो, यह सुनकर महात्मा जी ने उसे आशीर्वाद देकर विदा किया।

इतनी कथा सुनाकर गुरु महाराज जी कहने लगे कि हे प्रेमियो ! जैसे भँवरा काँटों से भरे वृक्षों में लगे फूलों की सुगन्ध को ही ले आता है और जैसे मधुमक्खियाँ कड़वे से कड़वे नीम जैसे वृक्षों में से भी मिठास को चूस कर लाया करती हैं वैसे ही महापुरुष भी कड़वे शब्दों व अपशब्दों के अर्थों को बदलकर मीठा बना देते हैं। हर शब्द में छिपे हुए सार को ही ग्रहण करते हैं और अपने मन-इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों से रोककर रात-दिन भगवान के भजन में लगे रहते हैं । अपना सारा जीवन सांसारिक जीवों के उद्धार में लगा देते हैं । सत्संगों के आयोजन व बड़े यज्ञों के अनुष्ठान कर लोगों को सत्कर्म में लगाकर प्रेम रस पिलाकर उनके संतप्त हृदयों को शीतल बनाकर प्रभु से मिला देते हैं । शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

।। भजन राग कोहियारी ।।

देखा जग में सन्त उदारी, सार ग्राही सत् वीचारी ।।टेक ।।
सच ही देवे सच ही लेवे, सच ही देखे सच ही सेवे ।
सम दम आदिक षटगुण धारी ।।1 ।।
अपने शिर पर दूख सहारहिं, सब जीवों के कष्ट निवारहिं ।
स्वार्थ बिन से पर उपकारी ।।2।।
अति कृपालू कृपा करहैं, जन्म मरन दुख को वे हरहैं ।
मात पिता ते अति हितकारी ।।3।।
कहे टेऊँ से ब्रह्म ज्ञानी, रहते आत्म अन्तर ध्यानी ।
जाऊँ तिन पर मैं बलिहारी ।।4 ।।

उपरोक्त भजन की व्याख्या करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि सन्त-महात्मा लोग नाना प्रकार के कष्टोंको झेलते हुए सत्य का संचय करते हैं। स्वयं भी सत्य पथ पर चलते हैं तो औरों को भी सत्य पथ पर चलना सिखाते हैं। वें सत्य वक्ता स्व-स्वरूप में स्थित सम्यक् ब्रह्मज्ञानी माता-पिता से भी बढ़ कर स्वार्थ से रहित अपनी शरण में आये हुए जीवों का तुरन्त उद्धार कर देते हैं। इस विषय को अच्छी तरह से सुना व समझा कर राम-नाम की धुनि लगा कर गुरु महाराज जी ने सत्संग समाप्त किया। सत्संग समाप्त होते ही प्रेमी लोग उठ कर हाथ जोड़ कर गुरु महाराज जी को विनय कर कहने लगे कि हे प्रभु! आप कुछ समय और भी यहाँ पर रहने की कृपा करें। प्रेमियों की प्रार्थना सुनकर गुरु महाराज जी कहने लगे कि अभी तो हमें शुभ-विवाह पर इज़िमत गाँव को जाना है, दाना-पानी होगा तो लौटते समय आप के पास चले आयेंगे। तत्पश्चात् भोजन पाकर सब लोग आरामी हुए।

सम्वत् १६७७ के आषाढ़ मास की छः तिथि को दिन के दूसरे प्रहर में इज़िमत नामक गाँव में पहुँचे, जहाँ पर पहले से ही स्वागत-सत्कार के पूरे प्रबन्ध किये गये थे। सो गुरु महाराज जी के वहाँ पधारते ही बड़े जोर- जोर से बाजे-गाजे बजने लगे और सब प्रेमी अनेक प्रकार की फूलमालाएँ गुरु महाराज जी के गले में डाल कर गुरु महाराज जी के पवित्र नाम का बड़े जोर से जयघोष करने लगे। फिर गाते, बजाते, नाचते हुए भाई गोबिन्दराम जी की बैठक पर गुरु महाराज जी को ले आये। वहाँ एक सुन्दर ढंग से सजाए गये आसन पर गुरु महाराज जी विराजमान हुए। फिर सारी पंचायत और सब प्रेमी जो प्रसाद लेकर आये थे वो गुरु महाराज जी के आगे रख कर कुशल समाचार पूछने लगे। कुशल समाचार बतलाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि हम सब लोग एक ही अविनाशी घर के हैं फिर स्वेच्छा व अपने-अपने कर्मों के प्रभाव से आप लोग यहाँ पर जन्म ले आये और हम लोग खण्डू गाँव में जन्म लेकर आये। भाई गोबिन्दराम जी अपने भाईयों के विवाह के शुभ अवसर पर हमें यहाँ ले आये हैं आप सब को देख कर हम बहुत प्रसन्न हुए हैं। और विशेष प्रसन्नता तो तब होगी जब हम सब फिर अपने अविनाशी घर में चल कर एक दूसरे से मिलेंगे। शेष समाचार आप लोगों को रात वाले सत्संग में सुनाया जायेगा। अब आप लोग अपने कुशल समाचार सुनायें।

गुरु महाराज जी के यह अमृतमय वचन सुन कर मुखी श्री राजलदास जी कहने लगे कि आप सत् पुरुष महात्माओं की कृपा कटाक्ष से हम सब का जीवनयापन अच्छी तरह से हो रहा है। सब अपने-अपने धंधे व्यवहार में व्यस्त रहते हैं और आप सत्पुरुषों की महिमा भाई गोबिन्दराम जी के द्वारा सुनते रहते थे। महिमा सुनकर आप के दर्शनों की लालसा दिन- प्रतिदिन बढ़ती जाती थी। और आपके यहाँ पधारने की राह निहार रहे थे, सो आज आप सत् पुरुषों के मंगलमय दर्शन कर हम लोग बड़े प्रसन्न हुए हैं। कुशल समाचारों के बाद प्रसाद लेकर सब लोग अपने-अपने घर गए। गुरु महाराज जी भोजन कर आरामी हुए। सायं चार बजे जलपान कर सन्त, भगत मण्डली ले कर बगीचों की सैर कर सात बजे लौट आये और आठ बजे सत्संग में आकर विराजमान हुए । रात वाले सत्संग में प्रार्थना के विषय पर बोलते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि भगवान की प्रार्थना करना ही इस जीव का परम कर्तव्य है । शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

जनवरी-फरवरी-मार्च 2025 संयुक्त अंक

वर्ष 17 अंक 10-11-12

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
फोन 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरू धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार–शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

कविता

चैत्र चन्द्र (चेटी चंड)

नव चैत्र चंद्र के दर्शन मानों नव विधु सोहे शंकर शीष
आया है नव वर्ष लिए नव स्वर नव आशाएँ आशीष।
प्रकृति झूम करती स्वागत कण कण मुस्काता पुलकित है
श्यामल भँवरे नव गीत सुनाते आम्र मँजरी हुलसित है।
वन उपवन में पुष्पों ने रंगों की गागर छलकाई
सजी धरा पर नवल रंगोली नगर वीथिका महकाई।
नव किसलय से वृक्ष सजे मानों धारा हो नव परिधान
स्वर्णिम बाली से अन्न बरसता विहँसे कृषक खेत खलिहान।
हुई अवतरित माँ दुर्गा दस दिशि में गूँजा जय जयकार
धूप दीप नैवेद्य सजा माता का सब करते सत्कार।
शिशु समान अबोध मानस से जो भी करता अर्पित भक्ति
माँ के वरद हस्त किरपा से वह पाता तन मन की शक्ति।
इसी माह राम जन्में धरती अम्बर सब चहक उठे
बही भक्ति की रस धारा मन कदम्ब कुंज से महक उठे।
राम व्याप्त सर्वत्र जगत में कण कण में दर्शन कर लो
उनकी कृपा असीम अनन्त है सब अपनी झोली भर लो।
पावन चेटी चंड को प्रकटे महासंत श्री झूलेलाल
जग ने पाया अनमोल रत्न अरु सिंधु भूमि हो गई निहाल।
उनके वचनामृत को अपने निज जीवन में तुम ढालो
चरण वन्दना कर श्रद्धा से भक्ति का प्रसाद पालो।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	कुम्भ में देखा साांई टेऊँराम का चमत्कार, चंहु ओर हुई जय–जयकार	4–5
03.	कुम्भ मेला सभी मेलों से न्यारा– साांई टेऊँराम अमृतवाणी	5
04.	पवित्र स्थान व भूमि पर किया गया कर्म अक्षुण्ण फल देता है	6
05.	साांई टेऊँराम बाबा द्वारा बताये गये पांच प्रकार के अमृत	6
06.	अमरता का उत्सव कुम्भ पर्व	7–9
07.	प्रयागराज नामकरण–एक पौराणिक तथ्य	9
08.	प्रयागराज कुम्भ मेला–एक अपूर्व आयोजन	10–11
09.	कुम्भ में छलकी अमृत की बूंदे– प्रयागराज महाकुम्भ 2025	12
10.	प्रयागराज महाकुम्भ में प्रेम प्रकाश मण्डल अन्नक्षेत्र छावनी का हुआ शुभारम्भ	13–14
11.	प्रयागराज महाकुम्भ में स्वामी टेऊँराम चिकित्सालय का मंगल प्रारम्भ	15–17
12.	आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम द्वारा स्थापित प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र–छावनी	18–19
13.	अन्नक्षेत्र छावनी का प्रबन्धन एवं सेवा	20
14.	प्रेम प्रकाश मण्डल अन्नक्षेत्र छावनी की चित्रमय झलकियां	21–24
15.	आस्था के आगे झुका विज्ञान–महाकुम्भ पर्व 2025	25
16.	प्रयागराज धाम में कुम्भ पर्व पर पूज्य महाराजश्री के श्रीमुख से बरसा अमृतरस	26–27
17.	मकर संक्रांति के पावन पर्व पर पूज्य महाराजश्री के श्रीमुख से बरसा अमृतरस	28–29
18.	वैराग्य रूपी बसन्त का आनन्द	30
19.	लाभदायक है ऋतुराज बसन्त, बसन्त महिमा भजन	31–32
20.	युगपुरूष स्वामी टेऊँराम महाराज ने होली पर दिया संदेश, होली भजन	33–34
21.	चेटीचण्ड विशेष	35–38
22.	नवरात्री विशेष	39
23.	श्री रामनवमी, श्रीराम की मातृ–पितृ भक्ति	40–41
24.	श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का महापर्व–चैत्र मेला	42–43
25.	ग्वालियर में स्वामी गणेशानन्द महाराज जन्मोत्सव मनाया गया	44–45
26.	माया–मोह से विमुक्ति की ओर एक बड़ा कदम	46
27.	प्रेम प्रकाश आश्रम डबरा वार्षिकोत्सव की झलकियां	47
28.	पावन–प्रेरक प्रसंग	48–49
29.	वर्ष 2025 में प्रेम प्रकाश मण्डल के पर्व–उत्सव तीज–त्यौहार–कलेण्डर	50
30.	भारत के प्रसिद्ध केलेण्डरों–पंचागों में साांई टेऊँराम जयंती–पुण्यतिथि प्रकाशित	51
31.	समाचार डायरी	52–54
32.	भजन– श्री हरकेश वधवा	55
33.	अमरापुर गमन	56–57
34.	हरिद्वार में नवनिर्मित माता कृष्णा उद्यान का उद्घाटन सूचना	58
35.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	59
36.	व्रत – पर्व – उत्सव,	59
37.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	60

कुम्भ में देखा सांई टेऊँराम का चमत्कार–चहुँ ओर हुई जय–जयकार

कुम्भ महापर्व! जिसका नाम सुनते ही मन मयूर नाच उठता है, दर्शनों के लिए लालायित हो उठता है. वहाँ के अद्भुत दृश्य सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं. वहाँ के विहंगम दृश्य अलौकिक अवर्णनीय होते हैं. घास फूस की बनी झोपड़ियाँ, बड़ी–बड़ी यज्ञशालाएँ, जहाँ चतुर्वेदीय पण्डितों द्वारा उच्चारित मंत्रो की स्वर लहरियाँ, टैन्ट के बने बड़े–बड़े अस्थायी पण्डाल, साधना, ध्यान, सत्संग के शिविर! षडदर्शन साधु समाज, १३ अखाड़ों की पेशवाई, जिसमें हाथी, घोड़े, ऊँट, बैंडबाजों व नागा साधु सन्यासी, त्रिशूल–तलवार–भाले आदि हाथ में लिए शोभायात्राएँ! भस्मी–भभूत रमाये रमता पंच व दिगम्बर साधु संत! हर हर महादेव का उद्घोष, रथों पर सवार महामण्डलेश्वर! झोपड़ियों के बाहर धूनी रमाये हुए साधु संत, कोई बड़े सिंहासन पर तो कोई पर्ण कुटिया में धूनी रमाये संत! कोई संत तो १२ वर्षों तक खड़े रहकर साधनारत तो कोई पानी में योगसाधना के बल पर लेटा हुआ, तीन–तीन दिन तक जमीन के अंदर निर्जल–निराहार रहकर साधना में रत, तो कोई कांटों की शैय्या पर आराम करते साधु संत! सभी की अपनी–अपनी साधनाएँ. तीर्थ में आने वाले यात्रियों के लिए अन्नक्षेत्र के भण्डारे खुले हुए तो कहीं रहने की सुविधा हेतु बड़े–बड़े शामियाने–छोलदारियाँ. सभी पंथों संस्थाओं की अपनी–अपनी सेवाएँ. अध्यात्म, धर्म, आस्था, भक्ति, कर्म की अद्भुत जीती जागती संस्कृति के दर्शन!

इन्हीं के साथ–साथ माँ गंगे की कलकल करती धवल धाराएँ. भोरकाल से ही घण्ट–घड़ियाल, शंख, आरती की मधुरतम गूंज से वातावरण अध्यात्म भक्तिपूर्ण! विश्व भर के सभी मठ, पंथ, सम्प्रदायों आदि का अनूठा संगम! छलकती अमृत बूंदे प्राप्त करने को पहुँचते हजारों–लाखों श्रद्धालु भक्तगण! सनातन व वैदिक संस्कृति को साकार करता हुआ यह महाकुम्भ अमृत महापर्व! इसी पूर्ण कुम्भ अमृत मेले के अन्तर्गत लगभग ९६ वर्ष पूर्व सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा जी ने भी लगाई थी श्री प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र छावनी! जहाँ सांई ने भजन व भोजन प्रसाद का खोला था अखण्ड भण्डारा. हरिद्वार में सांई कमलदास कुटिया के सामने कुम्भ मेला क्षेत्र भूमि पर अस्थायी झोपड़ियाँ, कुटियाँ, भण्डारगृह, सत्संग हाल, यज्ञ मण्डप (यज्ञशाला), मुख्य द्वार पर स्थापित श्री प्रेम प्रकाशी धर्मध्वजा, घास–फूस से बना श्रीमंदिर व संत सेवाधारियों के लिए कुटियाएँ!

एक महीने तक चलने वाली प्रेम प्रकाश मण्डल अन्नक्षेत्र छावनी, कुम्भ मेले का नजारा भी अद्भुत था. सभी संत–सेवाधारी सेवा, स्मरण, भजन, सत्संग के साथ माँ गंगा में अमृतकुम्भ से बरसने वाले अमृत का पान, साथ ही संत–महापुरुषों का संग पाकर अमृत महाकुम्भ में अपना जीवन धन्य–धन्य कर रहे थे.

परमात्मा की लीला भी अद्भुत व अचरजमयी होती है उसे समझ पाना कठिन होता है. तभी एक घटना घटी. उस महाकुम्भ में सांई टेऊँराम बाबा द्वारा लगाई गई प्रेम प्रकाश छावनी के पास वाली किसी अन्य संत महापुरुष की छावनी में आग लग गई. उस समय वायु पश्चिम दिशा से बड़े वेग में चलने लगी और ऐसे में आग ने बढ़ते–बढ़ते १५–२० छावनियों को अपनी चपेट में ले लिया था. सांई के पास संत दादू दयाल पंथ की छावनी में भी आग लग

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

सेवा करने से अन्त: करण शुद्ध होता है।
शुद्ध अन्त: करण में आत्मा का ज्ञान भी शीघ्र हो जाता है।

गई. इस दर्दनाक घटना को देखकर सभी संत-सेवाधारी भयभीत होने लगे. बड़ा हाहाकार मचने लगा. सभी अपना-अपना सामान निकालने लगे; क्योंकि सभी कुटियाएँ घास फूस की बनी हुई थी. इसी के साथ पश्चिमी दिशा से चलने वाली वेगवती वायु मानो प्रलयकाल का संदेश देती दिखाई दे रही थी. भयवश सभी अपना-अपना सामान बाहर निकालने लगे. सभी के मन में उदासी छा गई. ऐसी विषम स्थिति देखकर **'श्री सद्गुरु सांई टेऊँराम बाबा'** ने दिव्य लीला रची. कौन समझे महापुरुषों की अद्भुत लीलाओं को, ब्रह्मानन्द की अनोखी मस्ती, वृत्ति एकाकार! सांई के मुख से निकला वाक्य कभी असत्य नहीं हो सकता. जो बोल दिया वह अटल सत्य!

तब श्री सांई टेऊँराम बाबा ने अपनी छावनी (प्रेम प्रकाश मण्डल छावनी) के चारों ओर लाठी घुमाकर (परिक्रमा कर) अपनी चिप्पी से जल छिड़का और सभी प्रेमियों सत्संगियों से कहा– आप किसी प्रकार की भी चिन्ता न करें और न ही कुटियाओं से कोई सामान बाहर निकालें..... सभी परमात्मा का चिन्तन व सत्नाम साक्षी मंत्र का जाप एवं राम नाम की धुनि लगायें. प्रभु परमात्मा सब ठीक करेंगे. बस! महापुरुषों के तो कहने की देर होती है, स्वयं भगवान भी संत महापुरुषों के वचनों को नहीं टालते. वह उसे अवश्य ही पूरा करके संतों का मान वर्धन करते हैं. अर्थात् सत्पुरुष जब चाहें, जैसा चाहें वह कार्य अवश्य ही सिद्ध कर देते हैं. फिर क्या, थोड़ी देर हुई नहीं कि पश्चिम दिशा से बहने वाली वायु पूर्व दिशा में चलने लगी. धीरे–धीरे अग्नि ने भी शान्त रूप धारण कर लिया. आसपास की झोपिड़यों से आग की लपटें बंद हो गईं सारा माहौल शान्त हो गया. सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा की ऐसी अद्भुत शक्ति देखकर सभी खुशी–खुशी जय–जयकार करने लगे. सांई की इस चमत्कारी शक्ति को देखकर कुम्भ अमृतपर्व में आये बड़े– बड़े संत–महापुरुष भी चकित रह गये.

हे सांई टेऊँराम बाबा! आप धन्य हो, आपकी लीला भी अपरम्पार है, आप तो साक्षात् ईश्वरीय अवतार हो. आपको समझ पाना असम्भव! ऐसे थे प्रकृति पुरुष लीलाधारी सद्गुरु श्री सांई टेऊँराम जी महाराज!

-प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

कुम्भ मेला सभी मेलों से न्यारा

धर्मप्राण भारतवर्ष में अनेकानेक मेले, पर्व, उत्सव मनाये जाते हैं. सबका अपना-अपना महत्व एवं प्रभाव. किन्तु कुम्भ मेला सभी मेलों से न्यारा और अलौकिक होता है. शास्त्रों में बताया गया है–

मेला तीन प्रकार का, राजस तामस दोइ।
तीजा मेला सात्विक, कुम्भ जैसा नहिं कोइ।।

1. राजस (रजोगुणी) : नाटक, तमाशे, सिनेमा आदि देखना राजसी मेले होते हैं.
2. तामस (तमोगुणी) : मांस–मदिरा सेवन, जुआ करना, नाच गाने आदि ये सभी तामसी मेले होते हैं.
3. सात्विक (सतोगुणी) : सत्पुरुषों, संत-महात्माओं के सत्संग-कथा, धर्म का प्रचार, यज्ञ-हवन, पूजा-पाठ, ध्यान साधना-समाधि आदि ये सभी सात्विक मेले हैं.

अर्थात् कुम्भ मेला उपरोक्त तीनों प्रकार के मेलों से न्यारा है. जहाँ पर संतों का संग, राम का रंग, प्रेम का प्रसंग, तीर्थयात्रा करना, अमृत कुण्ड में स्नान, महापुरुषों का दर्शन, चतुर्वेदी यज्ञ अनुष्ठान, त्यागी तपस्वियों की अवधूती मस्ती का दीदार इत्यादि मन को पवित्र व निर्मल करने वाले अविस्मरणीय दृश्य देखने को मिलते हैं. ऐसे ही अलौकिक, अवर्णनीय, आध्यात्मिक कुम्भ मेले में दर्शन, सत्संग, स्नान कर जीवन को धन्य-धन्य बनायें.

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश संसार मन में है, आत्मा में नहीं।

पवित्र स्थान व भूमि पर किया गया शुभ कर्म, अक्षुण्ण फल देता है

कुंभ पर्व पर विशेष

देश काल पात्र जभी, तीनों शुभ मिल जाय !
कहे टेऊँ शुभ कर्म कर, मन इच्छित फल पाय !!

सद्‌गुरु टेऊंराम वचनामृत

भूमि पवित्र हो, तीर्थ स्थान, देव स्थल, गुरु या भगवान का मंदिर हो, समय भी अनुकूल-शुभ हो, जैसे एकादशी, पूर्णमासी, अमावस्या, गुरुदेव या भगवान का पावन जन्म दिवस या कोई आध्यात्मिक मेला-उत्सव या पर्व हो और हृदय भी पवित्र हो! ऐसे शुभ अवसर का लाभ अवश्य लेना चाहिए ! जिसके करने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है ! जिसके करने से जन्म जन्मांतर के पाप मिट जाते है! हर दिवस, दिन व समय का अपना-अपना प्रभाव होता है. जैसे कुम्भ महापर्व का स्नान हजारों अश्वमेध यज्ञ, सैकड़ों वाजपेय यज्ञ और लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल कुम्भ अमृतपर्व में स्नान करने से प्राप्त होता है, यह बड़ा ही पुण्यदायी होता है ! कुम्भ पर्व स्नान करने से अक्षतः फल की प्राप्ति होती है ! यह उपदेश आज से ६०-६५ वर्ष पूर्व कुम्भ अमृतपर्व के अवसर पर युगपुरुष आचार्य श्री सदगुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज द्वारा प्रेमी-भक्तों को सुनाया गया था !

तीर्थराज में माँ गंगा, जमुना, सरस्वती जी आदि पवित्र संगम दर्शन, स्नान, संत-महापुरुषों के आश्रम, सिद्ध पवित्र स्थल, व तपोस्थली ! इसी के साथ कुम्भ मेले का अवसर भी शुभ है ! अदभुत संयोग ! आस्था का महाकुंभ !

अतः हम सब पात्र बनकर श्रद्धा, भक्ति और विश्वास रखकर दान-पुण्य, स्नान, पूजा-पाठ, सत्संग श्रवण व संत-महात्माओं की सेवा करके मनोवांछित फल की प्राप्ति करें और संत महात्माओं, गुरुदेव के श्रीमुख से प्रवाहित ज्ञानामृत का रसपान कर अपने निज स्वरूप को जानकर सच्चा आत्मिक सुख एवं शान्ति प्राप्त करें ! ऐसा मनुष्य जन्म और ऐसा शुभ व सुंदर अवसर फिर हाथ नहीं आयेगा ! कुंभपर्व दर्शन, स्नान का बहुत बड़ा फल है !

प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

कुम्भ अमृत

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

सांई टेऊँराम बाबा द्वारा बताये गये- पाँच प्रकार के अमृत

1. प्रेम का अमृत अलौकिक होता है, जो भगवान श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को पिलाया था.
2. पतिव्रता स्त्री के मुख में अमृत रहता है.
3. चन्द्रमा में अमृत होता है, जिसके कारण ही अनाज, फल-फूल रसमय बनते हैं.
4. ज्ञान का अमृत, जो संत-महात्मा जिज्ञासुओं और प्रेमियों को पिलाकर, जन्म-मरण से छुटकारा दिलाकर, उन्हें अमर बनाते हैं. यह एक सच्चा अमृत है.
5. क्षीर-सागर का मंथन कर अमृत निकाला गया था. जो भगवान विष्णु जी ने सब देवताओं और दैत्यों को एकत्रित कर, मंदिराचल पर्वत की मंथानी, शेषनाग की रस्सी बनाकर, क्षीर-सागर का मंथन कर **'अमृत कलश'** निकाला. तब भगवान ने मोहिनी अवतार धारण कर देवताओं को अमृत पिलाया. इस युग में भी उन्हीं अमृत की छलकी बूंदे हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन, नासिक में कुम्भ मेले के अन्तर्गत सभी को प्राप्त होती है.

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

दु:ख और चिंता का कारण मूर्खता ही है,
जो सत्संग से ही मिटती है।

अमरता का उत्सव– कुम्भ पर्व

"कुम्भ का मेला" सचमुच में परमात्मा का सागर मंथन महोत्सव है. भगवान ने जब देवताओं व दैत्यों में सागर मंथन करवाया तब प्रभु स्वयं कच्छप के रूप में (रई) का आधार बने. चौदह रत्नों में जब अमृत का आविर्भाव हुआ और उस अमृत की वजह से ही देवी-देवताओं में जो हुआ वह सर्वविदित ही है और उसी की वजह से ही कुम्भ का मेला आयोजित होता है जो युग-युगान्तर से मनाया जा रहा है. हजारों लाखों नहीं बल्कि करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुजन आकर इस कुम्भ मेले में एकत्रित होते हैं.

'कुम्भ का मेला प्यारे, देखो अजब नज़ारे'
– स्वामी गुरुमुखदास जी

'कहे टेऊँ काहीं ऐसा मेला नाहीं'

हजारों पंडालें एवं हजारों साधु संतों के एक साथ दर्शन करने से दिल आनन्दित हो उठता है.

मेला तीन प्रकार का राजस, तामस दोय।
तीजा सात्विक जानिये, पर कुम्भ जैसा नहीं कोय।।

इस अमृत की प्राप्ति के लिये किये हुए परिश्रम के फलस्वरूप भगवान को तीन अवतार लेने पड़े.

1. कूर्म (कच्छप)अवतार
2. धनवन्तरि अवतार
3. मोहिनी अवतार

कुम्भ के मेले को सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित टण्डेआदम से आकर सुशोभित करते थे, ऐसा उल्लेख शास्त्रों में मिलता है. पूज्य स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज, स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज एवं प्रेम प्रकाश मण्डल के कई वरिष्ठ संत महापुरुषों के साथ कुम्भ मेले में पधारते थे. तत्पश्चात् सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने भी इस परम्परा को आगे बढ़ाया और कुम्भ के मेलों में कुम्भ नगरी में जो ज्ञान की अमृत वर्षा की, उन प्रसंगों का भी स्वर्ण अक्षरों में उल्लेख मिलता है. उसमें स्वामी बसन्तराम जी महाराज, स्वामी चन्दनराम जी महाराज़, स्वामी माधवदास जी महाराज, स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज, स्वामी मुरलीधर जी महाराज, स्वामी गणेशानन्द जी महाराज आदि महापुरुषों के साथ जो मिलके सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के यश-कीर्ति को चार चाँद लगाये वह अपने आप में महिमावान् है जिसकी अमिट छाप हमेशा स्वर्णाक्षरों में कायम रहेगी. सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के बाद सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के साथ जो कुम्भ मेले देखे गये उनका भली भाँति संस्मरण वर्णन तो नहीं किया जा सकता; क्योंकि स्वयं का किया हुआ अनुभव शब्दों में कैसे वर्णन किया जा सकता है. सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, स्वामी धर्मदास जी महाराज, स्वामी गणेशानन्द जी महाराज, स्वामी गंगाराम जी महाराज, स्वामी भजनदास जी महाराज, स्वामी विद्याप्रकाश जी महाराज, स्वामी अमरदेव जी, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज, श्री हेमनदास शास्त्री, स्वामी अशोकप्रकाश जी, संत राजूराम जी आदि सभी महापुरुषों के साथ जो कुम्भ के मेलों में आनन्द लिया, खास करके प्रयागराज में जो त्रिवेणी के संगम की मौज ली. उसी का थोड़ा सा उल्लेख करने का प्रयास कर रहा हूँ. जिसमें स्वामी धर्मदास जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज, भगत मूलचन्द एवं बहुत सारे संतों एवं प्रेमियों के साथ जो आनन्द की अनुभूति हुई. सद्गुरु महाराज जी के साथ नौका में बैठकर जाना एक-एक प्रेमी का श्री गुरू महाराज जी को अपने कर कमलों से स्नान करवाना प्रेमीजन कभी भी नहीं भूल पाएँगे. एक दिन तो नौका विहार करते श्री गुरू महाराज जी ने दास को आज्ञा की कि यह भजन सुनाओ–

'श्याम तेरी बंसी बाजे धीरे-धीरे,
बाजे धीरे-धीरे हो यमुना के तीरे...'

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

जिस भी व्यक्ति-वस्तु से जीव को 'सत्य' का बोध हो जाये वह व्यक्ति या वस्तु जीव के लिए गुरु हो सकता है परन्तु सद्गुरु नहीं हो सकता।

दास ने यह भजन गाया और साथ में यह भी बोला कि द्वापर युग में जो श्रीकृष्ण ने अवतार लिया था वो आज फिर कलयुग में सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के रूप में अवतरित हुए हैं. एक साथ चल रही कई नौकाओं में जय-जयकार की ध्वनियाँ गूँजने लगीं. अपनी छावनी में नित ही महापुरुषों का आगमन संत अनन्तप्रकाश जी के प्रयास से होता रहता था- कभी श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी तो कभी श्री प्रेमाचार्य जी महाराज और कभी श्री मोरारी बापू का आगमन! कभी श्री संत गोविन्दराम साहिब (शदाणी दरबार) तो कभी सांई चाण्डूराम साहिब के हँसमुख चेहरे के दर्शन सद्गुरु महाराज जी के साथ करके छावनी में प्रेमीगण आल्हादित हुआ करते थे, बाबा गरीबदास दरबार नन्दुरबार के संत संतूराम जी भी सद्गुरु महाराज जी से मिलने अवश्य आते थे.

एक दिन इलाहाबाद में विनोद का बड़ा ही प्रेरक प्रसंग घटित हुआ. भगत साहिब मूलचन्द जी सत्संग कर रहे थे, रेत के टीले की महिमा का प्रसँग चल रहा था. टंडेआदम में रेत के टीले पर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने श्री अमरापुर दरबार की स्थापना की, जयपुर में रेत के टीले पर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अमरापुर दरबार की स्थापना की, भगत साहेब अभी ऐसा कह ही रहे थे कि यहाँ प्रयागराज में रेत ही रेत है. सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज दास को अपने साथ में लेकर चल रहे थे जैसे ही पंडाल में प्रवेश किया, उस समय भगत साहिब कहने वाले ही थे कि यहाँ प्रयागराज में महाराजश्री का नाम लेने ही वाले थे कि महाराज जी ने पहिले ही कह दिया कि प्रयागराज में भगत मूलचन्द ने रेती में मौज मचाई. पूरी सभा श्री गुरू महाराज जी की जय-जयकार करने लगी. धन-धन सद्गुरु देव जो अपने भक्तों का उत्साह बढ़ाते हैं.

प्रिय पाठकों जब जब महापुरुष पधारते थे श्री गुरू महाराज जी अति आनन्द में भर जाते और गद्गद् कण्ठ से गाने लगते-

आज दी घड़ी हर रोज रोज होवे
आज दी घड़ी रह रोज रोज होवे
गुरुमुख चात्रक अमृत पीवे
गुरुमुख चात्रक अमृत पीवे

यह पावन दृश्य आँखों के सामने दृष्टिगोचर हो रहा है और श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी महाराज (जो लगभग १०६ वर्ष की आयु के थे) जिन्होंने श्रीमद् भागवत पुराण की टीका लिखी है और श्री चैतन्य चरितावली के लेखक हैं, उन्हों के पावन मुख से जो शब्द उद्धरित हुए-

'सिंधी समाज बहुत ही कर्मठ एवं संतसेवी है और हो भी क्यों नहीं आपको स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज जैसे मार्गदर्शक जो मिले हैं. विनोद-विनोद में कहा- आप सबको निमंत्रण है हम आपको काली रोटी और धौली दाल खिलाएँगे. वहाँ जाने पर उन्होंने मालपूए और खीर का भोजन करवाया. प्रयागराज का वह प्यारा प्रसँग तो दास कभी नहीं भूल पाएगा.

श्री गुरू महाराज जी जयपुर में विराजमान थे. स्वामी स्वयंप्रकाश जी महाराज भी साथ में बैठे थे. महाराज जी ने स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराज को फोन पर बात करते हुए कहा कि आप प्रयागराज में कब पधार रहे हो? स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराज ने मना की कि पिछले कुम्भ में सौगंध खाकर आया हूँ कि मैं ठण्ड की वजह से प्रयागराज नहीं आऊँगा. महाराजश्री ने स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराज से कहा- यदि आप नहीं आओगे तो मेला भी नहीं लगेगा, मेला है आपका, हम तो हैं धर्माऊ! स्वामी धर्मप्रकाश जी महाराजश्री की इतनी नम्रता देखकर अपनी सौगंध का ख्याल नहीं किया और जब वह प्रयागराज पधारे वह दृश्य आँखों के सामने आज भी फिर रहा है. स्वामी धर्मदास महाराज, महाराज जी के श्री चरणों में गिर रहे हैं और गुरू महाराज जी के हाथ स्वामी धर्मदास जी महाराज के चरणों की ओर बढ़ रहे हैं. स्वामी धर्मदास महाराज कहने लगे- आप साक्षात् सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वरूप हैं आपकी आज्ञा शिरोधार्य करके दास आया है, श्री सद्गुरु महाराज कहने लगे- नहीं- नहीं मुझे

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जब तक मन में भ्रम है तब तक यह मनुष्य दु:खी होता रहता है। जब ज्ञान प्राप्त होने के कारण उसका भ्रम नष्ट हो जाता है तब यह जीव सुखी होता है ।

आप में से सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की सुंगधि आ रही है. गुरुमुखों ऐसे प्रसँगों को कैसे भुलाया जा सकता है. मानो मूर्तिमान् दक्षिण झूसी प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र में गंगा, यमुना का संगम हो रहा हो और प्रेमीजन स्नान करके आनन्दित हो रहे हैं. प्रसँग तो बहुत हैं. कुम्भ मेले की छावनियों की परम्परा को सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने आगे बढ़ाया. अब पंचम पातशाही गुरुदेव भगवान ने जो कुम्भ नगरों में छावनियाँ लगाई हैं या भगवत् धाम में गुरुदेवों के उत्सव किये हैं वह भी इतिहास में सोने के अक्षरों से लिखा जाएगा–

'सभिनी जे मन में ईहा आहे आस
जुग जुग जीए स्वामी भगतप्रकाश'

शास्त्रों में कुम्भ मेलों के बारे में लिखा है–

सहस्त्र कार्तिक स्नानं, माघ स्नान शतानि च।
वैसाखे नर्मदा कोटिः, कुम्भ स्नानं तत्फलम्।।

अर्थात् कार्तिक में हजार स्नान करने से जो फल मिलता है माघ में सौ स्नान करने से व वैसाख में नर्मदा जी के करोड़ों स्नान करने जो फल मिलता है उतना फल कुम्भ में स्नान करने से मिलता है.

अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च।
लक्ष प्रदक्षिणां भूम्यां कुम्भ स्नान तत्फलम्।।

अर्थात् हजार अश्वमेध यज्ञ, सौ वाजपेय यज्ञ या पूरी पृथ्वी की लाख बार परिक्रमा करने से जितना पुण्य मिलता है उतना फल कुम्भ स्नान करने का है.

तो हम सब कुम्भ मेले में नाम जप करके आत्म स्वरूप अनुसंधान करके अमरता को प्राप्त करें.

–प्रेमप्रकाशी संत प्रतापराय जी
–श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना

प्रयागराज नामकरण एक पौराणिक तथ्य

एक बार ब्रह्माजी को संशय हुआ कि प्रयाग तीर्थराज नहीं है. इस संशय के निवारणार्थ उन्होंने शेषनाग से प्रश्न किया तो शेषनाग ने कहा– 'तुला तौलने के काम में आती है, उससे शपथ लिया जाता है और तुला से सब संदेह दूर होते हैं. धर्म-निर्णय में सबके लिए तुला प्रमाण कही गयी है. इस कारण जो तुला द्वारा नापा तौला गया हो, वह सर्वश्रेष्ठ होगा और उसकी सत्यता में किसी को सन्देह नहीं रहेगा. आप स्वयं परीक्षा कर लें कौनसा तीर्थ न्यूनाधिक अथवा बराबर है, इसका निर्णय तुला के द्वारा हो जायेगा. तद्नुसार एक पलड़े पर प्रयाग तीर्थ तथा दूसरे पलड़े पर क्रमशः सभी तीर्थ रखे गये, किन्तु प्रयाग-तीर्थ का पलड़ा भारी रहा. तब से प्रयाग तीर्थ को तीर्थराज की मान्यता सर्वसम्मति से प्रमाणित मान ली गई.

समुद्र पर्यन्त इस पृथ्वी में जितने भी तीर्थ हैं, उन सबमें श्रेष्ठ तीर्थराज प्रयाग की महिमा वेदों से लेकर विभिन्न शास्त्रों, धर्मग्रंथों, पुराणों और पूर्ववर्ती साहित्य में प्रचुर रूप से वर्णित है. उसको समस्त तीर्थों के पुण्यफलों का प्रदाता और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इस चतुर्वर्ग (पुरुषार्थ-चतुष्टय) की प्राप्ति का साधन बताया गया है. उसके सम्बन्ध में कहा गया है कि विभिन्न स्थानों पर किये गये पापों का उपशमन अन्य तीर्थों में जाकर किया जा सकता है, किन्तु विभिन्न तीर्थों के जो दुष्कृत हैं, प्रयागराज के दर्शन मात्र से वे क्षीण हो जाते हैं. यह प्रयागराज देवलोक और पितृलोक है. इसके समान इस पृथ्वी पर दूसरा कोई तीर्थ नहीं है. इसी कारण परमेष्ठि पितामह ने तीनों लोकों की छानबीन कर अन्त में प्रयागराज को ही अपने निवास के लिए चुना. इस प्रकार प्रयागराज के दर्शन, तीर्थाटन और सेवन से मनुष्य के विविध पापों का शमन हो जाता है.

दृष्ट्वा प्रकृष्टं यागेभ्यः पुष्टेभ्यो दक्षिणादिभिः।
प्रयागमिति तन्नाम कृतं हरिहरादिभिः।।

यह योग से प्रकृष्ट तथा दक्षिणादि से पुष्ट है, इस कारण भगवान विष्णु, शिव आदि ने इसका नाम 'प्रयाग' रखा, यथा– **'प्रकृष्टत्वा प्रयागोऽसौ प्राधान्याद्राज शब्दवान्!'** नित्य, नैमेत्तिम, काम्ययाग यहाँ अत्यधिक होने से प्रयाग तीर्थ को प्रयागराज कहा जाता है.

–प्रेमप्रकाशी संत भोलाराम जी,
प्रेम प्रकाश आश्रम, कानपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

ज्ञान, ध्यान, आत्म विचार, नियम, प्रेम, शील, संतोष, उत्तम बुद्धि इत्यादि कुछ भी गुरु की कृपा के बिना नहीं मिल सकता।

प्रयागराज कुम्भ मेला– एक अपूर्व आयोजन

प्रयागराज कुम्भ मेला भारतवर्ष का एक अपूर्व आयोजन है. इतना विशाल आयोजन विश्व में अन्यत्र दुर्लभ है. प्रयागराज कुम्भ मेला अपने आप में महिमामय है. यह भारतीय सनातन संस्कृति की गौरव व गरिमा का प्रतीक है. इस मेले का आनन्द लूटने के लिए भारत ही नहीं अपितु विश्व भर से लोग आते हैं. चालीस दिन से लेकर दो माह तक चलने वाले इस महाकुम्भ मेले में विविध धार्मिक व सांस्कृतिक समारोह, पर्व व अन्य कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, जिसका संक्षेप में विवरण यहाँ प्रस्तुत है–

विभिन्न सम्प्रदायों की छावनियाँ–

त्रिवेणी के तट पर फैले हुए विशाल परिक्षेत्र में विभिन्न सम्प्रदायों की छावनियाँ इस मेले की शोभा बढ़ाती हैं. नागा, सन्यासी, उदासी, वैष्णव, प्रेमप्रकाशी आदि विभिन्न मत व सिद्धांतों को मानने वाले समस्त सनातनधर्मी सम्प्रदायों के आचार्यों व महामण्डलेश्वरों के अपने स्थानों की छावनियाँ यहाँ देखने को मिलती हैं. यही एक ऐसा अवसर है जहाँ हमें असंख्य सम्प्रदायों के संतों का एक साथ दर्शनों का सुअवसर प्राप्त होता है. कोई छावनी बड़ी तो कोई छोटी अपने आप सुंदर व सुसज्जित कलेवर को लेकर सबके चित्तों को आकर्षित करती है. छावनियों में, भोजन, भजन, बहुकुण्डीय हवन-यज्ञ व सत्संग-कीर्तन के साथ-साथ अनुयायियों के निवास का भी सुंदर प्रबंध रहता है. छावनियों में अपने अपने नियमानुसार सुबह-शाम सत्संग प्रवचनों का दिव्य आयोजन रहता है जिसमें बड़े बड़े विद्वान महापुरुष अपने अमृतमय प्रवचनों द्वारा मार्गदर्शन करते हैं. गीता, रामायण एवं श्रीमद्भगवत् महापुराण कथा का दिव्य आयोजन किया जाता है, जिसमें चोटी के कथाकार आकर अपनी मधुर वाणी द्वारा भगवत् रस प्रवाहित करते हैं. श्रद्धालुगण इस कथामृत का पान कर कृत-कृत्य होते हैं.

छावनियों में, जो विशेष सुंदर दृश्य देखने को मिलता है वह है **'अन्नक्षेत्र का आयोजन'**. इस अन्नक्षेत्र में बड़े बड़े त्यागी, वैरागी, परमहँस परिव्राजक महापुरुष अत्यंत शांति व प्रेमपूर्वक जो प्रसाद ग्रहण करते हैं, उसे मधुकरी भी कहा जाता है, वह दृश्य देखने योग्य होता है. ऐसे ऐसे दिव्य व तेजस्वी महापुरुषों के दर्शनों व उनकी सेवा का लाभ प्रातःकाल के अन्नक्षेत्र में सहज मिल जाता है. लम्बी लम्बी पंक्तियाँ बनाकर हरिनाम कीर्तन करते हुए अत्यंत निर्मल सत्पुरुषों का दर्शन नयनाभिराम होता है.

प्रवचनों व कथाओं का विशाल आयोजन

कुम्भ मेले के अन्तर्गत विशेष रूप में, ऐसी दिव्य कथाओं का आयोजन किया जाता है, जहाँ चोटी के विद्वान कथाकार आकर अपनी मधुर वाणी द्वारा भगवान की मधुर व ललित कथाओं को सुनाया करते हैं. कुम्भ में ऐसे दृश्य प्रायः सभी छॅावनियों में देखने को मिलते हैं. प्रातःकाल एवं सायंकाल दो सत्रों में विभिन्न विषयों पर विद्वान अपने अपने विचारों द्वारा जनता जनार्दन का मार्गदर्शन किया करते हैं. श्रीराम कथा, श्रीमद्भागवत् कथा, शिव कथा, देवी भागवत, गीता प्रवचनमाला आदि दिव्य ग्रंथों की विशद् व्याख्या भी यहाँ सुनने को मिलती है. संत महापुरुष अपने धर्म उपदेशों द्वारा धर्मप्राण जनता को हरि मार्ग की ओर उन्मुख करते हैं. ऐसा विशाल आयोजन विश्व में अन्यत्र दुर्लभ ही है.

त्रिवेणी स्नान

कुम्भ मेले की जो सबसे महत्त्वपूर्ण बात होती है वह है **''संगम का स्नान''**! चाहे कितनी भी कड़कड़ाती सर्दी क्यों न हो लेकिन श्रद्धालुओं में भी त्रिवेणी स्नान करने की आस्था उससे भी दृढ़ होती है. लाखों साधु संतों के साथ करोड़ों श्रद्धालु **'हर-हर गंगे, जय माँ गंगे'** के जयघोष के साथ माँ भागीरथी के पावन तट पर पहुँच कर उसमें बड़ी श्रद्धा व प्रेम से डुबकियाँ लगाकर जन्म-जन्मांतर के कल्मषों को धोकर शांति व शीतलता का

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मुझे कुछ चाहिए ही नहीं, केवल इतनी बात से मुक्ति हो जायेगी।

एहसास व अनुभव प्राप्त करते हैं . जो इस कुम्भ मेले में पहुँचकर भी ठण्ड की वजह से स्नान करने में आलस्य या प्रमाद करता है उसे दुर्भाग्यशाली ही कहा जाता है.

महत्त्वपूर्ण पर्वों व तिथियों पर शाही स्नान भी होते हैं जिसमें बड़े बड़े महामण्डलेश्वर, आचार्य, महन्त अपने अपने साधुओं के साथ बैंडबाजों तुरही की परम्परागत ध्वनियों के साथ सवारियों पर निकलकर शोभायात्रा के रूप में शाही स्नान करते हैं. संतों के इस दिव्य-भव्य-दुर्लभतम शोभायात्राओं को देखने के लिए करोड़ों की संख्या में लोग मार्ग के दोनों ओर खड़े होकर लाखों संतों महंतों के दर्शन कर जन साधारण अपने को अहोभागी मानता है.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की अन्नक्षेत्र छावनी

कुम्भ मेले में अन्य छावनियों के साथ, सिंधी समाज के संतों में जो सबसे अग्रणीय छावनी रहती है वह है- **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित- ''प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र छावनी''!** यह सबसे पुरानी छावनियों में से एक है. आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज स्वयं सिंध से अपने सम्पूर्ण संतों को साथ लेकर यहाँ कुम्भ मेले में आकर छावनी लगाते थे. फिर उनकी परम्परा के महापुरुषों जैसे सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने भी यह परम्परा कायम रखी. वर्तमान में भी पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज भी उसी रूप में छावनी लगाकर उनके धवल यश को प्रसारित कर रहे हैं.

प्रेम प्रकाश मण्डल की छावनी प्रायः सभी छावनियों से हटकर आकर्षित व व्यवस्थित रहती है. इस छावनी में सुबह-शाम सत्संग व प्रातः विरक्त मंडल के साधुओं का अन्नक्षेत्र पूरे एक महीने तक रहता है. इसके अतिरिक्त श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिकोत्सव जिसे **''चैत्र मेला''** कहा जाता है वह भी इस छावनी का विशेष आयोजन रहता है. इस मेले में देश-विदेश से हजारों अनुयायी सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्राप्त करते हैं.

यही एक ऐसा मेला है जहाँ हमें अपूर्वता का दर्शन होता है, यह कुम्भ मेला विश्व का एक अपूर्व मेला है, जिसने जीवन में इस कुम्भ मेले को नहीं देखा समझो उसने अभी तक कुछ नहीं देखा. यदि देखा भी है तो वह इस मेले के तुल्य नहीं हो सकता. दुनिया में ऐसा आयोजन अत्यंत दुर्लभ है. इसलिए हमारे आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी अमृतवाणी श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के राग तिलंग भजन-२ में लिखते हैं-

कहे टेऊँ काहीं-ऐसा मेला नाहीं,
देखे जो जन ताहीं-तिसे भाग भारे,
देखा मेला कुम्भ का-गंगा के किनारे।

त्रिवेणी के पट पर पधारे हुए महापुरुषों एवं अपार आस्तिकों को कोटि-कोटि नमन-वन्दन-अभिनन्दन करते हुए मैं अपने लेखन को यहीं विराम देता हूँ.

-प्रेम प्रकाशी संत दिलीप,

ब्रह्माण्ड का प्रतीक है- कलश

ब्रह्माण्ड के प्रतीक कुंभ कलश के मुख पर विष्णु, कंठ में रुद्र और मूल में ब्रह्मा के विराजमान होने की प्रक्रिया में पालन, संहार और सृजन का उद्देश्य निहित है. विज्ञान की भाषा में प्रोटॉन, इलेक्ट्रान और न्यूट्रान का सम्मिलित धुवीकरण ही ब्रह्माण्ड को थामे है. सप्तसागर, सप्तद्वीप, वसुंधरा, चारों वेद, ग्रह, नक्षत्र गण आदि इस कलश में विद्यमान हैं.

कुम्भ स्नान का फल

प्रयाग माघ मासे तु त्रयहं स्नानस्य यद् भवेत्।
नाश्वमेध सहस्त्रेण तत्फलं लभ्यते भुवि।।

(माघ मास में प्रयाग में तीन विशेष पर्वों पर स्नान करने से एक हजार अश्वमेध यज्ञ करने के बराबर बराबर फल प्राप्त होता है.)

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आचार्य द्वारा चलाई गई प्रथा ही परम्परा कहलाती है वह शास्त्रों के आधार पर होती है। जो कोई शिष्य अपने आचार्य की परम्परा को ज्यों का त्यों बनाये रखता है उसको ही गुरुभक्त कहते हैं।

तीर्थराज प्रयाग महाकुम्भ 2025

कुम्भ में छलकी अमृत की बून्दे

कहे टेऊँ काहीं ऐसा मेला नाहीं
देखा मेला कुम्भ का-गंगा के किनारे
दिव्य रूप दर्शन-गुरां के निजारे

''महाकुम्भ शताब्दियों से सनातन धर्म की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ता के माध्यम से कोटि जनों को धर्म व संस्कृति से जोड़ता आ रहा है । यह केवल आध्यात्मिक चेतना ही नहीं अपितु अखण्डता और विश्व बन्धुत्व का प्रतीक है जो मानवता को नैतिक मूल्यों एवं विश्व मगंल की ओर प्रेरित करता है ।

१२ वर्ष बाद बनता है प्रयागराज (इलाहाबाद), उज्जयिनी, नासिक व हरिद्वार में कुम्भ का योग! लेकिन इस समय जो प्रयागराज में आस्था का संगम लहरा रहा है। जनमानस का तन मन पवित्र करने के लिये संगम के पवित्र जल में अमृत की वह बूंदें जो वेद शास्त्रों में वर्णित है-समाहित हो गईं हैं। ११ जनवरी से २६ फरवरी तक चलने वाले इस महाकुंभ मेले में लाखों संत महापुरुषों के सहज दर्शन व उनके मुखारविन्दु से प्रवाहित आत्म अमृत का रसपान करने को लाखों लोग एकत्रित हैं। बताया जा रहा है कि इस बार १४४ वर्ष बाद राशियों के बने दुर्लभ सुयोग में देश-दुनिया के करोड़ो लोग आतुर हैं इस अमृतमयी त्रिवेणी में डुबकी लगाने को! १४ जनवरी मकर संक्रांति के महापर्व पर भोर काल चार बजे से ही शाही स्नान के साथ इस महाकुम्भ मेले में अमृतत्व प्राप्ति का आगाज हुआ। तेरह अखाड़ों के साधु सन्यासियों ने संगम तट पर अपने अपने महंतों महामण्डलेश्वरों के साथ त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई और इसी के साथ करोड़ो से भी अधिक की संख्या में श्रद्धालुजनों ने अन्यत्र घाटों पर डुबकी लगाकर अपने तन मन को पावन किया। साथ ही लाखों साधु संतों के दिव्य दर्शन पाकर अपने भाग्य को संवारा।

चारों पीठों के जगद्गुरू शंकराचार्यों के भव्यतम पण्डालों व तेरह अखाड़ों के अत्यंत भव्य व विशालतम पण्डालों में हजारों नागा, सन्यासियों, वैरागियों के साथ शीर्षस्थ महंतों-मण्डलेश्वरों के अतिरिक्त हजारों की संख्या में बने विशालतम शिविरों में विख्यात रसिक कथाकारों के श्रीमुख से प्रवाहित श्रीरामकथा, श्रीमद् भागवत, श्रीमद्भगवत्गीता पर धाराप्रवाह प्रवचन सुनने को लाखों श्रद्धालु उमड़ रहे हैं तो योगाचार्यों के शिविर में योग कला द्वारा अपने शरीर मन को स्वस्थ रखने के लिए भी बहुत बड़ी संख्या में जनमानस लालायित होकर उनके शिविर में पहुँच रहे हैं। और देश-दुनिया के सनातन धर्म के लगभग सभी पंथों सम्प्रदायों के शिविर-अन्नक्षेत्र भी हैं, की सौम्य सुंदरता-भव्यता देखकर मन हर्षित हो उठता है। इन पंथों के कई शिविरों अन्नक्षेत्रों में हजारों विरक्ति साधुओं मण्डलेश्वरों को कतारबद्ध अनुशासित भाव से मधुकरी करते सहज ही देखा जा सकता है। तो सुबह-शाम नियमानुसार सत्संग ज्ञानयज्ञ में लाखों भक्त, संतों के पावन श्रीमुख से छलकते आत्म अमृत को भी आत्मसात् करके अपने हृदय को पावन कर रहे हैं।

चौबीसों घंटें चारों ओर विभिन्न वाद्ययंत्रों (ऐसे-ऐसे वाद्ययंत्र जिन्हें शायद सहजता से आम जन ने नहीं देखा होगा) के साथ हरिनाम की मधुरतम गूंज में यह कुम्भ नगरी डूबी हुई है। अनेक शिविरों में अत्यंत विशालतम यज्ञ मण्डप व बहुकुण्डीय यज्ञ मण्डपों से निरंतर वेदऋचाओं का सस्वर पाठ गूँज रहा है, वेदमंत्रों के उच्च स्वर गायन द्वारा देवी-देवताओं को आहुतियाँ आहूत की जा रही हैं।

यहाँ पर आपको यह जरूर बता दें चारों कुम्भ मेलों में प्रयागराज महाकुम्भ मेला ऐसा है जहां लगभग सभी साधु संत पधारते हैं।यहाँ पर हठयोगियों के दर्शन भी सहजता से होते हैं।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश
अगर यह मनुष्य चोला विषय भोगों में ही व्यतीत हो गया तो यह जीव अंतिम समय में पश्चाताप करेगा और रोयेगा।

प्रयागराज महाकुम्भ में

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल अन्नक्षेत्र छावनी का भव्य शुभारम्भ हुआ

मंगलमूर्ति आचार्य प्रवर सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित श्री प्रेम प्रकाश मण्डल अन्नक्षेत्र (२५ दिवसीय) छावनी का मंगल शुभारम्भ अति भव्यता के साथ ०६ जनवरी २०२५ गुरुवार के पावन दिवस को प्रातः ८ से १२ बजे तक सम्पन्न हुआ। इसी के साथ ही अन्नक्षेत्र का शुभारम्भ भी हुआ।

परम्परानुसार प्रातः काल ५.०० बजे हरि नाम की रस वर्षा करती प्रभातफेरी का आगाज पूज्य महाराजश्री, माणिकलाल एवं सहयोगियों द्वारा किया गया। उसके बाद प्रातः ८ बजे नित्य-नियम प्रार्थना पूज्य गुरुजनों की आरती पश्चात्‌ हवन यज्ञ के लिए यज्ञशाला में पूज्य महाराजश्री एवं समूचा संत मण्डल विराजमान हुआ। वेदमंत्रों के उच्च स्वर गायन के साथ पूजा- अर्चना उपरांत हवन यज्ञ सम्पन्न हुआ। हवन के अंत में पूज्य आचार्यश्री व सद्‌गुरुदेवों, श्री अमरापुर धाम के निमित्त आहुतियाँ आहूत करवाई गईं। तत्पश्चात्‌ यज्ञशाला के समीप बने श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजावंदन के लिए ४० फुट ऊंची एवं २० फुट लम्बी ध्वजा की पूजा-अर्चना की गई। यज्ञशाला के समीप बने मुख्य ध्वजा स्तम्भ जो मुख्य प्रवेश द्वार पर लगभग ४०-४५ फुट ऊँचाई लिये था पर पूज्य महाराजश्री के सानिध्य में संत मण्डल द्वारा श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजा स्थापित की गई तो समूचा वातावरण उत्साह से भर गया। ऐसे में पूज्य महाराजश्री द्वारा **''हम गीत सनातन गायेंगे नित झण्डा धर्म झुलायेंगे''** ध्वजा गीत के बाद ''डण्डे वारो सांई डण्डे वारो'' धुनि का आलाप किया तो सभी प्रेमी झूमने-नाचने लगे। जयपुर की प्रसिद्ध जिया बैण्ड द्वारा भी खूब मौज मचाई गयी।

इसी के साथ ही मुख्य प्रवेश द्वार के बाहर तीर्थ यात्रियों हेतु अन्नक्षेत्र का शुभारम्भ भी पूज्य महाराजश्री के पावन करकमलों द्वारा किया गया। जिसमें प्रतिदिन प्रातःकाल से सायंकाल तक हजारों की संख्या में तीर्थयात्री प्रसाद ग्रहण कर अपनी क्षुधा शांत करते थे। कभी-कभी पूज्य महाराजश्री भी अपने पावन करकमलों से यात्रियों को प्रसाद बांटते थे।

इसके साथ ही नित्य प्रातः सन्यासी संतों की मण्डलीयां प्रसादी पाने छावनी में पधारती थी। जहां संत भोलाराम जी, संत कमल, संत देव व सहयोगी आदरपूर्वक मुख्य द्वार से सन्यासी संतों को पूर्व निर्धारित स्थान पर लाते थे। यथा स्थान पर बैठकर साधु-संतों को भोजन-प्रसादी कराकर तत्पश्चात्‌ यथायोग्य दक्षिणादि भेंट की जाती थी।

इसी प्रकार प्रातः एवं सायंकाल सत्संग सभा में पूज्य संत मण्डल एवं पूज्य महाराजश्री जी छावनी में पधारे श्रद्धालुओं को वचनामृत का पान कराते रहे।

सद्‌गुरु सर्वानन्द सन्देश

अगर जो शांति चाहते हो तो पहले आप शांति करो। आप भटक रहे हो तो शांति कैसे आयेगी। पहले आप शांति करो तो फिर शांति आए।

दिनांक २३ जनवरी २०२५ को प्रेम प्रकाश मण्डल के अवधूत संत परम आदरणीय स्वामी गुरमुखदास जी महाराज की पावन स्मृति में पंच दिवसीय वर्सी उत्सव के अवसर पर श्रीमद्भगवद गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहिब रखे गये। दिनांक २७ जनवरी को वर्सी उत्सव के समापन पर उक्त पाठ साहिबों का भोग पारायण का कार्य सम्पन्न हुआ। इस पंच दिवसीय वर्सी उत्सव में पूज्य महाराजश्री एवं पूज्य संत मण्डल द्वारा परमादरणीय अवधूत संत स्वामी गुरमुखदास जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

अन्ततः प्रतीक्षा की अवधि पूरी हुई और दिनांक **28 जनवरी मंगलवार को 104वें चैत्र मेले** का मंगल प्रारम्भ यज्ञशाला में पूज्य महाराजश्री एवं पूज्य संत स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, स्वामी मनोहरलाल जी महाराज, पूज्य संत हरीओमलाल जी एवं सभी पूज्यनीय संतगण विराजमान हुये तत्पश्चात् हवन-यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद परम्परा अनुसार नियत स्थान पर **''हम गीत सनातन गायेंगे-नित झण्डा धर्म झुलायेंगे''** के गायन के साथ ही श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजा स्थापित की गयी। इसी के साथ उपस्थित हजारों प्रेमियों का उत्साह देखते ही बनता था।

सभी प्रेमी जिया बैण्ड के वादकों द्वारा बजायी गयी धुनों पर नाचने झूमने लगे। प्रेमियों के उत्साह-प्रसन्नता को शब्दों में बांधना कठिन है। ध्वजावन्दन के पश्चात् पूज्य महाराजश्री एवं संत मण्डल सत्संग हॉल में पधारने के साथ ही चैत्र मेले के उपलक्ष में श्रीमद्भगवद गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहिब का प्रारम्भ किया गया। तत्पश्चात् पूज्य महाराजश्री द्वारा पूज्य संत मण्डल के साथ मिलकर आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं पूज्य गुरुजनों के दिव्य श्रीचरणों में प्रार्थना कर चैत्र मेले का मंगल प्रारम्भ किया गया।

पंचदिवसीय चैत्र मेले में प्रातः एवं सायंकाल सत्संग सभा में प्रेम प्रकाश मण्डल के माननीय पूज्य संतों एवं पूज्य महाराजश्री द्वारा अपने वचनामृत में आचार्य प्रवर एवं पूज्य गुरुजनों की महिमा का वर्णन किया गया जिसे सुनकर प्रेमीजन मंत्रमुग्ध हो जाते थे।

सभी कार्यक्रमों का ऑनलाईन सीधा प्रसारण यूटयूब पर भी किया गया। ऑनलाईन भी बड़ी संख्या में प्रेमीगणों ने सत्संग का लाभ लेकर अपना जीवन सफल किया।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल अन्नक्षेत्र छावनी में परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के साथ, स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, स्वामी मनोहरलाल जी, स्वामी हरिओमलाल जी, स्वामी अनन्त प्रकाश जी, सन्त मोनूराम जी, सन्त शम्भूलाल जी, सन्त श्यामलाल जी, सन्त लालूराम जी, सन्त नरेश कुमार जी (अमेरिका), सन्त रामप्रकाश जी अजमेर, सन्त रमेशलाल जी, सन्त लक्ष्मण जी, सन्त परसराम जी, सन्त नवीन जी, सन्त जीतूराम जी, सन्त भोलाराम जी, सन्त टेकचन्द जी, सन्त शंकरलाल जी (मुम्बई), सन्त छोटूराम जी, सन्त कमल (गांधीधाम), सन्त ढालूराम जी, सन्त लक्कीराम जी (अमेरिका), सन्त कमल, सन्त हिमांशु, सन्त लोकेश, सन्त गुड्डू(गुरदास) जयपुर, सन्त हरीश (जयपुर),सन्त हरीश, सन्त जस (अजमेर), सन्त प्रतापलाल जी, सन्त नरेशलाल जी (इन्दौर), सन्त राहुल, सन्त देव, सन्त अशोक (अजमेर), सन्त हरी (खैरथल), सन्त महेश सीकर, सन्त यश, सन्त सुमित, सन्त अविनाश, सन्त उमेश, सन्त यश (हिमाचल) एवं अन्य संत महात्माओं के साथ भगत हरिदास जी, भगत दीपक एवं अन्य गुणीजन व सेवाधारी आदि शामिल थे।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मनुष्य जितनी अधिक इच्छाएँ करता है उतना ही अधिक दुःखी होता है।

अहर्निश सेवामहे प्रयागराज महाकुम्भ में स्वामी टेऊँराम चिकित्सालय का मंगल प्रारम्भ

तीर्थराज प्रयाग में अवस्थित दिव्य त्रिवेणी संगम तट पर श्रद्धा और सेवा के इस अद्वितीय उत्सव महाकुम्भ २०२५ में पधारने वाले परम आदरणीय साधु संतों एवं श्रद्धालु तीर्थ यात्रियों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराये जाने हेतु श्री स्वामी टेऊंराम चिकित्सालय का दिनांक ०६ जनवरी २०२५ को प्रातःकाल १० बजे प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष वात्सल्य मूर्ति पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा पूज्य सन्त मण्डल के सानिध्य में दीप प्राकट्य एवं आशीर्वचन के साथ मंगल प्रारम्भ किया गया।

३५००० वर्गफीट क्षेत्रफल में निर्मित अस्थायी चिकित्सालय सभी आधुनिक उपकरणों से युक्त था। यहां पर सभी रोगों के निराकरण हेतु औषधियां उपलब्ध थीं। औषधियों का निःशुल्क वितरण किया जा रहा था। उक्त चिकित्सालय में मेडिसिन, ऑर्थोपेडिक, डायबिटिज, कार्डियक, नेत्र व दन्त चिकित्सा एवं अन्य विभागों सहित होमियोपैथी पद्धति से भी चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध थीं। आगंतुक सभी नेत्र रोगियों को चश्मे निःशुल्क वितरित किए गए। माननीय चिकित्सकों व नर्सिंग स्टाफ एवं सहयोगियों की परिचर्या व सुख सुविधाओं का विशेष ध्यान रखते हुए उनके निवास हेतु चिकित्सालय परिसर में ही पृथक से आवश्यक सुविधायुक्त कुटियाएं बनवाई गई थीं।

पूज्य महाराज श्री की मनोभावनाओं के अनुसार काम करने वाले निःस्वार्थ सेवा भाव के प्रतीक उपरोक्त समस्त माननीय चिकित्सकगण, नर्सिंग स्टाफ व सभी होनहार सहयोगियों एवं विशेष सहयोगीद्वय माननीय श्री देव वाधवानी जी(जयपुर) श्री अनिल कर्मचन्दानी जी(इंदौर) का सेवा भाव अद्भुत ही था।

चिकित्सकगण सेवाव्रत से कभी विमुख नहीं हुए, नित्यप्रति औसतन एक हजार से बारह सौ की संख्या तक अर्थात जितने भी रोग ग्रस्त बुजुर्ग, स्त्री, पुरुष, चिकित्सालय इलाज हेतु आते थे चिकित्सक बिना विश्राम किए उनका उपचार करते रहे। वे कितने भी कार्य में व्यस्त क्यों न हों, इसके बावजूद भी रोगियों को रोग निवारण हेतु उन्हें देखना और पूछना मात्र औपचारिक नहीं होता था। रोगियों की मानसिक स्थिति का सहानुभूति पूर्वक अध्ययन करते जिससे उनका आधा रोग भाग जाता था। हालांकि चिकित्सालय का समय प्रातः ६ से रात्रि ८ बजे तक नियत था, परन्तु जब भी अर्धरात्रि में भी कोई इमरजेंसी आ जाती थी तो "सेवा ही प्रार्थना है, सेवा ही साधन है, सेवा ही परमात्मा है" ऐसा विचार कर सूचना मिलते ही उसी समय तत्काल चिकित्सक गण उपस्थित हो जाते थे अर्थात सेवा से कभी विमुख नहीं हुए।

पूज्य महाराज श्री द्वारा सन्त श्री शंकरलाल प्रेमप्रकाशी (मुंबई) को चिकित्सालय की सम्पूर्ण देखरेख एवं संचालन का उत्तरदायित्व सौंपा गया था, उनके द्वारा भी तन, मन एवं वाणी से कर्तव्य का निर्वहन किया गया। आप चिकित्सालय में सेवारत समस्त माननीय चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ, सहयोगियों एवं रोगियों के मध्य समन्वयक रहे अर्थात सभी को एक सूत्र में बांधे रखा। आपने चिकित्सालय में आगंतुक प्रत्येक शासकीय निरीक्षक दल एवं अधिकारियों का हृदय से स्वागत सत्कार कर चिकित्सालय की समस्त गतिविधियों से भली भांति परिचय कराया।

होनहार सभी सहयोगीयों को चिकित्सालय प्रारम्भ होने के पूर्व रोगियों की सेवा करने की तालीम दी गई थी और वे सभी इस पुनीत कार्य में सफल सिद्ध हुए। परिणामस्वरूप सभी सहयोगियों के भी स्वर में माधुर्य व प्रेम था। गंभीर रोगियों को आगामी उचित इलाज हेतु जिला व केंद्र चिकित्सालय पहुंचाने हेतु सर्व सुविधायुक्त आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित एंबुलेंस उपलब्ध कराई जाती थी।

दिनांक १ फरवरी २०२५ को प्रातः प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष वात्सल्य मूर्ति पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जिस प्रकार कोई भी व्यापार धंधा या नौकरी धन प्राप्ति के लिए किया जाता है, उसी प्रकार गुरु भी परमात्मा की प्राप्ति के लिए किया जाना चाहिये न कि सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिये।

महाराज ने चिकित्सालय की सुविधाओं के समापन अवसर पर उपस्थित चिकित्सक गण, नर्सिंग स्टाफ एवं सहयोगियों को संबोधित करते हुए कहा कि सेवा की सफलता का व्यापक रूप है- अपनी ओर से किसी को भी किसी प्रकार का कष्ट न पहुंचाना। सेवा के प्रसंग में एक रहस्यमय तथ्य यह है कि सेवा छोटी बड़ी नहीं होती, जिस सेवा कार्य में आसक्ति नहीं, अभिमान नहीं, कोई स्वार्थ नहीं, वह छोटी सेवा भी महान सेवा बन जाती है। दूसरों की सेवा करने में व्यक्ति को जो कष्ट होता है, उसे कष्ट नहीं समझना चाहिए, क्योंकि यह कष्ट तप स्वरूप है। वस्तुतः सेवा का फल कोई स्वर्गादि की प्राप्ति नहीं है और न धन धान्य की। सेवा स्वयं में सर्वोत्तम फल है।

अंत में पूज्य महाराज श्री ने अनन्तदर्शी आचार्य प्रवर अनन्त श्री विभूषित सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं कृपानिधि परम आदरणीय गुरुजनों एवं पतित पावनी मां गंगा, मां यमुना एवं मां सरस्वती के दिव्य श्री चरणों में प्रार्थना कर सभी उपस्थित चिकित्सालय में सेवारत सेवादारियों के कल्याण की प्रार्थना की कि आप सभी के जीवन में सुख समृद्धि और सौभाग्य आए।

स्वामी टेऊँराम चिकित्सालय, प्रयागराज – सिंहावलोकन

(१) कुल ३३६६४ मरीजों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई गईं।

DETAILED DAY WISE COUNT

SWAMI TEOONRAM CHIKITSALAY PRAYAGRAJ Jan 2025 DAILY OPD COUNT

	DEPARTMENT							
DATE	GEN PHYSICIAN	CARDIAC / DIABETIC	ORTHO	EYE	DENTAL	HOMEO	CHATNAG GHAT	DAILY TOTAL
09.01.25	127		36	3	0	0		166
10.01.25	177	30	71	42	35	3		358
11.01.25	324	38	102	202	32	5		703
12.01.25	419		125	202	51	50		847
13.01.25	870		261	322	86	60		1599
14.01.25	918		128	315	90	60		1511
15.01.25	507		85	257	60	35		944
16.01.25	495		68	260	50	23		896
17.01.25	504		76	275	21	13		889
18.01.25	473		182	337	60	22		1074
19.01.25	551		198	372	56	68		1245
20.01.25	455		196	225	82	80		1038
21.01.25	350		215	265	74	112		1016
22.01.25	468		142	291	76	115		1092
23.01.25	414		182	240	75	105		1016
24.01.25	545		254	309	76	145		1329
25.01.25	672		298	286	87	110	380	1833
26.01.25	787		290	328	84	135	575	2199
27.01.25	835		359	329	74	140	545	2282
28.01.25	1047		393	408	72	175	770	2865
29.01.25	1057		345	337	60	132	930	2861
30.01.25	1201		393	402	89	148	951	3184
31.01.25	1025		233	185	50	102	635	2230
01.02.25	232		95		8		152	487
TOTAL	**14453**	**68**	**4727**	**6192**	**1448**	**1838**	**4938**	**33664**

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

आपके घर द्वार के भीतर जो भी प्राणी आ जाये,
उसे परमात्मा की मूर्ति जानकर, उसकी सेवा करनी चाहिए।

(२) २१ चिकित्सकों की टीम लगातार अपनी चिकित्सकीय सेवाएं उपलब्ध कराती रही।

क्र.	डॉ.का नाम	विशेषज्ञता	ओपीड़ी	कहां से	कितने दिन
1.	डॉ. वासदेव ठाकुर	PHYSICIAN	09 Jan to 01 Feb	भाटापारा	24
2.	डॉ. जी.सी. मोटवानी	ORTHO	09 Jan to 01 Feb	शहडोल	24
3.	डॉ. नीता बजाज	HOMEOPATHY	10 Jan to 01 Feb	गोंदिया	23
4.	डॉ. ओ.पी. शर्मा	OPTHALMOLOTIST	10 Jan to 20 Feb	जयपुर	11
5.	डॉ. हेमलता तनवानी	DENTIST	22 Jan to 01 Feb	लोनावाला	10
6.	डॉ. तान्या सचदेव	PHYSICIAN	23 Jan to 01 Feb	अहमदाबाद	10
7.	डॉ. हेमा कुकरेजा	OPTHALMOLOGIST	25 Jan to 01 Feb	आगरा	8
8.	डॉ. सुरेश टहिलयानी	MBBS,MPHIL,PGDMLS	26 Jan to 01 Feb	जयपुर	7
9.	डॉ. चेनानी	PHYSICIAN	25 Jan to 30 Jan	यूएसए	6
10.	डॉ. पूजा घनश्याम	SKIN / GYANECOLOGY	25 Jan to 29 Jan	दिल्ली	5
11.	डॉ. पी.एन. जेठानी	PHYSICIAN	27 Jan to 31 Jan	जयपुर	5
12.	डॉ. एम.एल. बालानी	MS ORTHO	28 Jan to 01 Feb	जयपुर	5
13.	डॉ. एनी वाधवानी	DENTIST	12 Jan to 15 Jan	ग्वालियर	4
14.	डॉ. दिलीप वाधवानी	PHYSICIAN	29 Jan to 31 Jan	जयपुर	3
15.	डॉ. राजेश्वरी वरियानी	PHYSICIAN	29 Jan to 31 Jan	जयपुर	3
16.	डॉ. संदीप कारड़ा	DENTIST	09 Jan to 11 Jan	ग्वालियर	3
17.	डॉ. शिवम गुप्ता	DENTIST	17 Jan to 19 Jan	ग्वालियर	3
18.	डॉ. अंकित शास्त्री	DENTIST	17 Jan to 19 Jan	ग्वालियर	3
19.	डॉ. एस.एन. अग्रवाल	HOMEOPATHY	23 Jan to 24 Jan	जयपुर	2
20.	डॉ. प्रकाश केसवानी	DIABETOLOGIST	11 Jan to 12 Jan	जयपुर	2
21.	डॉ. मन्जू केसवानी	GAYNECOLOGY	11 Jan to 12 Jan	जयपुर	2

(३)कुल ५१ सहायकों ने भी अपनी चिकित्सकीय सेवाएं प्रदान की।
(४) ८ प्रकार के विशेषज्ञ चिकित्सक अपनी सेवाएं देने हेतु उपलब्ध रहे
(५) उत्तर प्रदेश सरकार का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।
(६) आईसीयू एवं एम्बुलेंस की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई ।
(७) प्रत्येक दिन ८ से १० मरीजों को "इमर्जेंसी" सेवाएं भी उपलब्ध कराई जा रही थी।
(८) समस्त चिकित्सक, सहायक एवं सेवाधारी देश के विभिन्न नगरों से सेवा प्रदान करने हेतु लगातार इस कैम्प में उपलब्ध रहे।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जैसे पानी में नाव रहती है वैसे आप संसार में रहो।

आचार्य प्रवर मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र छावनी !

मुख्य प्रयागराज जंक्शन रेल्वे स्टेशन से लगभग १०-१२ किलोमीटर की दूरी पर कुम्भ नगरी के सेक्टर क्र.-२२ स्थित पानी की टंकी के समीप स्थापित **''प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र छावनी''** पहुँचने के पूर्व मार्ग में शास्त्री पुल पर पहुंचते ही कुम्भ मेला नगरी का विहंगम व अद्भुत नजारा देख प्रेमीजन विस्मय से अभीभूत हो उठते है साथ ही मार्ग में विभिन्न छावनीयों के बाहरी स्वरूपों को देखकर गद्गद् हो रहे थे। जो प्रेमीजन प्रथम बार प्रयागराज कुम्भ मेला में आये थे उनकी प्रसन्नता का तो कोई पार ही नहीं था।

प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र छावनी पर जब आए तो ऐसा सुमूर्त रहा कि यहां आकर देखा कि कथा (सत्संग) की अमृत धारा बह रही है, दूसरी ओर आचार्य प्रवर गुरुजनों की कृपा धारा बह रही है तीसरी ओर हमारे पूज्य गुरुजनों के पुरुषार्थ की धारा भी बह रही है। यहां आने के पश्चात् छावनी का दर्शन अवलोकन किया और जाना कि कुछ माह पूर्व इस स्थान की स्थिति कैसी थी, कुछ पुराने चित्र भी देखे लेकिन स्थान का जो रूपान्तरण आज देख रहे थे तो हमें इतना ही कहना है कि ''महाराज जी ! आपने जंगल में मंगल कर दिया''।

मुख्य द्वार जिसको श्री अमरापुर स्थान का दिव्य-भव्य स्वरूप दिया गया था, अन्दर प्रवेश करते ही बांई और पावन यज्ञशाला और समीप ही सुन्दर भव्यतम पर्णकुटीर में श्री मन्दिर बनाया गया था। इस श्री मन्दिर पर्ण कुटीर में करूणा वरूणालय विष्णु भगवान एवं माता लक्ष्मी, आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के दिव्य चित्र स्वरूपों के दर्शनों से मन सेवा-सत्संग-सुमति नामदान के लिये स्वमेव ही प्रार्थनारत हो जाता था। पावन यज्ञशाला एवं श्रीमंदिर के मध्य एवं भव्य मंच पर विशाल प्रेम प्रकाशी धर्मध्वजा शोभायमान हो रही थी।

मुख्य द्वार के दायी ओर यज्ञशाला के उस ओर सत्संग सभालय अपूर्व सुन्दरता के साथ विराट स्वरूप लिए हुए दिखाई पड़ रहा था जिसका प्रवेश द्वार मुख्य मार्ग से रखा गया था। सत्संग सभालय के मुख्य प्रवेश द्वार के सामने ही नित्य प्रवाहित, पुण्य सलिला माँ गंगा के दिव्य दर्शनों से हृदय प्रफुल्लित हो जाता था। इसी स्थान पर गंगा आरती स्थल का निर्माण कराया गया था जहां नित्य सायंकाल को गंगा आरती हुआ करती थी। दिव्य विशाल सत्संग सभालय की सुन्दरता का वर्णन करने हेतु शब्द नहीं है। सत्संगालय जिसमें ७-८ हजार प्रेमी आराम से बैठकर दिव्य सत्संग ज्ञान यज्ञ में आत्म

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जिस मनुष्य के पास शुभ कर्मों रूपी टिकिट है, वह संसार की यात्रा आसानी से कर सकता है।

अमीरस का पान कर सकते थे । सामने विशाल मंच जो लगभग पांच फुट ऊंचाई लिये होगा और लम्बाई लगभग २५० फुट से ऊपर तो चौड़ाई लगभग १० फुट से भी अधिक होगी । विशाल मंच पर भगवान श्री लक्ष्मीनारायण भगवान, आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जी के मंगल दर्शन करके मन आनन्द विभोर हो उठता है अर्थात् एकटक देखते रहने को मन करता है । वास्तव में जिन प्रेमीजनों ने इस सभालय को भव्य रूप प्रदान किया था उनके पुरूषार्थ को नमन है।

यज्ञशाला के साथ ही ''प्रवासी प्रेम प्रकाशीजन'' अर्थात् अन्य देशों से पधारे श्री पूज्य शुभचरणों के सेवक प्रेमीजनों के ठहरने हेतु कुटियाऐं बनी हुई थी। जहां पर उन्हें सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध करायी गयी थी । कुटियाओं के बाहर जाकरता, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया, दुबई, अमेरिका, सिन्ध (पाकिस्तान) एवं बैंकाक मण्डलियों के कीर्तन भजन करते हुए बड़े-बड़े चित्र लगाये गये थे । जो उनकी आस्था और गुरु निष्ठा के परिचायक थे। आगे चलने पर दायीं ओर छावनी में पधारे सभी प्रेमियों के लिये प्रसादी (भोजन) पाने के लिये विशाल ''प्रसादालय'' था जिसमें पूज्य साधु संतों के लिये पृथक व्यवस्था रखी गयी थी । यहां पर लगभग १००० से अधिक संख्या में प्रेमीगण पंक्तिबद्ध बैठकर भोजन प्रसादी पा सकते है । यहां पर संत भोलारामजी, संत सुमीतजी, संत देव इत्यादि अमरापुर नवयुवक मण्डल के सेवाधारी भोजन भण्डारा खिलाने की सेवा में मग्न दिखाई पड़ रहे थे। प्रसादालय के समीप आंगतुक प्रेमीजनों को आवश्यकतानुसार बिस्तर इत्यादि वितरित करने का स्थान था जहां पर हजारों की संख्या में रजाईयां-तकिये-गद्दे रखे हुए थे । उसके पास ही पूज्य संत हरीओमलाल जी मेले में पधारे प्रेमीजनों को मेले का प्रसाद वितरित करते थे। उसी के पास भण्डारा हॉल बना हुआ था । उस के समीप ही कोठार (जो कि लगभग १० हजार वर्ग फुट से अधिक होगा) था जिसकी सेवा संभाल अपने पूर्वजों श्री वसणाराम गोबिन्दराम की भांति सर्व श्री वाशदेव-मोहनलाल-सांवलराम जी के साथ-२ श्री आत्मप्रकाश खुराना जी, श्री शाम (काली आगरा) व दीपक (उल्हासनगर) अन्य सेवाधारियों के साथ देख रहे थे ।

इसके पास ही एक हॉल बनाया गया था जहां पर पूज्य महाराजश्री व पूज्य संत मनोहरलाल जी से आगन्तुक प्रेमीगण भेंट करते थे ।

इससे लगा हुआ भोजन भण्डारा तैयार करने के लिये एक विशाल हॉल जो कि लगभग १८-२० हजार वर्गफुट का होगा का निर्माण किया गया था । यहां पर परम पूज्य महाराजश्री के सानिध्य में सेवाधारीयों व जीवतराम (खण्डूमण्डली) के द्वारा भोजन भण्डारे की सेवा व्यवस्था में सर्तकता के साथ इस उत्तरदायित्व का निर्वहन करते दिखाई पड़ रहे थे । साथ ही यहीं पर दूध की सेवा भी परम्परानुसार श्री हासानन्द जी कर रहे थे । इस विशाल हॉल में ही मातायें सब्जी काटने वे रोटियां बनाने की सेवा में मग्न थी । सभी माताएं सेवाकार्य के साथ-साथ पूज्य गुरुजनों की महिमा के भजन भी गुनगुना रही थी ।

सत्संग सभालय के पीछे एवं कोठार-भोजन भण्डारा हॉल के सामने कुछ स्थान खाली रखा गया था यहां पर श्रद्धालुओं के लिये चाय-कॉफी तैयार करने एवं वितरण हेतू अलग से कैन्टीन बनायी गयी थी । जहां पर पलवल निवासी माता शशी देवी अपने दोनों पुत्रों के साथ व श्रीमती शिवानी तलरेजा (मुरैना) व अन्य सेवाधारियों के साथ अपने सेवा धर्म का पालन कर रहे थे ।

मुख्य मार्ग से प्रवेश द्वार के पास ही सत्संग सभालय के प्रवेश द्वार के पास एक ओर प्रवेश द्वार था जिसे जयपुर स्थित अमरापुर स्थान के मुख्य प्रवेश द्वार का भव्य स्वरूप दिया गया था । यहां पर प्रवेश करते ही पूछताछ केन्द्र था जहां पर संत ढालूराम जी एवं संत लक्ष्मण जी आने वाले प्रेमियों को आवास सुविधा उपलब्ध्य करवा रहे थे । इसके सामने ही चाय की कैन्टीन प्रेमियों के लिये उपलब्ध थी । प्रवेश द्वार से थोड़ी सी चढ़ाई थी । वहां से ऊपर आने पर दाई ओर प्रेमियों के निवास हेतु रहने की सुन्दर व्यवस्था की गयी थी । इस स्थान को भिट्ट शाह/टण्डो आदम नाम दिया गया था । उससे थोड़ा ऊपर जाने पर परम पूज्य महाराजश्री एवं अन्य पूज्य संतों के निवास हेतु सुन्दर पर्ण कुटियाएं बनायी गयी थी इस स्थल का नाम ''खण्डू गाँव'' रखा गया था । अन्दर प्रवेश करने पर इसकी शोभा का क्या कहना ? इससे थोड़ा आगे चलकर प्रेमियों के निवास हेतु जो स्थान था उस स्थान का नाम ''चक नगरी एवं गुरमुख नगरी'' रखा गया था ।

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

माता-पिता से माँगने वालों को भिखारी नहीं कहते, पर दूसरों से माँगने वाले को फकीर या भिखारी कहा जाता है

अन्नक्षेत्र–छावनी का प्रबन्धन एवं सेवा

परम पूज्य महाराज श्री के सानिध्य में प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र-छावनी का प्रबन्धन-सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छता सेवाएं उत्तमोत्तर थी । समस्त सेवाएं उपकारक है कोई भी सेवा निरर्थक नहीं है किसी न किसी रूप में उसकी सार्थकता है । छावनी में पधारने वाले पूज्य साधु-सन्तों एवं प्रेमीजनों को किसी भी प्रकार की कोई असुविधा न हो इसका पूरा ध्यान रखा गया था । प्रेम प्रकाश मण्डल के पूज्य संतजनों एवं जिस-जिस सेवाधारी को जो सेवाकार्य सौंपा गया था उन्होंने मन-वाणी-शरीर से शांत स्थिर दूसरों को सुख पहुंचाने के भाव से, लौकिक फल की चाह न रखते हुए समभाव से सेवाकार्य करते रहे ।

और कुछ न जानो, सब छोड़कर सेवा ठानो ।

पूज्य महाराजश्री नित्य ३-४ बार सेवा कार्यों का स्वयं निरीक्षण किया करते थे । साथ ही छावनी की स्वच्छता का भी विशेष ध्यान रखा गया था ।इस हेतू विशेष प्रयास किये गये थे । एक बार उपयोग में आने वाली प्लास्टिक के उपयोग पर पूरी तरह रोक लगाई गयी थी । सभी सेवाधारियों की सेवा के प्रति श्रद्धा-आस्था और भाव का अभिनन्दन करते हैं ।

न दिन देख न रात, न मौसम का ध्यान,
बस सेवा-सेवा सेवा

काया की छाया की तरह सेवा करते रहे । अहम शून्य सेवा-सभी के मुख पर एक ही भाव कि हम पूज्य महाराजश्री जी के कृतज्ञ हैं कि हम अकिंचनो को इस पुनीत अवसर पर सेवा कार्य करने का अवसर दिया । सभी का यह ध्येय था कि जो भी यहां से वापस जाय वह पूज्य गुरुजनों का यशोगान करते जाये ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

गुरु के बिना आत्मज्ञान नहीं होगा। बिना आत्मज्ञान के अनात्म देह का अभिमान संशय और भ्रम दूर नहीं होंगे। बिना भ्रम संशयों के दूर हुए शान्ति और सुख की प्राप्ति नहीं होगी।

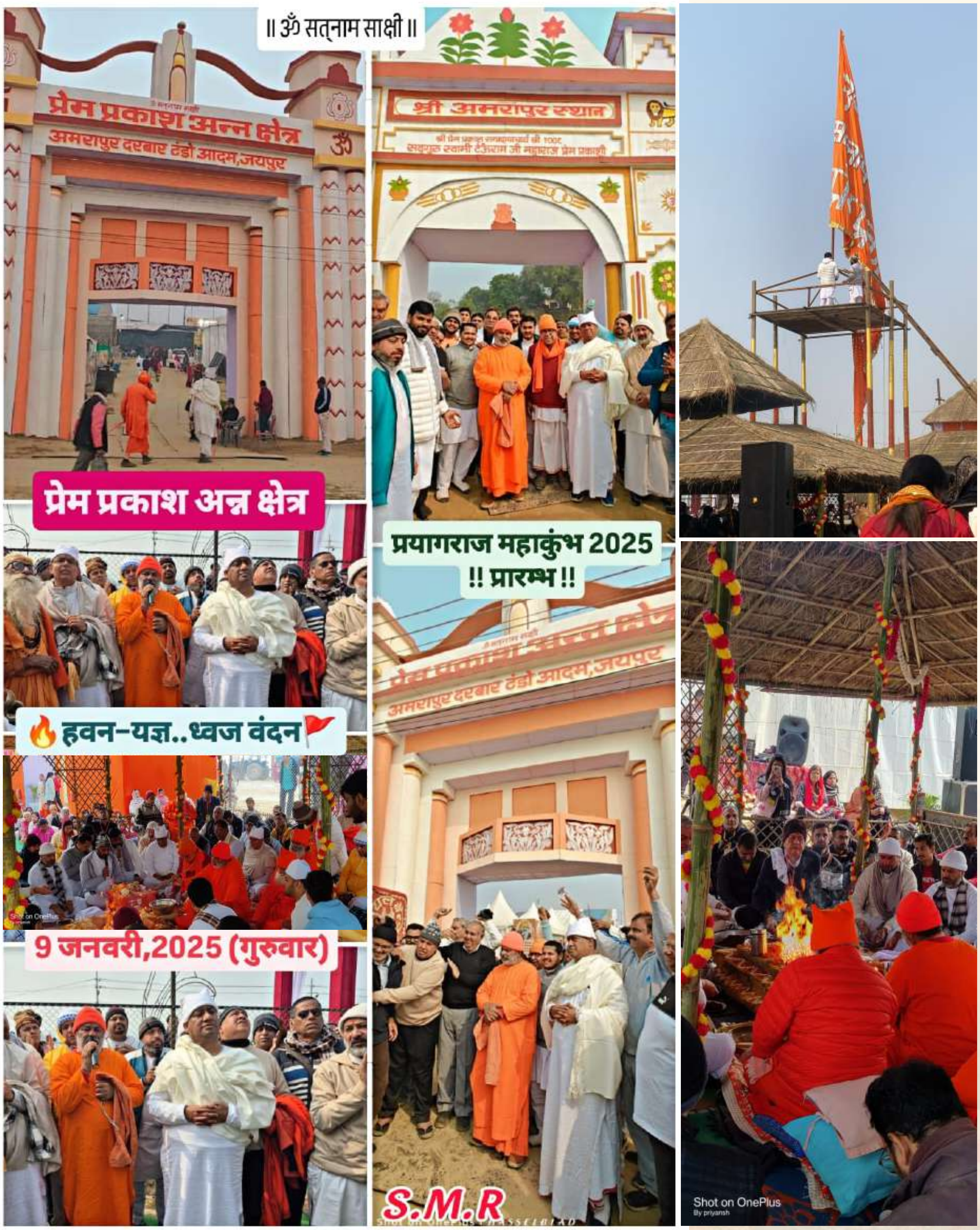

जिसको गुरु कृपा का कण मिल जाता है, उसकी समस्त क्रियाएँ बदल जाती हैं।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी आत्म साक्षात्कार के पश्चात् आप सच्चे आनन्द का अनुभव करेंगे।

सद्‌गुरु हरिदासराम वचनावली

गुरु के बिना संसार रूपी समुद्र से पार होना संभव नहीं है ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

जिन महापुरूषों की वाणी वेद के समान है, उनकी सेवा करनी चाहिए। जब वे महात्मा सेवा करने पर प्रसन्न हो जाते हैं तब जिज्ञासु को आत्मज्ञान देकर अमर बनाते हैं।

आस्था के आगे झुका- विज्ञान

महाकुंभ पर्व 2025

६६ करोड से भी अधिक सनातनियों ने प्रयागराज महाकुंभ पर्व पर त्रिवेणी संगम में लगाई आस्था की डुबकी! विश्व चकित है ! होना भी चाहिये ! ना कोई मास्क हैं, ना कोई दूरियां हैं, ना ही कोई सैनिटाइजर्स हैं और करोड़ो मानव एक ही नदी में एक सीमित जगह पर स्नान कर रहे हैं और कोई महामारी नहीं फैली ! सारे कीटाणु और जीवाणु सब गुम ! कैसी श्रद्धा है ! कैसी आस्था! महा अद्भुत योग ! अद्भुत कैसी है श्रद्धा ! कैसा अलौकिक मां गंगा का स्वरूप ? कैसा अनोखा प्रयागराज का त्रिवेणी संगम ! कैसी आलौकिक आस्था है और कैसा अपूर्व महाकुंभ है ! कैसा धर्म है ! कैसा विज्ञान है ! कैसा सितारों का योग है ! अदभुत संयोग ! हम सब की समझ के बाहर!

पूरा का पूरा जन सैलाब एक ही उद्देश्य को लेकर उमड़ रहा था ! पापों का नाश और मोक्ष की प्राप्ति ! ना कोई जात-पात ! ना कोई वर्ण का भेद ! ना कोई ब्राह्मण, ना क्षत्रिय, ना वैश्य और ना शूद्र ! ना कोई ऊंचा ना कोई नीचा ! सब एक समान ! क्या साधु क्या संत महंत, मंडलेश्वर ! बड़े बड़े नागा साधु, सन्यासी, तो अनेक अघोरी महापुरुष ! और कहां साधारण मानव ! कोई भेद नहीं !! सब कर रहे है अमृत कुंभ स्नान !

हे आधुनिक विज्ञान ! एक बार फिर से बैठ कर गहन चिंतन करना ! क्यों नहीं फैल रही महामारी.. ? क्या होता है मोक्ष ?? कोशिश करो इस आस्था को जानने की ! क्या होते हैं पाप और पुण्य...? क्या होता है पुनर्जन्म ? जानो आधुनिक विज्ञान ! तुम्हें अभी बहुत कुछ जानना है ! आस्था के आगे झुक गया विज्ञान ! क्या हो सकता है आस्था का विज्ञान, धर्म का विज्ञान तुमसे बड़ा हो..? थोड़ा झुकना सीखो आधुनिक विज्ञान ! कहते हैं झुकने से ज्ञान बढ़ता है ! ६६ करोड़ से अधिक लोगों ने लगाई आस्था के महाकुंभ संगम में डुबकियां !!! विचार करना.. कैसा अदभुत ! सनातन धर्म.. ! अद्भुत, अलौकिक, अकल्पनीय ,,!!!!

इसी प्रकार इस अमृत के साक्षी बने २४ दिवसीय श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के स्वामी टेऊँराम अन्नक्षेत्र में श्री अमरापुर स्थान जयपुर एवं देश-विदेश के अन्य शहरों से

आये ५० हजार से अधिक भक्तों ने आस्था के समुंदर में डुबकियां लगाई ! सभी ने भजन, सत्संग, सेवा, सुमरन का भरपूर लाभ लिया । कुम्भ मेले के दौरान ही प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा स्थापित सदगुरु टेऊँराम चिकित्सालय जिसमें प्रतिदिन लगभग २५०० से अधिक (पच्चीस सौ) मरीजों ने चिकित्सा, दवाईयो का लाभ लिया !! छावनी के बाहर ही सर्व समाज के मुसाफिर यात्रियों के लिए चल रहे अन्न क्षेत्र में भोजन प्रसादी में प्रतिदिन तीस-चालीस हजार के आस पास दोना प्रसादी श्रद्धालुओं द्वारा ग्रहण की गयी !!!

धन्य धन्य है युगपुरुष आचार्य सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं उनकी सेवाएं...!!!!!

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं,
बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं।

प्रयागराज धाम में महाकुम्भ के पावन पर्व पर परम पूज्य महाराजश्री के पावन श्रीमुख से बरसा अमृत रस

बोलो सनातन धर्म की जय, श्री रामकृष्ण भगवान की जय, श्री शंकर भगवान की जय, श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की जय, जगदम्बे मैया की जय, गंगा मैया की जय, यमुना मैया की जय, सरस्वति मैया की जय, प्रयागराज धाम की जय, सद्गुरु टेऊँराम महाराज की जय, सद्गुरु सर्वानन्द महाराज की जय, सद्गुरु शान्तिप्रकाश महाराज की जय, सद्गुरु हरिदासराम महाराज की जय, अमरापुर दरबार की जय, प्रेमप्रकाश मण्डल की जय, सर्व सन्तन की जय

जय गंगे जय गंगे जय गंगे जय गंगे,
जय गंगे गोपाल भज मन जय गंगे,
जय गुरुदेव जय गुरुदेव जय गुरुदेव जय गुरुदेव,
जय जय सत् गुरुदेव, भज मन जय गुरुदेव,

जन्म जन्म के पुण्य जीव के, जभी सभी आ फलते हैं,
तभी इसी संसार के माहीं सन्त समागम मिलते हैं,
सन्त समागम सम नहीं साधन को जग माहिं,
कह टेऊँ बिन हरि कृपा सत्संग मिलता नाहिं,

सत्संग करि तूं, सत्संग करि तूं, सत्संग करि तूं श्रद्धा सां,
मानुष जन्म हीरो वरी कोन ईन्दो ईन्दो, वरी कोन ईन्दो,
हरे राम राम राम राम, राधे श्याम श्याम श्याम श्याम,

मात गर्भ में उलटो मूरख लटकें थे, लटकें थे,
चौरासी लख जूणिन में तूं भटकें थे, भटकें थे,
जन्म ड़िनो ही, जन्म ड़िनो ही,
भगवत आ याद तूं रखिजाएं दिलि में
''कबहुँक करि करुणा नर देही, देत ईश बिनु हेतु सनेही''
जन्म ड़िनो ही, जन्म ड़िनो ही,
भगवत आ याद तूं रखिजाएं दिलि में
कदुहिं कोन ड़ींदो ड़ींदो, वरी कोन ड़ींदो,
हरे राम राम राम राम, राधे श्याम श्याम श्याम श्याम,

जेकी करीं सो हाणि करे वठु बख्त अथई, बख्त अथई
सेवा सुमिरणु दान करण जो बख्त अथई, बख्त अथई,
खास खटण लाइ, खास खटण लाइ आएं तूं,
भागु ही तुहिंजो एहड़ो कदुहिं कोन थीन्दो थीन्दो,

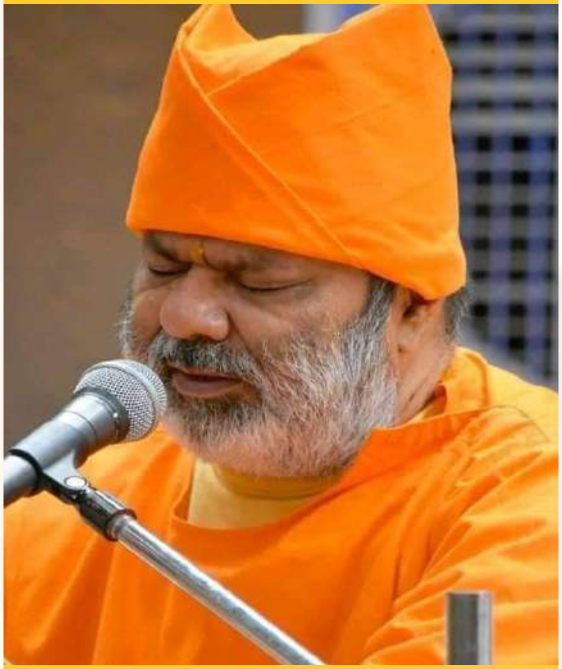

कदुहिं कोन थीन्दो,
हरे राम राम राम राम, राधे श्याम श्याम श्याम श्याम,
सत्संग करि तूं, सत्संग करि तूं, सत्संग करि तूं श्रद्धा सां,
मानुष जन्म हीरो वरी कोन ईन्दो ईन्दो, वरी कोन ईन्दो, ''फेर न आवसी जनम मानस यह वेला है प्रभु दे पावणे दा,
टूटा फल ना डाली दे नाल लागे
टूटा मोती ना फेर गंढावणे दा,
भना शीशा ना कारीगर फेर जोड़े,
फिटा दूध न फेर जमावणे दा,
सब सन्त पुकारदे साईं लोको
यह वेला है प्रभु ते पावणे दा,
वरी कोन ईन्दो ईन्दो, वरी कोन ईन्दो,
वरी कोन ईन्दो ईन्दो, वरी कोन ईन्दो,

प्रेम से बोलिये सतनाम साखी, सतनाम साखी,

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मन में किसी वस्तु की चाह रखना ही दरिद्रता है।

तो ईश्वर की अनन्त कृपा का फल क्या है? ईश्वर की कृपा का फल है सत्संग की प्राप्ति, मनुष्य शरीर की प्राप्ति, मनुष्य शरीर मिला, साधन मिला, लेकिन साधन के द्वारा फिर आगे बढ़ना, साधन का सही उपयोग करना यही मनुष्यत्व है,

''मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रय:''

तो सत्संग, महापुरुषों का सान्निध्य, ये दुर्लभ वस्तुओं में गिना गया, गुरु महाराज जी अमृतमयी वाणी में फरमाते हैं कि साधन बहुत हैं, लेकिन प्रमुख साधन है सत्संग, मानव जीवन का सर्वोत्कृष्ट फल सत्संग की प्राप्ति है, जिसके जीवन में सत्संग मिला, सन्त महापुरुषों का पावन सान्निध्य मिला, उसे समझना चाहिये कि मेरे ऊपर ईश्वर की अनन्त कृपा है क्योंकि–

बिनु सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई

सत्संग के बिना सत् और असत् का विचार विवेक जागृत नही होता, जीवन मिला लेकिन जीवन का लक्ष्य क्या है, मेरे होने का अर्थ क्या है, मेरा जो अस्तित्व है उस अस्तित्व का अर्थ क्या है, किस प्रयोजन से इस मनुष्य शरीर की प्राप्ति हुई, यह सब ज्ञान सत्संग के द्वारा मिलता है, कहीं बाजार में मिलने वाला नहीं, यह दुनिया का सबसे रहस्यमयी ज्ञान है, शरीर क्या है, शरीर के अंदर बैठी हुई कौन सी शक्ति है जो इस शरीर को चला रही है, जिसके जाने से शरीर निश्चेष्ट हो जाता है –

मृतं शरीरं उत्सृज्य काष्ठलोष्टसमं क्षितौ
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तं अनुगच्छति

जिसे मृत कहा गया है, उसे मृत शरीर क्यों कहा गया, शरीर वही है लेकिन कौनसी शक्ति इसमें प्रवेश करके इसको चेतनता प्रदान करती है और किस शक्ति के जाने से फिर सबकुछ जड़वत हो जाता है तो इन सब बातों का ज्ञान सत्संग के द्वारा ही प्राप्त होता है ।

मैं कौन हूं आया कहां से, कुछ नहीं इसका पता,
जो जो यहां आये सभी वे हो गये हैं लापता,
यह बात निश्चय जानकर भी नित्य रहना चाहता,
आंखों सहित अन्धा हुआ है हाय कितनी मूर्खता

तो किस प्रकार से इस जगत में मेरा जन्म आगमन हुआ, मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है, कुछ भी पता नहीं

कुछ खाना, कुछ सोवना और न कोई चीत
सत्गुरु शब्द विसारिया जो आदि अन्त का मीत

जो शरीर धारण करने से पहले भी साथी था, शरीर त्यागने के पश्चात् भी जो साथ निभाने वाला है, उसको तुमने भुला दिया, लेकिन बीच के संगी साथी उनसे तुम्हारा मन जुड़ा रह गया तो ये सत्संग बड़े भाग्य से प्राप्त होता है, उसमें भी यह कुम्भ का महान पर्व, गंगाजी के पावन तट पर बैठे हैं, न जाने कितने ऋषियों–मुनियों ने युगों–युगों से यहां बैठकर के तप किया है

से सब स्थल तीर्थ जानों सन्त जहां पग धरते हैं

तो यह पवित्र भूमि ऋषियों मुनियों सन्तों तपस्वीयों की तपस्या की भूमि, इस भूमि के परमाणु यहाँ के कण कण में व्याप्त हैं, और यहाँ बैठकर के जिसने नाम का सुमिरण किया अपने मन को ईश्वर के चरणों में जोड़ा, तो बहुत सहजता और सरलता से उसे आगे का मार्ग भी मिलता जाता है, गुरु महाराज जी कहते हैं कि गुरु की शरण में जाकर, सन्त महापुरुषों की शरण में जाकर अपना कल्याण का साधन वहाँ पर पूछो,

कहे टेऊँ वठु सत्गुर जी तूं शरणाई, शरणाई
सीख इहाई सभनी सन्तन समझाई, समझाई,
शरण वती जिनि शरण वती जिनि, शरण वती जिनि सत्गुर जी
काल कहारी तिनिखे, कदुहिं कोन नींदो नींदो, कदुहिं कोन
नींदो, यह काल खाए सर्व को, कालेश को ना खा सके,
भूकाल का भी काल जो कैसे पास उसके जा सके,
शरण वती जिनि शरण वती जिनि, शरण वती जिनि सत्गुर जी
काल कहारी तिनिखे, कदुहिं कोन नींदो नींदो, कदुहिं कोन
नींदो, काल सन्दो ही कालु आहे जो तहिंजी वठु तूं ओट,
कहे टेऊं ना कदुहीं तोखे लगन्दी जम जी चोट,
सत्संग कर तूं, सत्संग कर तू, सत्संग कर तूं श्रद्धा सां,
मानुष जन्म हीरो वरी कोन ईन्दो ईन्दो, वरी कोन ईन्दो,

तो महाकुम्भ पर्व में आये हुए सभी श्रद्धालुओं को अपना समय का प्रत्येक क्षण सफल करना चाहिये, सत्संग, नाम जप और सेवा का ध्यान रखेंगे तो गुरु महाराज जी की अपार कृपा होगी यह कुंभ का मेला हमारा सफल होगा।

तो गुरु महाराज के पावन चरणों में प्रार्थना करें आसीस मांगे।

तुम्ही सतगुरु तुम पित माता, तुम ही हरिहर तुम ही विधाता,
हम हैं भिखारी तुम हो दाता, बार बार लख बार नमामि।
जय जय जय टेऊँराम स्वामी, कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी.....

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जब हम अपना मन और बुद्धि दोनों ही गुरु को अर्पित करेंगे तब ही हमें गुरु का सच्चा आशीर्वाद मिलेगा।

मकर संक्रांति के पावन पर्व पर प्रयागराज महाकुम्भ में पूज्य महाराजश्री के अमृत वचन

बोलो सनातन धर्म की जय, श्री रामकृष्ण भगवान की जय, श्री शंकर भगवान की जय, श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की जय, जगदम्बे मैया की जय, सद्गुरु टेऊँराम महाराज की जय, सद्गुरु सर्वानन्द महाराज की जय, सद्गुरु शान्तिप्रकाश महाराज की जय, सद्गुरु हरिदासराम महाराज की जय,सर्व सन्तन की जय, प्रेमप्रकाश मण्डल की जय, अमरापुर दरबार की जय, गंगा मैया की जय, यमुना मैया की जय, सरस्वती मैया की जय, श्री प्रयागराज धाम की जय,

श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जयराम
श्री राम जय राम जय जयराम
श्री राम जय राम जय जयराम
श्री राम जय राम जय जयराम

इंद्रराज वैकुंठ सुख नहिं मांगू धन धाम
कह टेऊँ मुझे दीजिए हे हरि अपना नाम
तेरी सुखकारी सूरत नैनों में बस जाए,
आंखों को बंद कर लूं दूजा न नजर आए
हर क्षण हो सफल मेरा दर्शन तेरा पाते
वरदान यही दे दो मेरे सतगुरु सुखदाते,
बीते ये मेरा जीवन तेरे गुण गाते गाते
वरदान यही दे दो हो हो मेरे सतगुरु सुखदाते,
इन पावों से चलकर तेरे मंदिर में आऊं
हाथों से करूं सेवा मन से तुझको ध्याऊं
सतनाम साक्षी मंतर सुमरूं पीते खाते,
वरदान यही दे दो मेरे सतगुरु सुखदाते,
गुरुदेव तेरी कृपा जिस पर भी बरस जाए
दुख दर्द की छाया भी उस पर ना कभी आए
जो दास बने तेरा गम उसके मिट जाते
वरदान यही दे दो मेरे सतगुरु सुखदाते,
बीते मेरा जीवन तेरे गुण गाते गाते
वरदान यही दे दो मेरे सतगुरु सुखदाते,

प्रेम से बोलिए सतनाम साखी सतनाम साखी,

इंद्रराज वैकुंठ सुख नहिं मांगू धन धाम
कह टेऊँ मुझे दीजिए हे हरि अपना नाम

तो नाम की महिमा इंद्र की पदवी से भी बड़ी है, वैकुंठ के सुख से भी भरी, क्योंकि भगवान गीता में कहते हैं

आ ब्रह्म भुवन लोका, पुनरावर्तिनो अर्जुन

हे अर्जुन ब्रह्म लोक पर्यंत तक जाकर फिर इस जीव को पुनरावर्तन अर्थात वापस लौटना है, उसको उसका घर नहीं मिला, थोड़े दिन के लिए मेहमान बनकर वह गया, इंद्र की पदवी भी अतिथि की पदवी है, हमेशा की नहीं, और ब्रह्म लोक पर्यंत जितने भी लोक हैं, अगर अपने आत्म स्वरूप की प्राप्ति नहीं की तो पुनरावर्तिनो अर्जुन फिर उसको वापस लौटना पड़ेगा, स्वर्ग आदि लोक तो और निम्न स्तर पर हैं, पर इतने उच्च स्तर पर पहुंचकर भी स्थाई निवास नहीं, इसलिए नाम की शरण लेनी चाहिए, जो सब सुखों को देने वाला शाश्वत धाम तक पहुंचाने वाला, अमर लोक अमर धाम तक पहुंचाने वाला नाम है, जिस नाम की महिमा संत शास्त्रों ने गाई है,

साधक नाम जपहिं लय लाएं, होहि सिद्धि अनिमादिक पाएं,
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई, रामु न सकहिं नाम गुन गाई,
नाम प्रभाव जान शिव नीको, कालकूट फल दीन्ह अमी को,

तो नाम का जप लगन के साथ

साधक नाम जपहिं लय लाएं

तो मन की लगन नाम से जुड़ती नहीं, आदि काल से ऋषियों मुनियों ने परमात्मा से प्रार्थना की कि मेरा मन बहुत चंचल है स्थिर नहीं, नाम जप में मन लगता नहीं, इधर उधर के ख्याल मन के अंदर संकल्प विकल्प चलते रहते हैं, कैसे मेरा मन स्थिरहो जाए,

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढ़म्

अर्जुन ने भी भगवान से प्रार्थना की, तो दो साधन भगवान श्री कृष्ण ने अपनी अमृतमयी वाणी में बताए,

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते

अभ्यास करो अर्थात निरंतर जप करो, मन लगे या न लगे, अपने नियम को मत छोड़ो और जहां पर तुम्हारा मन अटकता है राग अर्थात मन की आसक्ति है, वहां से अपने मन को हटाने की कोशिश करो, मन बहुत चंचल है–

मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूं,
ये मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूं,
कह टेऊँ मन की गति अधिक पवन से जान
तांको जो जन वस करे वैरागी विद्वान,
ये मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूं,
जितना इसे समझाऊं उतना ही मचल जाए
जितना इसे समझाऊं उतना ही मचल जाए

सतगुरु तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाए
सच कहती है दुनिया किस्मत ही बदल जाए

तो मन के बिना भजन होने वाला नहीं, चंचल मन के साथ भी भजन होने वाला नहीं, उसके लिए निश्चल मन चाहिए,

निश्चल मन से मिलत है निश्चल आत्म राम,
टेऊँ मन निश्चल करे पाओ सुख का धाम ।

तो शाश्वत सुख अनंत सुख की प्राप्ति अपने अंतर से ही होगी, बाहर से नहीं, बाहर कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं, तो यह प्रेम प्रकाश मंडल सतगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की पावन छावनी गंगा जी का यह पावन तट जो सामने दृश्य गंगा जी के पावन दर्शन का सबको दर्शन हो रहा है और महाकुंभ के इस पावन पर्व में अमृत की बूंदे गिरी थी और अभी जो सत्संग का अमृत, नाम का अमृत बरस रहा है श्रद्धापूर्वक उसका पान करके अपने जीवन को सफल बनाएं, गुरु महाराज के पावन चरणों में प्रार्थना करें आसीस मांगे।

तुम्ही सतगुरु तुम पित माता,
तुम ही हरिहर तुम ही विधाता,
हम हैं भिखारी तुम हो दाता,
बार बार लख बार नमामि।
जय जय जय टेऊँराम स्वामी,
कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी.....

प्रतिदिन लगाएँ मस्तक पर चन्दन–तिलक

सनातन धर्म के सभी सम्प्रदायों में तिलक एक माँगलिक प्रतीक माना जाता है. किसी भी पूजा-पाठ, यात्रा, सफलता प्राप्ति आदि मौकों पर तिलक लगाकर शगुन की मंगल इच्छा की जाती है. तिलक का प्रत्यक्ष रिश्ता मस्तिष्क से है. मस्तक पर तिलक लगाते ही तन-मन शुद्ध हो जाते हैं. यह मान्यता है कि मस्तक पर तिलक लगाने से चित्त में नम्रता व एकाग्रता बढ़ती है और तनाव से मुक्ति मिलती है.

हमारी दोनों भौहों के मध्य आज्ञाचक्र स्थित होता है, यह एक ऐसा चेतना केन्द्र है जहाँ से सम्पूर्ण ज्ञान चेतना और क्रियात्मक चेतना का संचालन होता है. आज्ञा चक्र ही दिव्य नेत्र या तृतीय चक्षु है, जिसकी तुलना टेलीविजन राडार, टेलीस्कॉप की समन्वय युक्त ताकत से की जा सकती है. आज्ञाचक्र सुदृढ़ होता है सुख व शांति का एहसास होता है. ओज तथा तेज बढ़ता है. तिलक लगाते ही मस्तिष्क में एक तरह की शीतलता, तरावट एवं ठंडक की अनुभूति होती है. तिलक में शुद्ध चंदन, कुमकुम, हल्दी का प्रयोग करें जो मुख मंडल को तेजस्वी बनाता है. धार्मिक मान्यता अनुसार प्रतिदिन चन्दन का तिलक लगाना चाहिए. जिससे मन का सन्तुलन शान्तचित्त रहता है व मन प्रसन्न रहता है.

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश ज्ञान, ध्यान, आत्म विचार, नियम, प्रेम, शील, संतोष, उत्तम बुद्धि इत्यादि कुछ भी गुरु की कृपा के बिना नहीं मिल सकता।

वैराग्य रूपी बसन्त का आनन्द

02 फरवरी बसन्त पंचमी विशेष

भारतवर्ष में ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त और वसन्त ये छः ऋतुएँ प्रतिवर्ष सृष्टिनियन्ता के कालचक्र अनुसार आया जाया करती हैं. इन छः ऋतुओं में परमात्मा द्वारा रस भर दिया गया है जिससे सभी ऋतुएँ आनन्द देने वाली और मन को भाने वाली हैं. फिर भी वसन्त ऋतु की महिमा संत महात्माओं कवियों विद्वानों द्वारा विशेष रूप से की गई है.

मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ऋतुओं की गहराईयों में जाकर आध्यात्मिक खोज करके, मनुष्य शरीर में घटाते हुए कहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध और वैराग्य ये छः ऋतुएँ आया करती हैं. वसन्त आदि ऋतुओं द्वारा मानव इतना मोहित नहीं होता जितना कि शब्द, स्पर्श आदि ऋतुओं द्वारा होता है. शब्द स्पर्शादि ऋतुओं में एक ऐसा रसीला मिठास भरा हुआ है जो इनके अभाव में वसन्तादि ऋतुएँ भी फीकी सी मालूम जान पड़ती हैं.

शब्द स्पर्शादि से सर्वथा भिन्न छठी ऋतु है-वैराग्य! वैराग्य रूपी ऋतु जो है वह एक ऐसे आनन्द से भरपूर रहती है कि उसके आगमन की सूचना पाते ही वसन्त आदि छः ऋतुएँ व शब्द स्पर्शादि पाँच ऋतुएँ निस्तेज व हतप्रभ होकर रह जाती हैं. वैराग्य ऋतु के सामने इन ऋतुओं का कोई भी महत्त्व नहीं रह जाता. सौभाग्यवश जिन मनुष्यों के जीवन में इस अपराजित वैराग्य ऋतु का उदय होता है उन वैराग्य प्राप्त जिज्ञासुओं को जिनका मन भंवरों के समान होता है. उनको ही वैराग्य से उत्पन्न अलौकिक सुगन्धि का अनुभव होता है. वैराग्य ऋतु में उत्पन्न हुए दैवीय गुणों रूपी सुगन्धित रस का पान कर जिज्ञासु लोग समस्त आनन्दों की चरम सीमा को पार कर तृप्त हो जाते हैं. जैसे वसन्त ऋतु के सुहावने समय को पा कर छोटे-बड़े सभी पेड़ पौधे हरे भरे होकर नाना प्रकार के सुगन्धिमय फूलों से सुशोभित होने लगते हैं. वैसे ही जिज्ञासुओं के शरीर रूपी बगीचे में लगे इन्द्रियों रूपी पेड़, पौधों व लताओं में दैवी सम्पदा के शुभ गुणों रूपी फूल जो कि अभी तक कलियाँ ही थीं वैराग्य ऋतु को पाकर विकसित होकर लहराने लगते हैं. और जिज्ञासुओं का मन रूपी भंवरा दैवीय गुणों से उत्पन्न सुगन्ध का आस्वादन कर कृतार्थ हो जाता है. जैसे फुलवाड़ी में लगे फूल वसन्त ऋतु को पाकर प्रफुल्लित होते हैं. वैसे ही इन्द्रियाँ शुभ गुणों रूपी फूलों को पाकर खिल उठती हैं. जैसे वसन्त ऋतु के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर भंवरे मीठे स्वर में गुँजार करते हैं वैसे ही जिज्ञासु भी वैराग्य ऋतु के आकर्षक दृश्य को देखकर बहुत मीठे स्वर में राम नाम का उच्चारण करते हैं. जैसे भंवरे पेड़-पौधों, लताओं, पत्तों, काँटों और फल-फूलों का भी परित्याग कर फूलों में छुपे सुवास को ही लेते हैं वैसे ही जिज्ञासु भी क्षण-क्षण में बदलने वाले इस असार संसार के तमाम भोगों को छोड़कर केवल परमात्म नाम रूपी सुवास को ही ग्रहण करते हैं. यह वसन्त ऋतु देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों आदि को बहुत प्यारी लगती है तो वैराग्य ऋतु जिज्ञासुओं व मुमुक्षुओं को बहुत अच्छी लगती है. जिज्ञासु लोग इस वैराग्य विभूति को पाकर सुखी हो जाते हैं. परन्तु यह वैराग्य किसी बड़भागी को ही प्राप्त होता है. अतः **मनुष्य को वैराग्य रूपी बसन्त का आनन्द लेकर जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास सदैव करते रहना चाहिये.**

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी — **मुझे कुछ चाहिए ही नहीं, केवल इतनी बात से मुक्ति हो जायेगी।**

॥ लाभदायक है– ऋतुराज बसन्त ॥

गुरु भक्तों के लिए बसन्त ऋतु में लाभप्रद बातें

02 फरवरी बसन्त पंचमी विशेष

> बसन्त ऋतु में गुरु भक्तों को प्रातःकाल शीघ्र उठकर **'गुरुमंत्र'** का अभ्यास एवं **'साईं टेऊँराम दरबार'** का दर्शन अवश्य करना चाहिए. साथ ही कम से कम २४ मिनट तक ७ या ११ **'सत्नाम साक्षी महामंत्र'** की माला का **'नाम-स्मरण'** अवश्य करना चाहिए.

> बसन्त ऋतु के दो महीने प्रतिदिन प्रातःकाल कम से कम २-३ किलोमीटर पैदल जरूर चलना चाहिए ; हो सके तो घर से पैदल चलकर **'सत्संग स्थल – साईं टेऊँराम दरबार'** पर जाकर सत्संग रूपी गंगा में स्नान करना चाहिए.

> बसन्त ऋतु में चाय व खट्टी वस्तुओं का सेवन कम से कम करना चाहिए. माँस-मच्छी, अण्डा, शराब, गुटखा आदि अखाद्य पेय पदार्थों का सेवन तो बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए, जिससे मन-बुद्धि सात्त्विक होगी. गुरुदेव व प्रभु के प्रति प्रेमाभक्ति बढ़ेगी.

> बसन्त ऋतु में रात्रि को सोते समय खसखस, बादाम, कद्दू का तेल मिलाकर मस्तिष्क की नियमित मालिश करें, उसके बाद हल्का पतला कपड़ा बाँधकर सोयें. दो महीने ऐसा करने से दिमाग पुष्ट होगा व स्मरण शक्ति बढ़ेगी. बुद्धि तेज होगी और विवेक शक्ति भी बढ़ेगी.

> बसन्त ऋतु में शरीर की तन्दुरुस्ती के लिये प्रतिदिन ५-७ बादाम की गिरी मिट्टी के बर्तन में भिगोकर रखें. सुबह दांतुन करने के बाद भीगे बादामों का छिलका उतारकर मिश्री- मक्खन या शहद के साथ सेवन करना चाहिए. निरंतर बिना किसी अवरोध के ४० दिनों तक ऐसा करने से शरीर सुंदर व तन्दुरुस्त हो जाता है साथ ही आँखों की रोशनी भी बढ़ती है.

> ये शरीर पानी व हवा पर निर्भर रहता है. अतः प्रतिदिन प्रातःकाल पैदल भ्रमण करना चाहिए या बगीचे की सैर करना चाहिए. इससे बसन्त ऋतु की शुद्ध ताजी हवा आपके शरीर को स्पर्श करेगी. जिससे अनेक बीमारियाँ आपसे दूर रहेंगीं. **'सुबह की हवा-अनेक रोगों की दवा'** काया निरोगी बनेगी. शरीर स्वस्थ व प्रसन्नचित्त हो जायेगा. वैसे तो हमेशा ही प्रातःकाल ३-४ किलोमीटर पैदल सैर करना चाहिए अथवा बसन्त ऋतु के २-३ महीने तो मॉर्निंग वॉक (प्रातः भ्रमण) करना शरीर के लिये अत्यंत जरूरी है.

> प्रतिदिन प्रातःकाल के अलावा रात्रि में सोते समय भी **'सत्नाम साक्षी महामंत्र'** की माला का ७-७ बार जाप करना चाहिए, जिससे मन पवित्र होगा, नींद अच्छी आयेगी एवं बुरे सपने भी नहीं आएँगे.

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

परम शांति के बिना जीवन का वास्तविक सुख संभव नहीं और वह शाश्वत् सत्य और नित्य प्राप्त तत्व से ही संभव है।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित...

बसंत महिमा भजन

ऋतु-ऋतु में हैं रंग साहब का,
बसन्त ऋतु रंगवारी रे ।।

1 सूके तरू भये पत्र अपारा
बन-बन फूले बाग फुलारा ।
फूल रही फुलवारी रे ।।

2 बसन्त ऋतु का देख निज़ारा,
रिल मिल भँवरे करत गुञ्जारा ।
सुगन्ध ले सुखकारी रे ।।

3 बसन्त ऋतु को सब जन गावत,
सुर नर मुनिजन के मन भावत ।
मुझको लागत प्यारी रे ।।

4 बसन्त ऋतु है बहुत रसाली,
कहे टेऊँ भये सन्त सुखाली।
जाऊँ बलि बलिहारी रे।।

बसन्त की ऋतु हैं अति सुन्दर,
देख सभी हर्षाते हैं ।।

1 बसन्त की ऋतु आवत जबहीं,
प्रसन्न होकर पंछी तबहीं ।
रिलमिल मौज मचाते हैं ।।

2 बन-बन में होती हरियाली,
त्रिविधि वायू बहत रसाली ।
फूल सभी खिल जाते हैं ।।

3 भँवरे मन में बहु हर्षावे,
गुल्शन में जा गूंज लगावे ।
सुगन्धि माहिं समाते हैं ।।

4 सन्त हरी का नाम ध्याये,
सत्संग का दीबान लगाये।
कहे टेऊँ गुण गाते हैं ।।

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

कविता :~ ऋतुराज बसन्त की अनोखी छटा

आया ऋतु बसन्तराज । खोला कलियों ने घूंघट आज ।।
सोंधी सोंधी खुशबू महके । बाग बगीचे उपवन फुले ।।
चहुँ दिशि लालिमां छाई । खुशियों के गीत गाई ।।
पुराने पत्र तजने लागे । नव कोंपल खिलने लागे ।।
सरसों पहने पीली साड़ी । नवीन पुष्पों की आई फुलवाड़ी ।।
पक्षियों के कलरव की बहार । कोयल गाये राग मल्हार ।।
शीतल मन्द चले समीर । योगी बैरागी भये गम्भीर ।।
भौरों ने किया मधुर गुंजार । बसंत पर जाये सब बलिहार ।
तितलियों का झुण्ड लहराया । सर्वत्र बागनि में मंडराया ।।
चंदन केसर तिलक लगाये । मानव हृदय बहु अकुलाये ।।
अपूर्व वरदान लिये प्रकृति । फूल रही है सारी सृष्टि ।।
रमणीय दृश्य देख मुनिजन । गाये रहे मधुर गीत कविजन ।।

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

"कविता ~ वसंतोत्सव आगमन"

पतझड़ बीत रहा पीत वर्ण पत्र झड़ रहे
वसंतोत्सव आगमन के शिखर पर चढ़ रहा

नवीन वस्त्रों से सुसज्जित वृक्ष - लताएँ
नई कोपल धारण किये , सुंदर वन में शोभित हो रही

चहुँ दिशी शीतल मन्द - मन्द समीर लहरा रही
अमराइयों में बैठी कोयल की मधुर कूक , पक्षियों का कलरव

नन्हें - नन्हें मधुर स्वर से , भाँति - भाँति गीत सुना रहे
सर्वत्र बगीचों की फुलवाड़ीयाँ दूर - दूर से चमक रही

रंग बिरंगी तितलियाँ बागनि के फूलों पर मँडरा रही
सरसों पीले फूलों की सुंदर ओढ़नी ओढ़ रहे

रंग रंगीले फूलों की हरियाली सुंदरवर्ण से शोभित हो रही
भौरों की टोलियाँ चुन - चुन कुसुम को चूम रही

अपूर्व वरदान लिये प्रकृति सज - धज कर तैयार खड़ी
सम्पूर्ण सृष्टि मुदित मन से , उत्साह उमंग से हृदयांदित कर रही

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जो तत्ववेत्ता महात्मा हैं, वे ब्रह्म के स्वरूप है। उनकी वाणी चाहे किसी भी भाषा में हो वह वेद के समान है और जिज्ञासुओं के भ्रम संशयो को दूर कर उनका उद्धार करती है।

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने दिया होली पर संदेश

आज गुरु घर होरी रे रसिया, होरी रे रसिया..........

सिन्ध प्रदेश की पवित्र धरा धाम! अनेकानेक संत-महापुरुष-फकीरों की जन्म स्थली! सिन्धु नदी का पावन तट, वहाँ का एक छोटा सा सुन्दर खण्डू गाँव, जहाँ अवतरित हुए- श्री प्रेम प्रकाश पंथ के पुरोधा मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! पवित्र व दर्शनीय स्थल!

जिस स्थान पर संत-महापुरुषों का अवतार होता है वह पवित्र स्थल सदैव पूजनीय एवं वन्दनीय हो जाता है, वह भविष्य में 'श्रद्धास्थल' के रूप में विख्यात होता है. कहते हैं जब संत-महात्मा, फकीर अवतार लेते हैं तो वह स्थान-गाँव-देश-मास-दिवस-तिथि-पक्ष और वह घड़ी, पल, समय सभी पवित्र और पूजनीय बन जाते हैं. जिस प्रकार श्री सांई टेऊँराम बाबा का अवतार सिन्ध प्रदेश- खण्डू गाँव-शनिवार-आषाढ़ मास-शुक्ल पक्ष (सिंधी चौथ तिथि) आदि सब पवित्र व वन्दनीय हो गये.

सिन्ध देश के प्रेरणा पुंज सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज पंच दिवसीय होली महोत्सव अपनी जन्मस्थली खण्डू गाँव में ही भक्ति-भाव के साथ मनाते थे. इस उत्सव में सांई टेऊँराम बाबा का अखण्ड भजन व भोजन भण्डारा चलता था. गाँव के सभी नर-नारी सत्संग गंगा में डुबकी लगाकर अपने जीवन को सार्थक बनाते थे.

आज गुरु घर होरी रे रसिया, होरी रे रसिया..........

पाँच दिनों तक चलने वाली सत्संग गंगा का अमृतपान करने पूरा खण्डू गाँव व आस-पास के कस्बो- गाँवों वाले भाग लेते थे. अलौकिक आनन्द! भक्ति के रंग में रंगे सभी भक्तजन! प्रगाढ़ प्रेम की सरिता! संत-महात्माओं का अनोखा संगम! प्रेम, भक्ति, वैराग्य, धर्म-कर्म, ज्ञान- विज्ञान आदि विषयों पर आध्यात्मिक ज्ञान चर्चाएँ! चहुँ ओर आनन्द की बयार! श्रद्धा का केसर! ज्ञान का गुलाल! शुभ गुण रूपी इत्र-अम्बीर! अद्भुत हर्षोल्लास! भक्ति, प्रेम, ज्ञान का अनोखा आलम!

संतों के संग होरी खेलो, पीवो प्रेम प्याला रे
जाँके पीवत होय बहारी,
दिन-दिन बढ़ती जाय खुमारी, होवे मन मतिवाला रे।
श्रद्धा की तुम केसर करिये, इत्र अम्बीर श्रेष्ठ गुण धारिये,
लाओ ज्ञान गुलाला रे।
कहे टेऊँ यह होरी गाये, ब्रह्मानन्द में वृत्ति मिलाये,
पाओ आनन्द विशाला रे।।

महाराजश्री का कथन होता था- संतों के साथ प्रेम रूपी होली खेलें. प्रेम से ही भगवान की प्राप्ति होती है. प्रेम का प्याला बड़ा ही अद्भुत होता है. प्रेम का जानना अर्थात् भगवान को पहचानना! प्रेम खुमारी जिसे एक बार चढ़ जाती है फिर वह आसानी से नहीं उतरती. प्रेम रंग बड़ा ही निराला है. हृदय में जब प्रेम होगा तब भगवानका साकार रूप में दर्शन होगा. **ऐसे ही भक्ति, प्रेम, ज्ञान रूपी रंग में रंग जाना ही संतों के संग होली खेलना है.**

युगपुरूष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज इस पवित्र होली महोत्सव के पावन अवसर पर एक महत्त्वपूर्ण सद्गुण रूपी संदेश देते थे- होली उत्सव के अन्तर्गत पाँचों दिन पूरे गाँव के लोगों में से **कोई भी माँस- मछली, अण्डा एवं मदिरापान का उपयोग नहीं करे.** ऐसा संकल्प पूरे गाँव वालों से करवाते थे और साथ ही प्रतिज्ञा करवाते थे कि **आज के बाद हम कभी भी माँस मदिरा व निषिद्ध पदार्थों का सेवन नहीं करेंगे.** महाराजश्री कि तपस्या-भक्ति का ऐसा प्रभाव होता था कि सत्संग में आये सभी लोग संकल्प लेकर निषिद्ध पदार्थ खाना छोड़ देते थे.

मांस खान से मनुष्य की, होवे बुद्धि मलीन।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से, कर्म-धर्म हो खीन।।
मांस मछली खात जो, सुरा पान से हेत।
ते नर नरके जात है, माता पिता समेत।।

मनुष्य को जीवन भर कभी भी माँस-मछली, शराब का सेवन नहीं करना चाहिये; क्योंकि ये पापकर्म है. इससे मति (बुद्धि) मलीन होती है. सारे पुण्यकर्म क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं और माता-पिता समेत नरक में जाना पड़ता है. अतः हमें ऐसे पापकर्म से बचना चाहिए.

अंत में पूरी सभा को माँस-मछली, अण्डा, मदिरा का उपयोग अपने जीवन में न करने की प्रतिज्ञा करवाते थे. महाराज श्री की ओजस्वी वाणी का ऐसा प्रभाव होता था कि सत्संग में आने वाले सभी लोग दृढ़ संकल्प लेकर इन पदार्थों का सेवन न करने का संकल्प लेते थे. हमें भी गुरु महाराज जी की यह शिक्षा आत्मसात् करनी चाहिए. इन निषिद्ध पदार्थों का सेवन करने वाले इस लेख को पढ़कर संकल्प करें कि आज के बाद हम इन पदार्थों का सेवन नहीं करेंगे.

इस प्रकार प्रेम व ज्ञान के सरोवर रूपी होली महोत्सव खण्डू गाँव में श्रद्धाभाव के साथ मनाया जाता था. हम सब भी गुरुदेव भगवान के ज्ञान का शुभ संकल्प लेकर होली महापर्व के सत्त्वगुण के रंग में रंग जायें. भक्ति में भावित और प्रेम के सरोवर में ज्ञान की डुबकी लगाएँ. -प्रेमप्रकाशी संत श्री मोनूराम जी, श्री अमरापुर स्थान,जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिसको गुरु कृपा का कण मिल जाता है, उसकी समस्त क्रियाएँ बदल जाती हैं।

होली विशेष

होली के रंग–साांई टेऊँराम के संग

टेऊँराम बाबा चोला मेरा रंग दे, चोला मेरा रंग दे–
ओ खण्डू वाले, ओ खण्डू वाले– चोला मेरा रंग दे........
जिस रंग में तेरा अमरापुर रंगा है,
अमरापुर रंगा है–बड़ा सोहणा सजा है
ऐसी रंगी रंग दे– चोला मेरा रंग दे..................
जिस रंग में तेरे–सर्वानन्द रंगे हैं,
सर्वानन्द रंगे हैं– तेरे साथ ही सजे हैं
ऐसी रंगी रंग दे– चोला मेरा रंग दे..................
जिस रंग में संत रंगे हैं,
संत रंगे हैं– तेरी भक्ति में भरे हैं
ऐसी रंगी रंग दे– चोला मेरा रंग दे..................
टेऊँराम बाबा चोला मेरा रंग दे,
चोला मेरा रंग दे– ओ खण्डू वाले,
ओ टण्डे वाले– ओ जयपुर वाले..................

आज गुरु घर होली मनाएँ

राग बसन्त

तर्ज : ऋतु-ऋतु में रंग..........
आज गुरु घर होली मनाएँ– मन में खुशियाँ छाये रे।।
1.प्रेम रंग में घुल मिल जाएँ– भाव भक्ति का रंग लगाये,
मन होया मतवारी रे।।
2. ज्ञान–सरोवर डुबकी लगाए– पूर्व जन्म के भाग जगाये,
होय गंग बहारी रे।।
3.इत्र अंबीर ज्ञान गुलाला– चढ़ जाये हो मन मतवाला,
हृदय भयी होरी रे।।
4. कूंगू–केसर तिलक लगाए– गुरुवर को हम शीश निवाये,
कटे पाप दुखारी रे।।

होलीअ जा डींह आया रे

थलु :भाउर भेनरु खुशियूं मनायो, होलीअ जा डींह आया रे
1.बारनि पंहिंजूं ठाहे टोलियूं, भरे रंगनि जूं हलिया झोलियूं,
डाढा रंग लगाया रे,
2.खूबु रंगनि जूं भरे पिचिकारियूं, हणनि पाण में नर ऐं नारियूं
सभ जा अंग भिजाया रे,
3.बार बुढा ऐं जोभन वारा, हिक बिए खे रंग हणनि प्यारा,
डाढा मंडल मचाया रे,
4.वाह सभागी होली आयी, कहे टेऊँ जंहिं प्रीति वधाई,
मन जा मेल मिलाया रे, भाऊर भेनरु ....

–प्रेमकाशी साधक, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

भगवान के नाम से तृप्ति

श्रीरामचन्द्र जी के राज्याभिषेक को बहुत समय हो चुका था. माता जानकी जी के मन में प्रभु भक्त हनुमान के प्रति वात्सल्य उमड़ा. एक दिन उन्होंने कहा, हनुमान! कल मैं तुम्हें अपने हाथों से बनाकर भोजन कराऊँगी.

माँ सीताजी के ये वचन सुनकर हनुमानजी का हृदय आनन्द से भर गया. उनकी प्रसन्नता का क्या बयान किया जाय. जगन्माता स्वयं भोजन बनाकर खिलाये, ऐसा सौभाग्य किसे मिलता है? दूसरे दिन बड़े स्नेह और उल्लास से श्री जनकनन्दिनी ने नाना प्रकार के व्यंजन बनाये और हनुमानजी को आसन पर बैठाकर भोजन परोसने लगी. माता स्नेह से परोसे तो पुत्र को क्षुधा (भूख) न भी लगी हो तो लग जाय. हनुमानजी ने भावविभोर होकर भोजन प्रारम्भ किया. जो कुछ थाली में पड़ता, एक ही बार में मुख में चला जाता. थोड़ी ही देर में अयोध्या सम्राट के रसोईघर के व्यंजन समाप्त होने को आये परन्तु हनुमानजी का हाथ तो शिथिल हो ही नहीं रहा था. यह देख जानकी जी को चिन्ता होने लगी.

अंत में सीताजी ने लक्ष्मणजी को बुलाया और अपनी कठिनाई बताई. लक्ष्मण बोले- 'ये रुद्र के अंशावतार हैं' इनको भला इस प्रकार तृप्त कौन कर सकता है. लक्ष्मणजी ने एक तुलसीदल पर चन्दन से राम लिखकर हनुमानजी के भोजन पात्र में डाल दिया. वह तुलसीदल (पत्ता) मुख में जाते ही हनुमानजी को तृप्ति मिली तथा आनन्द से नृत्य करते हुए उनका मन राम-रस में रम गया.

-साधक, अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी
भगवान के कृतघ्न नहीं बनें। उनकी कृपा के लिए बार–बार उनके आभार मानें। उन्होंने आपको जो कुछ भी दिया है उस पर प्रसन्नचित्त होकर रहें।

30 मार्च (रविवार) भगवान झूलेलाल जयंती

जागृति संदेश-विचारणीय

भगवान श्री झूलेलाल का अवतार क्यों ?

हर वर्ष की तरह आ गया सिन्धी समाज का महापर्व चेटीचण्ड ! पूरे भारत वर्ष में जोर-शोर से तैयारियां-चेटीचण्ड कार्यक्रमों के मध्य होंगे विभिन्न धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम!

क्या, कभी सोचा? इष्टदेव का जन्म दिवस या पर्व-उत्सव क्यों मनाते हैं? क्या कारण था अवतार लेने का? विचार करके देखो. क्या हम जो ये पर्व मना रहे हैं, उनसे भगवान प्रसन्न हो जाएँगे? जिस कारण उन्होंने अवतार लिया था. क्या हम उस धर्म को निभा रहे हैं? बड़ा ही चिन्तनीय विषय है.

हर मनुष्य जानता है कि हमें अपने धर्म पर स्थित रहना चाहिए. धर्म के अनुसार चलना चाहिए. धर्म अनुसार जाति व संस्कृति का पालन करना चाहिए, हमें अपनी मातृभाषा सिंधी भाषा में बोलना चाहिए. पर कोई करता नहीं. क्यों? क्योंकि उसे अपनी जाति धर्म से प्रेम नहीं. मात्र दिखावे के लिये बड़े-बड़े आयोजन कर लेगा, त्योहार-उत्सव पर्व आदि मना लेगा. परन्तु उसके इतिहास व महत्त्व को जानने का प्रयास ही नहीं करता.

परम श्रद्धेय सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज चेटीचण्ड महापर्व पर एक बात का विशेष जोर देते थे. वे सभी से पूछते थे कि भगवान झूलेलाल ने अवतार क्यों लिया? सभी का कहना होता था- हिन्दू जाति धर्म की रक्षा हेतु. हिन्दू धर्म क्या? चोटी व जनेऊ (हिन्दू धर्म की रक्षा के दो मुख्य चिन्ह). तो भगवान ने अवतार लिया हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु अर्थात् चोटी व जनेऊ की रक्षा हेतु!

पहले तो अत्याचारी मिर्खशाह द्वारा धर्म पतित किया जा रहा था. पर अब हमारे ऊपर कौन अत्याचार कर रहा है? कौन हमारे जनेऊ व चोटी काट रहे हैं. विचार करो. हम स्वयं ही अपने धर्म की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं तो पर्व-उत्सव मनाने से क्या लाभ. सत्य क्या है? विचार करना.

इतिहास देखने पर मालूम पड़ता है कि **वरुणावतार भगवान श्री झूलेलाल** ने हिन्दुओं की धर्म रक्षार्थ अवतार लिया था. मुस्लमानों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहे थे. अपने धर्म में मिलाने के लिए उनकी चोटी व जनेऊ को काट कर धर्म से पतित किया जा रहा था. हमारा धर्म नष्ट कर रहे थे. तब सभी हिन्दुओं ने अपने धर्म की रक्षा हेतु भगवान से करुण प्रार्थना की- हे भगवान्! हमारी रक्षा करो, हमारे धर्म की रक्षा करो. हमें इस अत्याचार से बचाओ. हे प्रभु! कृपा करो! तब **वरुणावतार भगवान श्री झूलेलाल सांई जी** ने इस धरा धाम पर अवतार धारण किया. सनातन धर्म की रक्षा की, अत्याचार से बचाया, धर्म को पुनः स्थापित किया. दूसरे के धर्म में जाने से हमारी रक्षा की. जिस प्रकार गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बताया गया है-

स्वधर्मे निधनं श्रेयः पर धर्मो भयावहः।

अपने धर्म में तो मरना भी कल्याण कारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है. **जैसे मछली का पानी ही जीवन है वैसे ही धर्म भी मनुष्य का जीवन है. अतः सदैव अपने धर्म पर स्थिर रहना चाहिए.** अब विचार करना होगा कि क्या हम अपने धर्म का पालन कर रहे हैं? क्या हमने जनेऊ व शिखा धारण कर रखी है? नहीं! तो फिर हम अपने इष्टदेव का अपमान कर रहे हैं. जिन्होंने आपकी करुण पुकार सुनकर, कष्ट सह करके अवतार लिया. दुःख-कष्ट दूर किया. पर हम अब उस धर्म को निभा नहीं रहे.

पहले तो दूसरों के द्वारा अत्याचार हो रहा था, धर्म से विमुक्त किया जा रहा था. पर अब! हमारे ऊपर कौन अत्याचार कर रहा है? हम स्वतंत्र होते हुए भी परतंत्र हैं. अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं. स्वयं अपने आपको पंगु बना रहे हैं, अत्याचार कर रहे हैं. स्वयं अपने धर्म से पतित हो रहे हैं. अतः अपने धर्म को (जनेऊ-चोटी को) बचाना होगा. सभी हिंदुओं को चोटी व जनेऊ धारण की पहल करनी होगी । सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भी अपनी वाणी में कहा है कि-

धर्म अपने मांहि हरदम प्यार कर नटना नहीं।
सीस जावे जान दे पर धर्म से हटना नहीं।।

धर्म के खातिर ही कई संतों, ऋषियों, मुनियों और वीरों ने अपने प्राणों तक की आहुतियाँ दे दी थीं. धर्म रक्षा के खातिर ही उस परब्रह्म परमात्मा को बार-बार इस भारत भूमि पर अवतरित होना पड़ता है. अतः मनुष्य को चाहे कितनी भी भयंकर यातनाएँ क्यों न भुगतनी पड़ें, पर अपने धर्म पर सदा स्थित रहना चाहिए. स्वधर्म को परधर्म से उत्कृष्ट ही समझना चाहिए. स्वधर्म पालन हो जाए तो भी अपने को महान भाग्यशाली समझना चाहिए.

अतः अपने धर्म की रक्षा हेतु हिन्दू भाईयों को सचेत करो. सनातन धर्म की रक्षा पहले स्वयं करो । अपने धर्म को कायम रखने के लिए जनेऊ व चोटी (शिखा) धारण करो, अपनी मातृभाषा सिन्धी भाषा में बोलो. अपने बच्चों को सुसंस्कार का ज्ञान दो एवं अन्य सभी को इस पुण्य कार्य के लिये प्रेरित करो. तभी अपना धर्म बचेगा एवं अपने इष्टदेव भगवान श्री झूलेलाल जी को प्रसन्न कर सकोगे. फिर चेटीचण्ड महापर्व मनाना हमारा सार्थक और सफल होगा.

-प्रेमप्रकाशी संत श्री मोनूराम जी,
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

गलत तरीके से पैसा कमाना या दूसरों को दुःख देकर पैसा कमाना- ये भी एक तरह की हिंसा है।

सिंधी समाज के इष्ट आराध्य वरुणावतार भगवान श्री झूलेलाल

परम्परानुसार हमारे धर्मप्राण भारतवर्ष में अनेकानेक पर्व, उत्सव, तीज, त्यौहार आदि बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। प्रत्येक पर्व-उत्सव के पीछे उसकी एक पृष्ठभूमि या इतिहास होता है, जिसके अन्तर्गत उस पर्व-उत्सव को मनाया जाता है। प्रत्येक कौम-जाति अपने धर्म के अनुसार स्वयं का पर्व बड़े श्रद्धा, भक्ति, आस्था, उत्साह, उमंग के साथ मनाती है. उसी प्रकार सिन्धी समुदाय का भी एक मुख्य महापर्व है-चेटीचण्ड ! जो कि पूरे विश्व भर में बड़े आनन्द उत्साह, श्रद्धा व भक्ति-भाव के साथ मनाया जाता है।

इस पर्व के इष्टदेव हैं वरुणावतार भगवान श्री झूलेलाल साईं ! जिन्हें जिन्दहपीर, लाल साईं, अमरलाल, उडेरोलाल के नाम से भी जाना जाता है।

चेटीचण्ड विक्रम संवत् का पवित्र शुभारम्भ दिवस है. 'चेटीचण्ड' में **'चेटी –चैत्रमास'** अर्थात् नव सम्वत्सर का आरंभ होता है। **'चण्ड –चन्द्रतिथि'** इस दिन सिन्धी समाज के लोग अपने इष्टदेव ज्योति स्वरूप भगवान श्री झूलेलाल की आराधना, पूजा-अर्चना श्रद्धा-भाव के साथ करते हैं और अपनी आस्था का अर्ध्य चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। इस दिन सिन्धी समाज के लोग प्रसन्नचित होकर **'आयोलाल–झूलेलाल'** का उद्घोष कर एक दूसरे को भगवान झूलेलाल के जन्म व नववर्ष की बधाईयाँ देते हैं। साथ ही ज्योति जलाकर, बहराणे साहब के रूप में उसकी पूजा-अर्चना आराधना करके सिंधी लोकनृत्य डांडिया व मटका नृत्य करके भगवान झूलेलाल जयंती का महोत्सव बड़े ही भक्ति-भाव से मनाते हैं। इस चेटीचण्ड महापर्व की पृष्ठभूमि के इतिहास की ओर ध्यान केन्द्रित करना भी आवश्यक है। जैसा कि भगवान श्रीकृष्ण की श्रीमद्भगवद्गीता में घोषणा है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

अर्थात् 'जब-जब धर्म का ह्रास होने लगता है, अधर्म और पाप बढ़ जाता है, तब-तब मैं स्वयं किसी न किसी रूप में अवतार लेकर पापियों का नाश कर धर्म की रक्षा करता हूँ।

चेटीचंड पर विशेष 30 मार्च 2025

इसी प्रकार जब सिन्ध प्रदेश के ठट्ठा नामक नगर में एक अत्याचारी मिरख बादशाह नामक शासक का राज्य था। वह हिन्दुओं के प्रति अतिक्रूर था। वह हिन्दुओं को मुसलमान बनाना चाहता था, जिससे उसे जन्नत प्राप्त हो सके। उसने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि यदि हिन्दू लोग मुसलमान नहीं बनेंगे तो उन्हें सख्त सजा दी जावेगी। इस दृष्टिकोण से हिन्दुओं पर कई प्रकार के अत्याचार किये जाने लगे, यहाँ तक कि हिन्दू धर्म की निशानी शिखा (चोटी) काटकर जनेऊ उतरवाये जाने लगे। हिन्दू धर्म की जाति को नष्ट कर स्वयं के धर्म में मिलाने का प्रयास किया जाने लगा।

शास्त्र कहते हैं कि अपने धर्म से कभी भी च्युत नहीं होना चाहिए। अपना धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है. जैसा कि गीता जी में एवं सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी अमृतवाणी में कहते हैं-

धर्म अपने मांहि हरदम प्यार कर नटना नहीं।
सीस जावे जान दे पर, धर्म से हटना नहीं ।।

अपने धर्म में स्थित रहने पर जान भी गँवानी पड़े तो घबराना नहीं चाहिए। अर्थात् अपने धर्म को ही श्रेष्ठ मानकर अपने धर्म से ही स्नेह-प्यार करना चाहिए। साथ ही अपनी जाति व मातृभाषा को महत्व देना चाहिए।

अत्याचारों से पीड़ित त्रस्त हिन्दू त्राहिमाम कर उठे। मिरखशाह के जुल्मों से तंग होकर सिन्धी हिन्दू लोग सिन्धु नदी के पावन तट पर आये और लगातार तीन दिनों तक ध्यान लगाकर वरुण देवता की पूजा-अर्चना व स्तुति करने लगे।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश विवाह आदि शुभ अवसरों पर मांस और शराब का प्रयोग करना महापाप है।

भक्तों के वश में रहे, कह टेऊँ भगवान।
योग क्षेम तांका करे, सुख सम्पति मान ॥

लोगों के हृदय की करुणा भरी पुकार भगवान ने सुनी एवं आकाश की गर्जनाओं के साथ आकाशवाणी हुई हिन्दुओं ! तुम लोग निर्भय एवं निश्चिन्त हो जाओ। मिरख बादशाह तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकेगा। मैं शीघ्र ही तुम्हारी रक्षार्थ नसरपुर में अपने भक्त रतनराय के घर माता देवकी के गर्भ से जन्म लूँगा।

यह आकाशवाणी सुनकर सभी हिन्दू गद्‌गद्‌ हो उठे और भगवान की जय-जयकार करते घर लौट आये। समय अनुसार विक्रम सम्वत्‌ १००७, चैत्र के महीने शुक्रवार के शुभ दिन सायंकाल के समय प्रभु परमात्मा ने भक्त रतनराय के घर माता देवकी के गर्भ से सुन्दर बालक के रूप में जन्म लिया, जिनका नामकरण उदयचन्द के रूप में किया गया। सिन्ध प्रदेश के नागरिकों को जब मालूम पड़ा तो वे आनन्द विभोर होकर झूमने लगे। इन्द्र देवता भी प्रभु परमात्मा के अवतरित होने की खुशी में नन्हीं नन्हीं बूंदों के रूप में पुष्पों की वर्षा करने लगे। समयानुसार उदयचन्द बाल लीला कर बड़े होने लगे। उनकी अद्‌भुत लीलाएँ दिन-प्रतिदिन पूरे सिन्ध प्रदेश के घर-घर में चर्चित हो रही थीं।

धीरे-धीरे इस तेजस्वी बालक की बात मिरख बादशाह के कानों तक पहुँची एवं वह नित्य प्रति भयानक सपने देखने लगा। अब हिन्दुओं को विश्वास हो गया कि स्वयं भगवान उनके रक्षक बनकर भू-लोक पर अवतरित हुए हैं। बाल्यावस्था से ही भगवान झूलेलाल के अलौकिक लीलाओं की घटनाएँ होने लगीं जिनको देख-सुनकर मिरख बादशाह भयभीत हो गया उससे विश्वास हो गया कि धरती पर अवश्य ही भगवान अवतार लेकर आए है और हार मानकर स्वयं भगवान श्री झूलेलाल की शरण में आ गया !

तब भगवान श्री झूलेलालजी ने बादशाह को समझाया कि सारी सृष्टि प्रभु ने उत्पन्न की है। हिन्दू-मुसलमान एक ही हैं। मुसलमान जिसे खुदा कहते हैं, हिन्दू उसे ईश्वर कहते हैं। अर्थात्‌ मंजिल सभी की एक ही है। अब बादशाह की समझ में सब कुछ आ गया। इस प्रकार अधर्म समाप्त होकर धर्म की जय हुई।

इस धरा धाम पर भगवान श्री भगवान श्री झूलेलाल साईं जी ने अनेक अलोकिक लीलाएँ की एवं लोगों को सतउपदेश देकर उनका कल्याण किया। हिंदू धर्म की रक्षा कर सनातन धर्म की पताका फहराई ! सम्वत्‌ १०२० में वरुणावतार भगवान श्री झूलेलाल भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी को अचानक जल समाधि लेकर अर्न्तध्यान हो गये।

सिन्धी समुदाय की शौर्य-गाथा अभी से ही नहीं, अपितु अनादि काल से चली आ रही है। जैसा कि नाम से विख्यात है। इतिहासकारों को भी मानना पड़ा कि सिन्धु घाटी की सभ्यता, जिनकी हस्तलिखित शिल्प कृतियाँ जो खुदाई द्वारा मोअन जो दड़ो, हड़प्पा के रूप में दुनिया के सामने आई, अर्थात्‌ कितनी न प्राचीन है, यह सिन्धु घाटी की सभ्यता !

अर्वाचीन ग्रंथों के अनुसार **'सिन्धु नदी'** (जिसका वर्णन वेदों में भी किया गया है) सबसे प्राचीन तो **'सिन्धु नदी'** को ही माना गया है। वेदों की रचना भी सिन्धु नदी के पावन तट पर की गई थी। श्रीरामचरित मानस में भी सिन्ध शब्द का अनेक बार उल्लेख मिलता है! महाभारत काल में भी सिन्धु नरेश का वर्णन किया गया है। राष्ट्रगान में 'पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा..' आदि सिन्ध की महत्त्वता को दर्शाते हैं। सृष्टि प्रारम्भ में सर्वप्रथम सिन्ध ही था। कालान्तर में सिन्ध से ही हिन्द शब्द प्रतिपादित हुआ। भागवत, रामायण, महाभारत व अनेक वेद ग्रंथों में जगह-जगह पर सिन्ध शब्द को महत्त्व दिया गया है। सिन्धु सभ्यता अनादि काल से चली आ रही प्राचीन परम्परा व सनातन संस्कृति है। ज्योतिषीय गणना का ग्रंथ भी निर्णय सिन्धु ही है।

सिन्ध प्रदेश के अनेकानेक संत महात्माओं ने भी सिन्धु नदी के पावन तट पर ही जन्म लिया है। जैसे- भगवान श्री झूलेलाल साईं जी, स्वामी आसूराम जी महाराज, स्वामी लीलाशाहजी, भगत कंवरराम, साईं वसणशाह और प्रेम प्रकाश पंथ के आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आदि संत-महात्मा-दर्वेश-फकीर भी इसी सिन्धु नदी के पवित्र तट पर अवतरित हुए हैं। तब से चली आ रही ये प्राचीन सिन्धु सभ्यता की सनातन संस्कृति आज तक प्रचलित है। जो कि सिन्धी सभ्यता के नाम से सुविख्यात है। इसी सिन्धी समुदाय की परम्परा को कायम रखने के लिये मनाया जाता है- **प्रत्येक वर्ष महापर्व चेटीचण्ड झूलेलाल जयंती, सिन्धियत दिवस !**

सद्‌गुरु सर्वानन्द सन्देश

संसार भी एक भूल भुलैया है। इसमें सत्त्व, रज और तम इन गुणों से उत्पन्न होने वाली वृत्तियाँ, जो बहुत घुमाव-फिराव वाली गलियाँ हैं।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

वरुणावतार भगवान झूलेलाल

यह उडेरोलाल 'वरुण देवता' के अवतार हैं. जिस प्रकार से भगवान श्री रामचन्द्र और भगवान श्री कृष्णचन्द्र धर्म की रक्षा के लिए अवतार धारण कर आए थे, उसी प्रकार श्री 'उडेरोलाल' भी धर्म की रक्षा हेतु अवतार धारण कर आए थे. जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब सच्चिदानन्द घन परिपूर्ण परमात्मा अवतार धारण कर धर्म की रक्षा करते हैं.

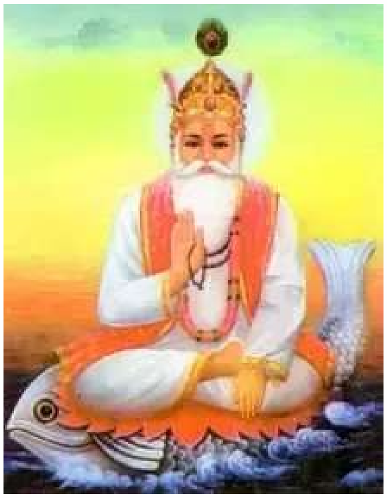

भजन राग विहाग

थलु : पाप सां पापिनि जडहिं संसार खे लाचारु कयो।
यज्ञ जप तप दान पूजा ऐं धर्म खां धार कयो।।
1. पाठ-पूजा नेमु व्रतु ऐं शुभु कर्मु संघारु कयो।
वेद विद्या देव मन्दिर जो घणो तिरस्कारु कयो।।
2. गांइ ब्राह्मण जे मथां पिणि तेग सों तिनि वारु कयो।
अति कुनीती दुष्कर्म सां हरि जगह आजारु कयो।।
3. तडहिं निर्गुण रूप मां हरि सगुणु ऐं साकारु थियो।
मनुष चोले में अची तंहिं प्रेम जो परचारु कयो।।
4. सन्त ब्राह्मण जे रख्या लइ हथनि में हथियारु खंयो।
कहे टेऊँ दुष्ट मारे धर्म जो जयकारु कयो।।

उडेरोलाल भी धर्म की रक्षा के लिए अवतार धारण कर आए थे.

(पवित्र पुस्तक सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत के तृतीय व अंतिम भाग के पृष्ठ 90 व 95 से)

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा भगवान झूलेलाल की स्तुति

सचनि जो दूलहु दरियाह शाहु, आहे राजा रांवल राउ। ज़ाहिरु पीरु ज़मीन ते सो मालिकु बेपरिवाहु।। टेक।।
पारब्रह्म मां जलु थ्यो पैदा तंहिंमां थी धरती, धरितीअ मां थ्या गुल फुल मेवा बाग़ बण्या बस्ती।
बागु घुमी गुल्ज़ारु डिठोसें अजबु चढ़ी मस्ती, चोरासी लख जूण्युनि खे सो सांवलु डे थो साहु।।1।।
दरियाह शह जे दर जा आहिनि चारि वरण पूज़ारी, देवी देवा कनि था सेवा श्रद्धा सां सद्वारी।
दुनिया जे सभ देशनि जा था पूज़िनि नर ऐं नारी, बारे जोत्यूं गुल फुल चाढ़िनि चित में धारे चाहु।।2।।
सवें हज़ारें अचनि सुवाली सभ जा काज करे, पलव प्रेम सां पाइनि जेके तिनिजी झोल भरे।
आशवंदिन जीं आश पुजाए दुखड़ा दर्द हरे, बुडलनि जा थो बेड़ा तारे हीणनि जो हमिराहु।।3।।
निर्मलु नामु तहींजो जेके चाहु रखीं चवंदा, जै जै झूले लालु उडेरो लाति इहा लवंदा।
दूलह जे कृपा सां सेई पारि वञीं पवंदा, कहे टेऊँ सो कामिलु आहे बेवाहनि जो वाहु।।4।।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी सत्संग मुक्ति का द्वार है। इसलिए प्रतिदिन कुछ समय बचाकर सत्संग में जायें।

30 मार्च से 07 अप्रेल नवरात्रा विशेष

दुर्गाष्टमी

देवी माँ की आराधना का विशेष महत्व

नवरात्रा में महाष्टमी के उपवास का विशेष महत्व बताया गया है, इस दिन असंख्य लोग देवी माँ की विशेष आराधना करते हैं. ऐसी मान्यता है कि इस दिन माँ की आराधना करने से बच्चे दीर्घायु होते हैं. अष्टमी को आठवीं दुर्गा 'महागौरी' की पूजा अर्चना की जाती है. चूंकि अष्टम दुर्गा को पार्वती के रूप में देखते हुए अन्नपूर्णा भी कहा जाता है जो कि भारत भूमि की शस्य यानी खेती बाड़ी जैसी सम्पदा की रक्षक है. महागौरी ने अपनी तपस्या के द्वारा गौर वर्ण प्राप्त किया था और उसे अन्नपूर्णा की सिद्धि भी प्राप्त हुई. दुर्गा अष्टमी के दिन विशेष रूप से छोटी कन्याओं को बुलाकर भोजन कराया जाता है. माना जाता है कि छोटी कन्याओं में माँ दुर्गा का अंश होता है. इस दिन कन्याओं को घर बुलाकर सबसे पहले उनके पाँव धोए जाते हैं फिर उनकी पूजा करके उन्हें भोजन में हलवा, छोले, पुड़ी इत्यादि प्रसाद दिया जाता है. उसके बाद उन्हें कुछ उपहार देकर चरणस्पर्श करके उनको ससम्मान विदा किया जाता है.

पौराणिक कथा : माँ ने पार्वती रूप में भगवान शिव को पति-रूप में प्राप्त करने के लिए बड़ी कठोर तपस्या की थी. तपस्या के कारण उनका शरीर काला पड़ गया. जब भगवान शिव ने इनके शरीर को गंगा के पवित्र जल से रगड़कर धोया, तब उनका शरीर विद्युत प्रभा के समान अत्यंत कांतिमान-गौर हो उठा. तभी से इनका नाम 'महागौरी' पड़ा.

नवरात्रि में क्यों जलाई जाती है- अखंड ज्योत !

हिंदू धर्म में नवरात्रियों का महत्व सर्वविदित है, देवी माँ के ९ दिन तक उपवास रखकर माता की आराधना की जाती है. नवरात्रि के समय में घरों और मंदिरों में अखंड ज्योति जलाई जाती है, जो लगातार ९ दिनों तक जलती रहती है. नवरात्रि के समय अखंड ज्योत जलाने से घर में समृद्धि आती है, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है. घर में दीपक जलाने से घर में सुख-शांति बनी रहती है साथ ही घर के पितरों को भी शांति मिलती है.

जो लोग नवरात्रि के समय घी या सरसों के तेल का अखंड दीप जलाते हैं, उन्हें तुरंत लाभ मिलता है और उनके सभी कार्य पूरे हो जाते हैं.

नवरात्रि में घी या तेल का अखण्ड दीप जलाने से दिमाग में कभी भी नकारात्मक सोच हावी नहीं होती है. चित्त खुश और शांत रहता है.

नवरात्रा में अखंड दीप जलाना स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है; क्योंकि घी और कपूर की महक से इंसान की श्वास और नर्वस सिस्टम बढ़िया रहता है. घर में सुगंधित दीपक की पवित्र महक से हृदय प्रसन्न रहता है.

परमात्मा का वास

एक युवक घर-गृहस्थी से दुखी होकर अपने परिवार को छोड़कर निकल पड़ा. वह एक महात्मा के पास पहुँचा और बोला- 'मैं अपना परिवार छोड़कर आ गया हूँ. अब मैं माया-मोह के बन्धन में नहीं फँसना चाहता हूँ. मैं परमात्मा की तलाश करना चाहता हूँ. कृपया मुझे मार्गदर्शन दें.' इस पर महात्मा क्रोधित होते हुए बोले- 'मूर्ख, परमात्मा तो तुम्हारे घर में बैठे हुए हैं, जिन्हें तू छोड़कर आ गया है. जब तक तू उनकी सेवा नहीं करेगा, तेरा कल्याण नहीं हो सकता. जा, पहले परिवार को संभाल, उनके प्रति अपने कर्तव्य पूरे कर. अध्यात्म भगोड़ों की नहीं, शूरवीरों की मदद करता है. परिवार में रहते हुए भी तेरी साधना पूरी हो सकती है. यदि त्याग ही करना है, तो अपने भीतर के विकारों का त्याग कर. बुरे विचारों का त्याग कर.'

अपने कर्तव्यों से भागने से ईश्वर की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

दिन का प्रकाश-उजाला देखकर कोई भी बता देता है कि सूर्य का उदय हुआ है, लेकिन सूर्य क्या है ? जिससे हमको इतना लाभ-फायदा मिलता है। यह सब तो शास्त्र पढ़कर उसका चिन्तन मनन करने पर ही मिल सकता है।

श्रीरामनवमी

रामनवमी 06 अप्रेल 2025 विशेष

श्रीरामनवमी सारे जगत् के लिये सौभाग्य का दिन है; क्योंकि अखिल विश्वपति सच्चिदानन्दघन श्री भगवान् इसी दिन दुर्दान्त रावण के अत्याचार से पीड़ित पृथ्वी को सुखी करने और सनातन धर्म की मर्यादा की स्थापना करने के लिये मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के रूप में प्रकट हुए थे. श्रीराम केवल हिन्दुओं के ही राम नहीं हैं, वे अखिल विश्व के प्राणाराम हैं. भगवान् श्रीराम और भगवान् श्रीकृष्ण को केवल हिन्दू जाति की सम्पत्ति मानना उनके गुणों को घटाना है, असीम को सीमाबद्ध करना है. विश्व-चराचर में आत्मरूप से नित्य रमण करने वाले और स्वयं ही विश्व-चराचर के रूप में प्रतिभासित सर्वव्यापी सर्वान्तर्यामीस्वरूप नारायण किसी एक देश या व्यक्ति की ही वस्तु कैसे हो सकते हैं? वे सबके हैं, सबमें हैं, सबके साथ सदा संयुक्त हैं और सर्वमय हैं. जो कोई भी जीव उनकी आदर्श मर्यादा-लीला- उनके पुण्यचरित्र का श्रद्धापूर्वक गान, श्रवण और अनुकरण करता है, वह पवित्र हृदय होकर परम सुख को प्राप्त कर सकता है. श्रीराम के समान आदर्श पुरुष, आदर्श धर्मात्मा, आदर्श नरपति, आदर्श मित्र, आदर्श भाई, आदर्श पुत्र, आदर्श गुरु, आदर्श शिष्य, आदर्श पति, आदर्श स्वामी, आदर्श सेवक, आदर्श वीर, आदर्श दयालु, आदर्श शरणागत- वत्सल, आदर्श तपस्वी, आदर्श सत्यवादी, आदर्श दृढ़- प्रतिज्ञ, तथा आदर्श संयमी और कौन हुआ? जगत् के इतिहास में श्रीराम की तुलना में एक श्रीराम ही हैं. साक्षात् परम पुरुष परमात्मा होने पर भी श्रीराम ने जीवों को सत्पथ पर आरूढ़ कराने के लिये ऐसी आदर्श लीलाएँ कीं, जिनका अनुकरण सभी लोग सुखपूर्वक कर सकते हैं. उन्हीं हमारे श्रीराम का पुण्य जन्मदिवस चैत्र शुक्ल नवमी है. इस सुअवसर पर सभी लोगों को, श्रीराम-जन्म का पुण्योत्सव मनाना चाहिये. इस उत्सव का प्रधान उद्देश्य होना चाहिये श्रीराम को प्रसन्न करना और श्रीराम के आदर्श गुणों का अपने में विकास कर श्रीरामकृपा प्राप्त करने का अधिकारी बनना. अतएव विशेष ध्यान श्रीराम के आदर्श चरित्र के अनुकरण पर ही रखना चाहिये. श्रीराम जन्मोत्सव की विधि इस प्रकार की जा सकती है–

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल नवमी तक नौ दिन उत्सव मनाया जाय.
2. प्रत्येक मनुष्य (स्त्री, पुरुष, बालक) प्रतिदिन अपनी रुचि के अनुसार श्रीराम के दो अक्षर, पँचाक्षर या चार अक्षर ('राम', 'रामाय नमः' या 'सीताराम') मन्त्र का नियमपूर्वक जप करे. पहले दिन नियम कर ले, उसी के अनुसार नौ दिन तक करते रहना चाहिये. कम-से-कम १०८ मन्त्र का जप रोज होना चाहिये. उत्साह और समय मिले तो नौ दिनों में नौ लाख नाम-जप कर सकते हैं.
3. रोज सुबह या शाम को कुछ समय तक नियमित रूप से श्रीराम-नाम का कीर्तन हो.
4. श्रीरामायण का नौ दिनों में पूरा पाठ किया जाय. वाल्मीकि, अध्यात्म यो श्रीगोसाईंजीकृत श्रीरामचरित मानस इनमें से अपनी रुचि के अनुसार किसी भी रामायण का पाठ कर सकते हैं. जो ऐसा न कर सकें वे कुछ समय तक रोज रामायण पढ़ें या सुनें.
5. माता-पिता के चरणों में रोज प्रातः प्रणाम करें.
6. यथासाध्य खूब सावधानी से सत्यभाषण करें (सच बोलें).
7. घर में माता-पिता, भाई-भौजाई, स्वामी, स्त्री, नौकर, मालिक सभी आपस में प्रेम रखें, अपने अच्छे बर्ताव से सबको प्रसन्न रखें, किसी से झगड़ा न करें.
8. ब्रह्मचर्य का पालन करें.
9. श्रीरामनवमी का व्रत करें.

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

साक्षी चेतन परमात्मा सब में एक ही है। इसलिए किसी का भी बुरा नहीं सोचना चाहिए। बल्कि जो आप की बुराई सोचे या करे, उसके साथ भी भलाई ही करनी चाहिए।

10. रामनवमी के दिन श्रीराम जन्मोत्सव मनाया जाय, सभाएँ की जायँ, जिनमें रामायण का प्रवचन और रामायण सम्बन्धी शिक्षाप्रद व्याख्यान हों. कहने और सुनने वाले अपने अंदर श्रीरामके-से गुण आयें- इसके लिये दृढ़ निश्चय करें और श्रीराम से प्रार्थना करें.
11. आपस के मेल में बाधा न आती हो तो श्रीराम की सवारी का जुलूस नगर कीर्तन के साथ निकाला जाय.

इन ग्यारह बातों में से जिनसे जितनी बातों का पालन हो सके, उतना करने की चेष्टा करें. श्रीराम- नाम का जप, कीर्तन, माता-पिता आदि गुरुजनों के चरणों में प्रणाम, सबसे प्रेम, ब्रह्मचर्य का अधिक-से- अधिक पालन, सत्य-भाषण आदि बातें तो जीवन भर पालन करने योग्य हैं. इनका अभ्यास अधिक-से- अधिक बढ़ाना चाहिये. श्रीराम की भक्ति के लिये इन्हीं व्रतों की आवश्यकता है.

श्रीराम की मातृ-पितृ भक्ति

श्रीराम की मातृ-पितृ-भक्ति अलौकिक है. रामजी माता-पिता के अनन्य भक्त हैं. रामजी का ऐसा नियम था कि नित्य माता-पिता की वन्दना करना और सदा माता-पिता की आज्ञा में रहना. कितने ही लोग ऐसे होते हैं कि मन्दिर में दर्शन करने जाते हैं, ठाकुरजी की वन्दना करते हैं परन्तु घर के अन्दर वृद्ध माता-पिता को प्रणाम करते ही नहीं. एक भाई से पूछा कि तुम हमारे पाँव छूते हो परन्तु घर में बूढ़ी माँ के पाँव छूते हो कि नहीं? उसने जवाब दिया कि महाराज, पहले पाँव छूता था परन्तु बी.ए. पास किया तबसे छोड़ दिया.

वह शिक्षा किस काम की जिसको प्राप्त करने के उपरान्त माता-पिता का वन्दन करने में, माता-पिता की सेवा करने में संकोच हो? इससे तो यह मूर्ख रहे तो क्या बुराई? विद्वान तो ऐसा होना चाहिए कि प्रभु में प्रेम जागे, धर्म में विश्वास बढ़े, माता-पिता की, समाज की, देश की सेवा करने की भावना जगे. सबमें भगवद्भाव दृढ़ हो. अरे, जो माता-पिता की सेवा करते नहीं, वे समाज की और देश की क्या सेवा कर सकते हैं? वे भगवान की क्या सेवा कर सकते हैं? जो विद्या माँ-बाप की वन्दना करने में शर्म जगावे वह विद्या नहीं. बाप की सम्पत्ति लेने में शर्म या संकोच होता नहीं किंतु वन्दन करने में संकोच होता है, शर्म आती है. कितने ही तो बाप से कहते हैं 'बंगला हमारे नाम कर देना, नहीं तो पीछे बहुत उपाधि होती है' बाप का सब कुछ लेते हैं किंतु बाप की सेवा करते नहीं.

कितने ही लोग माता-पिता का वन्दन तो करते हैं परन्तु उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते. इस वन्दन का कोई अर्थ नहीं. वन्दन का अर्थ तो यह है कि 'मैं तुम्हारे अधीन हूँ, अपना मस्तक और हाथ मैं तुमको समर्पण करता हूँ, तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही मैं कार्य करूँगा, तुम्हारी आज्ञा में रहूँगा, मैं तुम्हारा सेवक हूँ.' माथा है बुद्धि का प्रतीक और हाथ हैं क्रियाशक्ति के प्रतीक. मस्तक में बुद्धि रहती है, हाथ से क्रिया होती है. वन्दन अर्थात् इन सबका समर्पण.

माता-पिता की सेवा, महान् पुण्य है. अनेक यज्ञों को करने वाले को जो पुण्य नहीं मिलता है वह वृद्ध माता-पिता की सेवा करने वाली सन्तान को अनायास ही प्राप्त हो जाता है. माता-पिता की अनन्य भाव से सेवा करने वाले के ऊपर परमात्मा बहुत कृपा करते हैं, इनके घर प्रत्यक्ष पधारते हैं. पुण्डरीक की कथा तुम जानते हो. पुण्डरीक ने प्रभु की सेवा नहीं की थी. पुण्डरीक स्मरण श्रीकृष्ण का करता था और सेवा माता-पिता की करता था. पुण्डरीक भगवान के दर्शन करने नहीं गया, पुण्डरीक के दर्शन करने भगवान स्वयं उनके घर पधारे थे. पुण्डरीक की मातृ-पितृ भक्ति से प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष द्वारिकानाथ पुण्डरीक के घर आये थे. पुण्डरीक उस समय माता-पिता की सेवा कर रहे थे. प्रभु ने उनसे कहा कि 'मैं आया हूँ'. पुण्डरीक ने कहा- 'महाराज, मैं आपकी वन्दना करता हूँ. इस समय मैं माता-पिता की सेवा में व्यस्त हूँ. माता-पिता की सेवा के फलस्वरूप आप मिले हो, इसलिए माता-पिता की सेवा प्रथम है. आप तनिक बाहर खड़े रहो.'

माता-पिता की सेवा करने वाले में इतनी शक्ति आती है कि वह ईश्वर को भी खड़े रहने के लिए कह सकता है.'

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

जब आप अज्ञान की नींद से जागेंगे तो यह सारा जगत स्वप्न की तरह हो जायेगा।

चैत्र मेला दिवस जयपुर

11 अप्रैल 2025

चैत्र मेला

पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान का महापर्व

मेलों और त्योंहारों का जीवन में वही स्थान होता है जो मरुस्थलों में मरुउद्यानों का. ये मेले और त्योहार, ये उत्सव और पर्व जीवन की नीरसता और निर्जीवता को दूर कर उसमें आनन्द और उल्लास, उत्साह और स्फूर्ति भरते हैं और उसमें नवीनता और ताजगी के रंग बिखेर कर उसे सरस और इन्द्रधनुषी रखते हैं और उन्हें जीवन्त और जाग्रत रखने में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं.

मेले का शाब्दिक अर्थ है बहुत से लोगों का उद्देश्य सहित एक स्थान पर एकत्रित होना. पर याद रखिए कि वह भीड़ से बिल्कुल भिन्न, किसी लक्ष्य को लेकर लोगों का एक ही स्थान पर एकत्रित होना होता है. आध्यात्मिक और धार्मिक मेलों में सब लोगों का एक ही लक्ष्य, एक ही उद्देश्य, एक ही अभिलाषा, एक ही आकांक्षा होती है और वह है महापुरुषों के परम पावन जीवन से, विश्व की महान विभूतियों के सुन्दर चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर अपना आत्म कल्याण करना और अपने जीवन का नव-निर्माण करना. **मेले का अर्थ ही है, मेल-मिलाप, हृदय का हृदय से मिलन और उसके उच्चतम शिखर पर आत्मा का परमात्मा से मिलन !**

इस मिलन का आधार स्तम्भ है पावन प्रेम, निःस्वार्थ प्रेम, शुच और सुन्दर प्रेम. **इसी उद्देश्य को लेकर श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने 'चैत्र मेले' की स्थापना की थी.** चैत्र मेले का शुभारम्भ चैत्र मास शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने स्वयं अपने पावन कर कमलों से किया था.

सिंध में यह मेला श्री अमरापुर दरबार टंडोआदम में प्रतिवर्ष श्रद्धा, उत्साह, आनन्द और उल्लास के साथ मनाया जाता था. इस मेले रूपी ब्रह्मयज्ञ में भाग लेने के लिए सिंध प्रदेश के कोने-कोने से प्रेमी सत्संगी, गुरुमुख, जिज्ञासु और मुमुक्षु आया करते थे. न केवल सिंध परन्तु पंजाब, राजस्थान, गुजरात एवं अन्य प्रदेशों से भी भक्त टंडोआदम पहुँचकर सतूगुरु महाराज जी के श्रीचरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते थे. प्रेम प्रकाश पंथ के संत महात्माओं के अलावा अन्य स्थानों से संत महात्मा, गायक, भजनीक, कवि-शायर, पंडित, विद्वान, दार्शनिक एवं विचारक इस मेले में सम्मिलित होते थे. सेवाधारी और स्वयंसेवक भी तन, मन, धन से मेले में सेवा कर अपना जीवन सफल बनाते थे.

सब तत्त्ववेत्ता संत महात्मा एक तथ्य को समान रूप से स्वीकार करते हैं कि जीवन की दो ही परम आवश्यकताएँ हैं- भजन और भोजन! संत महात्माओं और हम संसारी जीवों के सोच विचार में बस एक ही अन्तर है और वह है- हम संसारी जीव भोजन को प्राथमिकता देते हैं जबकि सन्त महात्मा भजन को ही प्रधानता देते हैं. संत महात्मा यह मानकर चलते हैं कि जिस परमात्मा ने बच्चे के जन्म से पहले ही माता के स्तनों में दूध भरकर उसके आहार की व्यवस्था की है, जो विश्वम्भर है, जो चींटी को कण और हाथी को मण आहार देता है, उस परमपिता परमात्मा का भजन कर, उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर, उसका गुणगान कर, फिर बाँट कर प्रसाद रूप में भोजन पाना चाहिए. परन्तु ज्ञानी और दूरदर्शी महात्मा भी भोजन की महत्ता को समझते हैं, **'अन्न भगवान'** की अनिवार्यता को जानते हैं. वे इस तथ्य से भलीभाँति परिचित हैं कि **'भूखे भजन न होइ गोपाला'**. एक सन्त ने तो यहाँ तक कह डाला है कि एक भूखे इन्सान को रोटी न देकर उससे ज्ञान विज्ञान, ब्रह्म वेदान्त, आत्मा परमात्मा की बातें करना, उस दरिद्रनारायण का अपमान करना ही है. सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा शुभारम्भ किये गये चैत्र मेले के दिनों में भजन की विस्तुत और भोजन में इतना सुंदर संतुलन और सामंजस्य होता है कि शरीर और आत्मा दोनों तृप्त और संतुष्ट हो जाते हैं। ध्यान रहे इस पवित्र मेले के अवसर पर कई परम उदारी सद्गृहस्थ आते हैं जो भण्डारे करवाते हैं. एक तो नाना प्रकार के षट्रस भोजन तिस पर उन्हें पंक्तिबध्द बैठकर ईश्वर प्रार्थना के पश्चात् प्रसाद रूप में पाना ऐसा आनन्द देता है, जो आनन्द कृत्रिम, अशुचि, छीना झपटी वाले पाँच सितारा होटलों में कदापि नहीं मिल सकता. उस प्रेम सरस, स्नेहसिक्त भोजन का स्वाद ही अद्वितीय है, अवर्णनीय है.

चैत्र मेला जो अब श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

भूखों को अपनी पसंद का खाना खिलाएँ, नंगो को अपनी पसंद के वस्त्र दें। दान में बेकार वस्तुएँ मत दें।

वर्तमान स्वरूप में मनाया जाता है, वह बड़ा ही भव्य लगता है. मेले के शुभारम्भ होने से काफी पहले ही सब प्रेमियों सत्संगियों, संतों महात्माओं को निमंत्रण-पत्र भेजे जाते हैं. इस वर्ष भी प्रेम प्रकाशियों का महाकुम्भ सदृश पर्व १०४ वाँ चैत्र मेला २८ जनवरी से १ फरवरी २०२५ तक प्रयागराज में महाकुम्भ पर्व के अंतर्गत गंगा-यमुना-सरस्वती की त्रिवेणी संगम के तट पर प्रेम प्रकाश मण्डल की छावनी अन्नक्षेत्र में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया.

इस चैत्र मेले के परम पावन पर्व पर संत समागम का एक ऐसा दिव्य दृश्य उपस्थित होता है, ऐसी ज्ञान-गंगा प्रवाहित होती है जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है. ज्ञान-गंगा से भी बढ़कर प्रेम का ऐसा प्रवाह बहता है, स्नेह की ऐसी सरिता उमड़ पड़ती है, जिसमें ज्ञान ध्यान सब बह जाते हैं, और दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है. मेले के अवसर पर भाईचारे, सेवा, त्याग और सत्संग का अलौकिक दृश्य दृष्टिगोचर होता है.

चैत्र मेले का शुभारम्भ पूजा-अर्चना, हवन-यज्ञ व उसके बाद प्रेम प्रकाश पंथ के ध्वजा-आरोहण, सत्गुरु महाराज जी की आरती, वन्दन व पवित्र ग्रन्थों श्रीमद्भगवद्-गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठारम्भ से होता है. पाँचों दिन सत्संग एवं अखण्ड भण्डारा चलता है. जिसमें सभी श्रद्धालु प्रसाद ग्रहण कर अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं.

इसी दिन सायं ४ बजे एक भव्यतम विशाल **'शोभा-यात्रा'** आरम्भ होती है. इस शोभा-यात्रा में सद्गुरु महाराज की आदमकद भव्य मूर्तियाँ रखी जाती हैं. मेले में नाना प्रकार की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक झाँकियां प्रस्तुत की जाती हैं. भिन्न-भिन्न भजन मण्डलियाँ गाती बजाती नृत्य करती हुई- जिसमें **सिंधी लोकनृत्य 'छेज'** प्रधान होती है, दिखाई पड़ती हैं. शोभा-यात्रा श्री अमरापुर दरबार से आरम्भ होकर शहर के मुख्य मार्गों से गुजरती हुई वापस श्री अमरापुर दरबार पर शाम ७ बजे के पश्चात् पहुँचती है. शोभा-यात्रा का हार्दिक स्वागत करने के लिए विभिन्न स्थानों पर **'स्वागत द्वार'** बनाये जाते हैं. कई प्रेमी और भक्त सद्गुरु महाराज के विभिन्न मनमोहक स्वरूपों को एवं वर्तमान पीठाधीश्वर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संतों को नमन कर उनका आशीर्वाद लेते हैं. शहर में जगह- जगह ध्वनि विस्तारक यन्त्रों पर सद्गुरु महाराज जी के भजन प्रसारित होते रहते हैं, विभिन्न प्रकार के खाद्य व सुमधुर पेय पदार्थों को प्रसाद रूप में निरंतर वितरित किया जाता है. भजन मण्डलियों में महिलाओं, माताओं, बहिनों में भी विशेष उत्साह और हर्षोल्लास दिखाई देता है. जगह-जगह शोभा-यात्रा पर पुष्प वर्षा की जाती है या गुलाब जल की बौछार की जाती है.

भजन मण्डलियों में अलौकिक मौज-मस्ती का आलम रहता है. बीच-बीच में श्री गुरु महाराज के जयघोष से आकाश गूँजता रहता है. कई सेवाधारी ऐसे अलौकिक दृश्यों को कैमरा में उतारकर भविष्य में प्रेमप्रकाशी सत्संगियों को सत्प्रेरणा प्रदान करते हैं. आधुनिक युग में तो इंटरनेट के माध्यम से लाईव तस्वीरें-वीडियोज़् के प्रसारण से देश-दुनिया के प्रेमी जो इस मेले में किसी कारण से सम्मिलित नहीं हो पाते हैं, अपने कार्य स्थल पर ही आनन्द लेते हैं.

पचंदिवसीय सत्संग सरोवर में श्रद्धालु सत्गुरु व ईश्वर को समर्पित होने के कारण चिन्तारहित और चिन्तन से परिपूर्ण हो जाते हैं. इस उत्सव का समापन पाँचवें दिन प्रातः ७ बजे विश्व शान्ति की कामना कर पल्लव पार्थना से सम्पन्न किया जाता है. मेले के पश्चात् प्रेमी आत्म-चिन्तन कर अपने जीवन को सफल और सार्थक बनाने का सुन्दर सद्प्रयास करते हैं. चैत्र मेले में प्रेमियों की अभिलाषित शुभ-इच्छाएँ भी आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की कृपा से पूरी होती हैं.

–श्री अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड़, जयपुर

चेट जो मेलो

अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं, गीत गुरनि जा गडिजी गायूं।

1. अमरापुर तीर्थ स्थल आ, ज्ञान जे गंगा जो हिति जल आ,
सत्नाम साक्षी, टुबियूं लगायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
2. सत्गुरु टेऊँराम लासानी, राह डेखारियाऊं रब जी रूहानी,
सत्नाम साक्षी जपियूं जपायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
3. सत्गुरु सर्वानन्द सूंहारा, ज्ञान भक्तिअ जा हुआ भंडारा,
अचो त तिनि जो ध्यान लगायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
4. कर्मयोगी स्वामी शान्तिप्रकाश, प्रेमियुनि जी कयाऊं पूरी आश,
अचो त तिनि जी सिख्या हंडायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
5. स्वामी हरिदासराम नाम जपायो, सत्नाम साक्षी पाठ पढ़ायो,
असीं बि नाम सां नींहुं लगायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
6. स्वामी भगतप्रकाश यश फहिलायो, प्यार डई जिनि पंहिंजो बणायो,
'आशा' हार हीरनि जा पायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
7. किथां किथां जा प्रेमी आया, तिनि जा थींदा लाया सजाया,
'आशा' खीर में खंडु मिलायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सात्विक, राजस और तामस तीन प्रकार की इच्छाएँ मन में उत्पन्न होती हैं। इन तीनों का त्याग करना है। इनमें से कोई भी इच्छा मन में रह गई तब तक शान्ति प्राप्त होने वाली नहीं।

ग्वालियर में स्वामी गणेशानन्दजी महाराज का 124 वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

ग्वालियर। परम श्रद्धेय संत शिरोमणी पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का १२४वां जन्मोत्सव दिनांक २३ से २७ फरवरी २०२५ तक परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता एवं पूज्यनीय सन्त मण्डल की उपस्थिति में बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया गया।

पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज के १२४वें जयंती महोत्सव के प्रथम दिन २३ फरवरी को प्रातः ५:३० से ७:३० बजे तक हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी निकाली गई जिसमें शामिल सैकड़ो भक्तों ने 'हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे' का सामूहिक गायन करते हुए नगर को हरिरस के अमृत से पावन कर दिया. इसके बाद पंच दिवसीय श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद्भगवद गीता के पाठारम्भ से मेले का शुभारम्भ हुआ. सायंकाल को ४ से ७.१५ बजे तक सत्संग हुआ। परम पूज्य गुरुदेव संत मण्डली सहित डबरा से चलकर रात्रि ६ बजे लश्कर ग्वालियर के गाढ़वे की गोठ स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम पहुँचे तो बड़ी संख्या में उपस्थित श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के प्रेमी हर्षोल्लासित होकर सद्गुरु टेऊँराम भगवान का उच्च स्वर से जयघोष करने लगे. संत हरिओमलाल जी ने गुरुदेव भगवान का हार्दिक स्वागत–अभिनन्दन किया .

२४ फरवरी को प्रातःकालीन सत्संग सभा में जब गुरु महाराज जी की मंत्रमुग्ध करती मनमोहक छवि के दर्शन उपस्थित प्रेमियों को हुए तो महाराजश्री के अभिनन्दन में खचाखच भरा सत्संग सभालय हर्षित होकर करताल करने लगा. प्रतिदिन प्रातः ८ से १० व सायंकाल ४ से ७:१५ बजे तक सत्संग ज्ञानगंगा अमृत का लगभग ढाई हजार की संख्या में भक्तों ने रसास्वादन लिया एवं अपने मन हृदय को अमृत वचनों से रोशन किया.

सोमवार को नेत्रहीन आश्रम की बालिकाओं का कन्या भोज का कार्यक्रम का आयोजन किया गया । जिसमें २६ प्रज्ञाचक्षु बालिकाओं को पूज्य महाराजश्री द्वारा यथायोग्य भेंटादि देकर भोजन–भण्डारा कराया गया। बालिकाओं द्वारा भगवान कृष्ण के सुन्दर भजन भी गाये गये।

मंगलवार को प्रातःकाल सत्संग सभा के पश्चात् २८ बटुकों को सामूहिक उपनयन संस्कार से पं. जीतू महाराज द्वारा दीक्षित किया गया. संतों द्वारा उपरोक्त बच्चों को उज्ज्वल जीवन जीने की युक्तियाँ बताकर पाखर पहनाकर आशीर्वाद दिया गया तत्पश्चात् बटुकों के परिजनों के लिये भण्डारें का आयोजन भी किया गया।

26 फरवरी– महाशिवरात्रि का पावन पर्व व बाबा स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का १२४वाँ अवतरण दिवस! इस पावन अवसर पर प्रातः ५ से ६ बजे तक 'हरीओम नमः

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश
आत्म ज्ञान के सिवाय कर्म और उपासना से भ्रम और भय दूर नहीं होंगे, उनके दूर हुए बिना मुक्ति नहीं होगी।

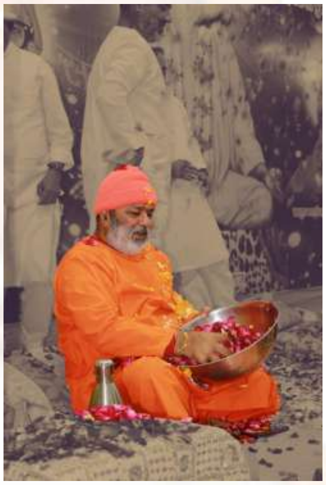

शिवाय, शिव हरीओम नमः शिवाय' महासंकीर्तन की मस्ती से मुदित हुए बड़ी संख्या में भक्तगण. प्रातः ६:३० से ८:१५ बजे तक हवन-यज्ञ करके देवताओं को महोत्सव में शामिल होने के लिए आह्वान किया गया. हवन के पश्चात् पूज्य महाराजश्री द्वारा संत हरीओमलाल जी को गेरु वस्त्र धारण करवाकर सन्यास प्रदान किया गया । ८:१५ से १० बजे तक सत्संग ज्ञानयज्ञ में संगत के हृदय ज्ञानज्योति से प्रकाशित हुए.

नगर की जनता की ओर से पूर्व पार्षद श्री सुधीर गुप्ता द्वारा पूज्य गुरु महाराज जी का स्वागत किया गया.

ग्वालियर नगरी के पूज्य सिंध हिंदू जनरल पंचायत, पूज्य कंधकोट पंचायत, भारतीय सिंधु सभा एवं सिंधु वेलफेयर सोसायटी द्वारा भी गुरु महाराज जी का अभिनन्दन शहर के सिंधी समाज की ओर से किया गया. सम्मान- अभिनन्दन समारोह के बाद श्री प्रेम- प्रकाशी ध्वजावंदन का परम मनोरम कार्यक्रम अत्यंत आनन्दोल्लास से सम्पन्न हुआ.

सायंकालीन सभा में बाबा गणेशानन्द जी महाराज के १२४वें जयंती दिवस पर दीपोज्ज्वलन भी हुआ.

२६ फरवरी को ही रात्रि ८:०० से ९.३० बजे तक सद्गुरु महाराज जी संतों के सानिध्य में श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, श्री प्रेम प्रकाश महिला सेवा मण्डली, श्री अमरापुर नवयुवक मण्डली, श्री प्रेमप्रकाशी बालिका मण्डली द्वारा भजन अन्ताक्षरी का आनन्द लिया गया. सभी सेवाधारियों को गुरु महाराज जी द्वारा आशीष स्वरूप खर्ची दी गई.

अंतिम दिवस सत्संग के पूर्व स्वामी शान्तिप्रकाश नेत्र चिकित्सालय में पहुँचकर सद्गुरु महाराज जी द्वारा अस्पताल के समस्त सेवाधारियों को मंगल आशीष से मालामाल किया गया. तत्पश्चात् सत्संग प्रवचन के बाद स्वामी शान्तिप्रकाश चिकित्सालय के सेवाभावी चिकित्सकों के हृदय गुरु बाबा के पावन कर कमलों से मंगल आशीष स्वरूप पखर प्रसाद पाकर आनन्द विभोर हो उठे.

इसके बाद पाठों का भोग पारायण संतों द्वारा हुआ-आरती पल्लव के पश्चात् पूज्य गुरु महाराज जी संत मण्डल के साथ प्रातः १२ बजे दिल्ली के लिए प्रस्थान कर गए.

जन्मोत्सव मेले के अवसर परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के साथ पूज्य स्वामी मनोहरलाल जी महाराज, संत हरिओमलाल जी, संत मोनूराम जी, संत शंभूलाल जी, संत नरेशलाल जी, संत भोलाराम जी, संत लखीराम जी, संत प्रतापलालजी, संत छोटूराम जी, संत कमल (गांधीधाम), संत ढालूराम जी, संत कमल (जयपुर) के प्रवचनों से हजारों की संख्या में संगत ने लाभ लिया. इसी के साथ देश-विदेश के अन्य प्रेमीगणों ने भी मेले में शामिल होकर अपना जीवन सफल किया ।

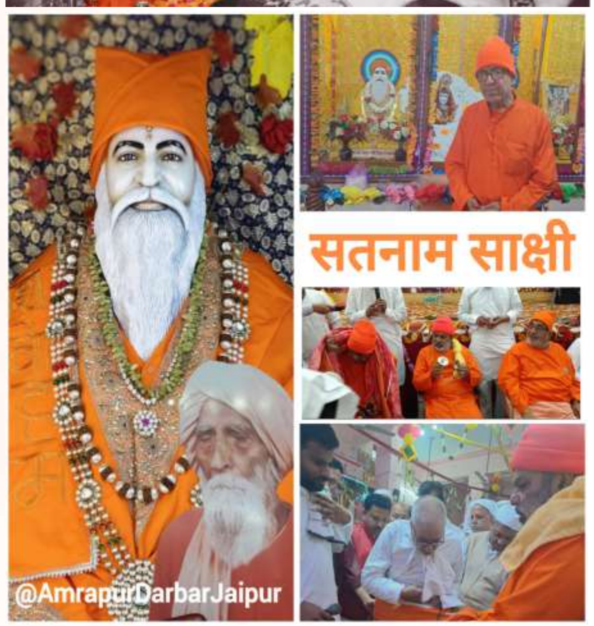

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

काल की गति बहुत धीमी है, पर उसका शब्द इतना बड़ा भारी है, जो बहुत दूर-दूर तक सुनने में आता है। इतना होने पर भी सब लोग उसको सुन नहीं सकते हैं।

माया मोह से विमुक्ति की ओर एक बड़ा कदम

२६ फरवरी २०२५ (बुधवार) पावन शिवरात्रि, प्रेम प्रकाश मण्डल एवं विशेषकर, ग्वालियर में निवासरत् प्रेम प्रकाशियों के लिये परम सौभाग्य एवं अविस्मरणीय क्षण थे, जब इस परम पावन दिवस पर अन्नत विभूषित, अन्तर्मना, मंगलमूर्ति प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की दिव्यतम पुष्प वाटिका के दिव्य पुष्प, ज्ञान, गुरूभक्ति एवं वैराग्य सम्पन्न विरक्त शिरोमणी पूज्य बाबा स्वामी गणेशानन्द जी महाराज के अत्यंत प्रिय परिकर (सेवक) संत हरीओमलाल जी को प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष, परमादरणीय पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा पूज्यपाद श्रद्धेय संत स्वामी मनोहर लाल महाराज की मंगलमयी उपस्थित में गालव ऋषि की तपोभूमि ग्वालियर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर सन्यास की दीक्षा दी गयी।

पूज्य संत हरीओम लाल जी बाल्यकाल से ही संस्कारों की प्रतिष्ठित पीठ गुरूकुल अर्थात गुरू आश्रम पर निवासरत थे जहां भक्तिमति पूज्या दादी लाजवंती देवी जी ने पुत्रवत् पालन कर सुसंस्कारों से संस्कारित कर सेवा पथ की राह दिखाकर परम पूज्य बाबा श्री गणेशानन्द जी महाराज की सेवा सुश्रुषा करने का उत्तर दायित्व सौंपा।

तत्समय शांत, शिवस्वरूप बाबा गणेशानन्द जी महाराज जी, जिनकी त्यागवृति उच्च श्रेणी की थी, लोकेषणा, वित्तेषणा से दूर एकान्त भाव में प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर पर आनन्द मग्न रहते थे। संग का रंग अवश्यभावी है। पूज्य संत हरीओम लाल जी शास्त्र सम्मत सेवा विधान से भलीभांति परिचित थे कि सेवा कोई क्रिया नहीं है। सेवक को वही आचरण करना चाहिये जिससे उसका स्वामी संतुष्ट हो अर्थात् अपने सेव्य के अनुकूल व अनुरूप हो जाना। पूज्य संत हरीओम लाल जी ने भी भक्ति मति पूज्या दादी लाजवन्ती जी के सन्निधि में अपने सुख का ध्यान न रखते हुए दास्य भाव से प्राणप्रण से दिन रात परम पूज्य बाबा स्वामी गणेशानन्द जी महाराज की सेवा परायण सेवक की भाति सेवा सुश्रुषा करते हुए उनके जीवन दर्शन को उनके वचनामृतों को, उनकी आज्ञाओं को, उनके परामर्श को अपने जीवन में उतारा परमपूज्य बाबा श्री गणेशानन्द जी महाराज के इस नश्वर देह का परित्याग कर आचार्य चरणों में लीन होने के पश्चात् पूज्य संत हरीओमलाल जी गत २५ वर्षों से प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में रहकर ज्ञानार्जन कर रहे हैं।

हमने पूज्यसंतों के श्रीमुख से सुना है कि ''संत जब देह में होते है तो उनकी कृपा जितनी बहती है, संतो की कृपा उस चोले को छोड़कर, जब वे भगवान के साथ पूर्णरूपेण एक हो जाते है, तब वह (कृपा) सागर के रूप में उमड़ने लग जाती है।'' सत्य कहें तो उस दिन अर्थात् २६ फरवरी २०२५ को आचार्य प्रवर पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं परम पूज्य गुरूजनों की कृपा का ऐसा सागर उमड़ा जिसके फलस्वरूप ऐसे सुमंगल संयोग एक तो तीर्थराज प्रयाग की पुण्यधरा पर संगम तट पर महाकुम्भ २०२५ का अंतिम अमृत स्नान, दूसरा महाशिवरात्रि तीसरा वीतराग पूज्य बाबा गणेशानन्द जी महाराज का १२५ वां प्राकट्य अर्थात जन्म दिवस जैसे त्रयमंगल अवसरों की संगममयी मंगलवेला में प्रातः काल प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद् गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा परम श्रद्धेय पूज्य स्वामी मनोहरलाल जी महाराज एवं संत मण्डल की उपस्थित में परम पूज्य आचार्य प्रवर पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज तपोमूर्ति पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज करूणामूर्ति पूज्य सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज एवं ज्ञानमूर्ति पूज्य सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज के विग्रहों के सम्मुख शिखा छेदन कर सन्यास की दीक्षा देकर गेरूआ वस्त्र धारण कराये।

सद्गुरू शान्तिप्रकाश अमृतवाणी — प्रभु को प्रेम व श्रद्धा से याद करें तो वे निश्चय ही आपकी देखरेख करेंगे, आपकी सुरक्षा करेंगे।

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम डबरा वार्षिकोत्सव की झलकियां

सद्‌गुरु हरिदासराम वचनावली

सन्त की कृपा एवं पूर्ण गुरु की दया दृष्टि जब तक नहीं होती तब तक परमार्थ की बातें सहज समझ में आने वाली नहीं।

पावन प्रसंग

हर स्थिति में रहें प्रसन्न

एक समय ये तीनों संत महापुरुष पंढरपुर में स्थित विट्ठलनाथ भगवान के दर्शन करने पहुँचते हैं. तीनों भगवान् का धन्यवाद कर रहे हैं और हर स्थिति परिस्थिति में भगवान् के प्रति कृतज्ञ भाव रखकर प्रसन्नचित्त हो रहे हैं–

(1) दर्शन में हृदय पिघलता है. एकनाथ महाराज को ऐसा लगा कि मेरे ऊपर भगवान् ने जैसी कृपा की है, ऐसी कृपा जगत् में किसी भी जीव के ऊपर नहीं की है. मेरे ऊपर भगवान् की बहुत कृपा है.

एकनाथ महाराज के घर में जो धर्मपत्नी है, वह बहुत लायक है– **'मेरी पत्नी कोई स्त्री नहीं है, मेरी पत्नी कोई सन्त है–** ऐसा लगता है. मुझे समझा करके पाप करने से रोकती है. कभी-कभी मुझे क्रोध आ जाता है. मेरी पत्नी मुझे समझाती है– क्रोध क्यों करते हो– क्रोध न करो, भगवान् का स्मरण करो. घर का विचार छोड़ दो. मैं घर सँभालूँगी. आप दिन भर भगवान् की भक्ति करो. मेरे भगवान् आप हो. मैं आपकी भक्ति करूँगी.' मेरी पत्नी मुझे समझा करके पाप करने से रोकती है. भक्ति में साथ देती है. पत्नी बहुत लायक है, इसलिये मैं भगवान् की भक्ति करता हूँ. भगवान् ने ऐसी कृपा की है कि मुझे घर में ही सत्संग दिया है.

(2) एकनाथ महाराज के पीछे तुकाराम महाराज खड़े थे. **तुकाराम महाराज के घर में जो पत्नी थी, वह बहुत प्रतिकूल थी. महाराज को बहुत त्रास देती थी. रोज घर में झगड़ा करती थी.** महाराज बड़े शान्त थे, अति सरल थे. तुकाराम महाराज श्रीविट्ठलनाथ जी का दर्शन करते हैं. दर्शन के समय आँख में आँसू आ गये– घर में बहुत त्रास है. तुकाराम महाराज ने विचार किया– मेरे ऊपर भगवान् की बहुत कृपा है, इसलिये भगवान् ने मुझे ऐसी प्रतिकूल पत्नी दी है. ये तो मेरे भगवान् जानते हैं– तुकाराम को पत्नी सुख दे तो तुकाराम पत्नी के पीछे पड़ेगा– मुझे भूल जायगा. तुकाराम को पत्नी त्रास दे तो उसका मन संसार से छूट जायगा– मेरी भक्ति करेगा. इसलिये भगवान् ने जानबूझ करके यही किया है. **मेरी पत्नी बहुत प्रतिकूल है, मुझे त्रास देती है– यही भगवान् की कृपा है.** पत्नी मुझे त्रास देती है, इसलिये मैं घर को– संसार को भूल गया हूँ.

महाराज के चरित्र में लिखा है– घर में वे जाते ही नहीं थे. घर के बाहर एक बड़ा पर्वत था, वहीं जाकर दिनभर भक्ति करते थे. घर में जायँ तो पत्नी बहुत झगड़ा करती थी– बहुत त्रास देती थी. उसका स्वभाव ही ऐसा था. भगवान् ने जो किया, अच्छा ही किया. मेरे भगवान् जो कुछ करते हैं, उसी में जीव का कल्याण है. जीव बुरा कर सकता है, ईश्वर बुरा नहीं कर सकता. मेरे भगवान् मंगलमय हैं. भगवान् ने जो किया है– बहुत योग्य है, मेरे ऊपर बहुत कृपा है. पत्नी बहुत लायक होती तो उसके पीछे मैं पड़ा रहता. पत्नी मुझे त्रास देती है, इसलिये मेरा मन संसार से हट गया है. अब मैं भगवान् के पीछे पड़ा हूँ– संसार में सार नहीं है. अर्थात् भगवान् की मेरे ऊपर अपार कृपा है.

(3) तुकाराम महाराज के पीछे नरसी मेहता खड़े थे. नरसी मेहता की पत्नी का मरण हो गया था. मेहता जी विट्ठलनाथ जी का दर्शन करते हैं. दर्शन में आनन्द हुआ है– **मेरे भगवान् ने बहुत अच्छा किया, मेरी पत्नी का मरण हो गया. बहुत अच्छा हुआ.** मेरे पीछे वह रहती तो कदाचित् अन्तकाल में मुझे पत्नी का स्मरण होता. पत्नी का मरण हुआ– बहुत अच्छा हुआ. भगवान् से कहते हैं– 'आपने बहुत कृपा की है. अब घर में कहने सुनने वाला कोई रहा नहीं है. आप और मैं– हम दोनों मजा करेंगे, आनन्द में रहेंगे. मैं सदैव भगवान् का नाम जपा करूँगा.'

भगवान् शिव को राम नाम है प्रिय

भगवान् शंकर का 'राम' नाम पर इतना स्नेह है कि वे मुर्दे की भस्म अपने शरीर पर लगाते हैं. कोई एक आदमी मर गया, लोग उसे श्मशान ले जा रहे थे और **'राम-नाम सत् है'** ऐसा उच्चारण कर रहे थे. भगवान शंकर ने देखा कि यह कोई भक्त है जो इसके प्रभाव से ले जाने वाले **'राम'** नाम बोल रहे हैं. बड़ी अच्छी बात है, वे उनके साथ में हो गये. **'राम'** नाम की ध्वनि सुने तो **'राम'** नाम के प्रेमी साथ हो ही जायँ. जैसे– पैसों की बात सुनकर पैसों के लोभी उधर खिंच जाते हैं, सोने की बात सुनते ही सोने के लोभी के मन में आती है कि हमें भी सोना मिले और गहना बनवायें, इसी प्रकार भगवान् शंकर का मन भी **'राम'** नाम सुनकर उन लोगों की तरफ खिंच गया.

अब लोगों ने मुर्दे को श्मशान में ले जाकर जला दिया और पीछे जब अपने-अपने घर लौटने लगे तो भगवान्

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जब तक मन में भ्रम है तब तक यह मनुष्य दु:खी होता रहता है। जब ज्ञान प्राप्त होने के कारण उसका भ्रम नष्ट हो जाता है तब यह जीव सुखी होता है ।

शंकर ने सोचा- 'क्या बात है? ये आदमी तो वे-के-वे ही हैं, परन्तु नाम कोई लेता नहीं.' उनके मन में आया कि उस मुर्दे में ही करामात थी, उस कारण सब लोग **'राम नाम'** ले रहे थे. वह मुर्दा कितना पवित्र होगा. भगवान् शंकर ने श्मशान में जाकर देखा, मुर्दा तो जलकर राख हो गया. इसलिये उन्होंने उस मुर्दे की भस्म अपने शरीर में लगा ली और वहाँ ही रहने लगे. अतः राख में **'राम'** और मुर्दे में 'म' इस तरह **'राम'** हो गया. **'राम'** नाम उन्हें बहुत प्यारा लगता है. **'राम'** नाम सुनकर वे खुश हो जाते हैं, प्रसन्न हो जाते हैं. इसलिये मुर्दे की राख अपने अंगों में लगाते हैं. ऐसे हैं देवाधिदेव महादेव! भोलेनाथ बाबा!

अपनों की चोट

एक सुनार था! उसकी दुकान से मिली हुई एक लुहार की दुकान थी! सुनार जब काम करता, उसकी दुकान से बहुत ही धीमी आवाज होती पर जब लुहार काम करता, तो उसकी दुकान से कानों के पर्दे फाड़ देने वाली आवाज सुनाई पड़ती! एक दिन सोने का एक कण छिटककर लुहार की दुकान में आ गिरा। वहाँ उसकी भेंट लोहे के एक कण के साथ हुई! सोने के कण ने लोहे के कण से कहा, "भाई, हम दोनों का दुःख समान है. हम दोनों को एक ही तरह आग में तपाया जाता है और समान रूप से हथोड़े की चोटें सहनी पड़ती हैं! मैं यह सब यातना चुपचाप सहन करता हूँ, पर तुम ...?"

"तुम्हारा कहना सही है, लेकिन तुम पर चोट करने वाला लोहे का हथोड़ा तुम्हारा सगा भाई नहीं है, पर मेरा वह सगा भाई है!" लोहे के कण ने दुःख भरे स्वर में उत्तर दिया! फिर कुछ रुककर बोला, "पराये की अपेक्षा अपनों की चोट की पीड़ा अधिक असहनीय होती है।"

घाट का पत्थर

एक पहाड़ की ऊँची चोटी से दो पत्थर साथ-साथ लुढ़कते हुए नीचे आये थे। उनमें से एक पत्थर पर धोबी अपने गंदे कपड़ों को पटक-पटक कर साफ करता था और एक शिवलिंग के रूप में नदी के किनारे बने मंदिर में पूजा जाता था।

धोबी के पत्थर ने एक दिन दुखी मन से शिवलिंग को संबोधित करते हुए कहा- "तात, आप धन्य हैं, देव मंदिर में प्रतिष्ठित हैं। भव-बंधनों में जकड़े प्राणी आपके पास आकर कितनी शांति, कितना संतोष अनुभव करते हैं। काश, यह पुण्य सुयोग हमें भी मिलता।"

शिवलिंग बना पत्थर अपने बारे में ऐसी प्रशंसा सुनकर गंभीर हो उठा. बोला- "तात! आपका दुःख करना बेकार है, आप नहीं जानते हम तो मात्र यहाँ आने वाले लोगों को क्षणिक शांति और शीतलता प्रदान करते हैं। आप तो बराबर बिना मन में कोई भाव लाए हर किसी का मैल धोते रहते हैं। आप की साधना धन्य है और मेरे से ज्यादा ऊँची है। मेरे पास आने की प्रथम कसौटी तो आप ही हैं। इसीलिए जब लोग मेरी उपासना करते हैं, तब मैं आपकी किया करता हूँ।"

घाट का पत्थर गद्‌गद् हो उठा और दुगुने उत्साह से लोगों का मैल धोने लगा. इसीलिए तो कहते हैं कर्म ही पूजा है।

पवित्रता

घर में पवित्रता से रसोई करना चाहिये. रसोईघर को पवित्र रखना चाहिये. पवित्र मन से भोजन बनाना चाहिए. रसोईघर अन्नपूर्णाजी का मन्दिर है. साधारण कोई मानव रसोईघर में आये नहीं, अन्न-जल को छुए नहीं, झूठा भी न करें. स्पर्श से अनेक दोष उत्पन्न होते हैं- **रसोईघर को पवित्र रखें. बहुत से लोग जूते-चप्पल पहन करके रसोईघर में जाने लगे हैं- अपने को बड़ा सयाना समझते हैं; ऐसा मानते हैं कि हम तो सुधरे हुए हैं....सुधरे हैं कि बिगड़े हैं-** ये तो भगवान् ही जाने! रसोईघर अन्नपूर्णा जी का मन्दिर है- पवित्रता से रसोई करना चाहिये.

कभी बाजार का खाना नहीं. बाजार का जो खाता है, उसकी बुद्धि बहुत बिगड़ती है. बाजार की वस्तु में अनेक की नजर पड़ती है- दृष्टिदोष आता है. बाजार की वस्तु में स्वच्छता भले ही हो जाय- पवित्रता जरा भी नहीं होती. छः महीने तक बाजार का खाना छोड़ो, **घर में पवित्रता से रसोई करो- भगवान् को भोग लगाओ. हाथ जोड़कर भोजन को ग्रहण करना चाहिए. छः महीना पवित्र अन्न पेट में जाय, फिर देखो- बुद्धि कैसी सुधरती है !**

आजकल इन माताओं को रसोई करने में आलस्य आता है, सो बाजार का मँगाती हैं और बच्चों को खिला देती हैं- बच्चो की बुद्धि बिगड़ जाती है. पवित्र मन से घर में रसोई करना भक्ति है. कितनी माताएँ बाहर घूमती हैं- घर में प्रेम से रसोई करें तो भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं. माताओं को अपने हाथ से भोजन बनाना चाहिए.

संकलन :- प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

आपने ममता की मोह की ये गठरी सिर पर रखी है इसको उतारो, नहीं तो अंतकाल ऐसी भारी होगी कि इसके नीचे आप चूरण हो जावेंगे।

।। नमः टेऊँरामाय ।। ।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।। ।। नमः सर्वानन्दाय ।।

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर प्रेम प्रकाश संदेश

वर्ष–2025 में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के प्रमुख पर्व व तीज–त्योहार

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
जन्म उत्सव 26 जून से 30 जून
वर्सी उत्सव 28 मई से 01 जून

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
जन्म उत्सव 01 अक्टूबर से 05 अक्टूबर 2025
वर्सी उत्सव 26 जुलाई से 30 जुलाई 2025

सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज
जन्म उत्सव 05 से 09 अगस्त
वर्सी उत्सव 11 अगस्त

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज
जन्म उत्सव 08 मई से 12 मई
वर्सी उत्सव 15 से 19 अगस्त

प्रयागराज कुम्भ में 104 वाँ चैत्र मेला 28 जनवरी से 01 फरवरी 2025

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जयंती मेला (सभी जगहों पर) 30 जून 2025

अमावस्या	चंद्र दर्शन	सद्गुरु टेऊँराम चौथ	पूर्णिमा	गणेश चतुर्थी	एकादशी
29 जनवरी	01 जनवरी	05 जनवरी	13 जनवरी	17 जनवरी	10 व 25 जनवरी
27 फरवरी	31 जनवरी	04 फरवरी	12 फरवरी	16 फरवरी	08 व 24 फरवरी
29 मार्च	01,30 मार्च	05 मार्च	13 मार्च	17 मार्च	10 व 26 मार्च
27 अप्रेल	29 अप्रेल	03 अप्रेल	12 अप्रेल	16 अप्रेल	08 व 24 अप्रेल
27 मई	28 मई	03 मई	12 मई	16 मई	08 व 23 मई
25 जून	26 जून	01, 30 जून	11 जून	14 जून	07 व 22 जून
24 जुलाई	26 जुलाई	30 जुलाई	10 जुलाई	14 जुलाई	06 व 21 जुलाई
23 अगस्त	25 अगस्त	29 अगस्त	09 अगस्त	12 अगस्त	05 व 19 अगस्त
21 सितम्बर	23 सितम्बर	27 सितम्बर	07 सितम्बर	10 सितम्बर	03 व 17 सितम्बर
20 अक्टूबर	23 अक्टूबर	27 अक्टूबर	07 अक्टूबर	10 अक्टूबर	03 व 17 अक्टूबर
20 नवम्बर	22 नवम्बर	26 नवम्बर	05 नवम्बर	08 नवम्बर	02 व 15 नवम्बर
19 दिसम्बर	21 दिसम्बर	25 दिसम्बर	04 दिसम्बर	07 दिसम्बर	01,15 व 31 दिसम्बर

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा महोत्सव
21 मई (बुधवार) से 30 जून (सोमवार) 2025 तक

प्रमुख तीज-त्योहार

09 जनवरी प्रेम प्रकाश मण्डल की कुम्भ मेला छावनी आरम्भ
14 जनवरी मकर संक्रांति, कुम्भ प्रारम्भ
28 जन. से 01 फर. 2025 प्रयागराज में श्री प्रेमप्रकाश मण्डल का 104वां चैत्र मेला
29 जनवरी–मौनी अमावस्या
02–03 फरवरी बसंत पंचमी
12 फरवरी माघी पूर्णिमा
26 फरवरी महाशिवरात्रि
13 मार्च होलिका दहन
14 मार्च होली उत्सव, धुलेण्डी
30 मार्च चैत्र नवरात्रा प्रारम्भ
30 मार्च **चेटीचण्ड भगवान झूलेलाल जयंती**
05 अप्रेल श्री दुर्गाष्टमी
06 अप्रेल श्रीरामनवमी
11 अप्रेल चैत्र मेला दिवस
12 अप्रेल श्री हनुमान जयंती
30 अप्रेल अक्षय तृतीया, आखा तीज
12 मई वैशाख पूर्णिमा,
12 मई सद्गुरु हरिदासराम जंयती
21 मई सद्गुरु टेऊँराम चालीसा शुरू
26 मई सोमवती अमावस्या
01 जून सद्गुरु टेऊँराम पुण्यतिथि
05 जून श्री गंगा दशहरा
07 जून निर्जला एकादशी
27 जून श्री जगन्नाथ रथयात्रा
30 जून सद्गुरु टेऊँराम जयंती
सद्गुरु टेऊँराम चालीहा पूर्ण
05 जुलाई सद्गुरु टेऊँराम छठी उत्सव
06 जुलाई देवशयनी एकादशी
10 जुलाई गुरुपूर्णिमा, व्यास पूजा
16 जुलाई झूलेलाल चालीहा आरंभ
29 जुलाई नागपंचमी
30 जुलाई सद्गुरु सर्वानन्द पुण्यतिथि
01 अगस्त सद्गुरु सर्वानन्द जलसमाधि दिवस (हरिद्वार)
09 अगस्त रक्षाबन्धन, पूर्णिमा
09 अगस्त सद्गुरु शान्तिप्रकाश जयंती
11 अगस्त सद्गुरु शान्तिप्रकाश पुण्यतिथि
12 अगस्त टीजड़ी पर्व
15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस, थदड़ी
16 अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी,
19 अगस्त सद्गुरु हरिदासराम पुण्यतिथि
25 अगस्त झूलेलाल चालीसा समापन
27 अगस्त श्री गणेश चर्तुथी
31 अगस्त श्री राधाष्टमी, सगड़ा बधण
06 सितम्बर अनन्त चर्तुदशी भगवान झूलेलाल अर्न्तध्यान दिवस
07 सितम्बर श्राद्धपर्व शुरू, चन्द्रग्रहण
14 सितम्बर महालक्ष्मी व्रत,सगिड़ा छोड़ण
21 सितम्बर सर्वपितृ अमावस्या
22 सितम्बर शारदीय नवरात्रा प्रारम्भ
23 सितम्बर असूचण्ड
30 सितम्बर दुर्गाष्टमी
01–05 अक्टूबर सद्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव
02 अक्टूबर विजयादशमी/दशहरा
02 अक्टूबर महात्मा गांधी ,शास्त्री जयंती
06 अक्टू. कार्तिक स्नान शुरू, शरद पूर्णिमा
10 अक्टूबर करवा चौथ व्रत
18 अक्टूबर धनतेरस
20 अक्टूबर अमावस्या, दीपावली
22 अक्टूबर गोवर्धन पूजा, अन्नकूट
23 अक्टूबर भाईदूज, कार्तिकोत्सव प्रारंभ
30 अक्टूबर गोपाष्टमी
31 अक्टूबर आँवला नवमी
02 नवम्बर–देवउठनी एकादशी/तुलसी विवाह
05 नव.– कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयंती
01 दिसम्बर– गीता जयंती, मोक्षदा एकादशी

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जिस मनुष्य के पास शुभ कर्मो रूपी टिकिट है,
वह संसार की यात्रा आसानी से कर सकता है।

भारत के प्रसिद्ध कैलेण्डरों–पंचांगों में 'सांई टेऊँराम जयंती' 'सांई टेऊँराम पुण्यतिथि प्रकाशित

उत्तर व पश्चिम भारत में सबसे अधिक प्रकाशित होने वाले अनेक कैलेण्डरों-पँचागों में इस वर्ष २०२५ में भी १ जून २०२५ रविवार को **'सांई टेउँराम पुण्यतिथि'** एवं ३० जून २०२५ सोमवार को **'सांई टेऊँराम जयंती'** को दर्शाया गया है. इसमें पूरे भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला लाला रामस्वरूप रामनारायण पँचाग व समाचार पत्र **राजस्थान पत्रिका** प्रमुख हैं,राजस्थान पत्रिका के अनेक संस्करणों में उपरोक्त तिथियाँ दर्शायी गई हैं. राजस्थान पत्रिका का कलेण्डर, दिल्ली का निर्णय पंचाग, नीमच का निर्णय सागर, कालदर्शक, अजमेर का श्री सरस्वती पंचाग, श्री कालबोध प्रभूदर्शन, श्री सुभाष हिन्दी पंचाग, भारतीय श्रीकृष्ण पंचाग, लाला रामनारायण पंचाग, मथुरा का श्री देव कालदर्शक, श्रीधाम कालदर्शक पंचाग, देहरादून-हरिद्वार का वाणी भूषण, श्री गंगा पंचाग, हरिद्वार-जयपुर का ज्योतिष सम्राट कालदर्शक, राष्ट्रीय कालदर्शक पंचाग, किशोर जन्त्री, किशनगढ़ अजमेर का श्री धनी कालदर्शक, श्री हरि कालदर्शक, दिल्ली का राजधानी पंचाग, श्री बृजराज पंचाग, ज्ञानगंगा काल दर्शक, रोशनी काल दर्शक पँचाग, इंडिया गेट चावल पंचाग एवं अनेक दूसरे शहरों से प्रकाशित होने वाले पंचागों में भी सांई टेऊँराम जयंती तिथि एवं पुण्यतिथि दर्शायी गयी है ।

श्री प्रेम प्रकाश पंथ के आधार स्तम्भ, संस्थापक प्रवर्तक आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एक अवधूत योगी तपस्वी, तत्त्वज्ञ, सिद्ध महापुरुष हुए हैं. जिनके द्वारा जिज्ञासुओं के आध्यात्मिक पथ आलोक के लिये अमोलक सद्ग्रंथ "श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ" की रचना संसार में आने वाले युग-युगान्तर तक ज्ञान ज्योति प्रकाशित करती रहेगी. ऐसे ज्ञानविभूति योगीराज सत्पुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पुण्यतिथि १ जून २०२५, रविवार एवं सांई टेऊँराम जयंती ३० जून २०२५, सोमवार को विश्व विख्यात कैलेण्डरों-पँचागों में इस वर्ष भी स्थान दिया गया है. अनेक कैलेण्डरों-पँचांगों में सांई टेऊँराम बाबा का चित्र भी उपरोक्त तारीखों में छापा गया है. ऐसे सिद्ध संत महापुरूष की जयंती विश्व के जाने माने कैलेंडरो पंचांगों में प्रकाशित होने पर संत समाज अभीभूत है ! इस पुनीत कार्य के लिये श्री प्रेम प्रकाश संत मण्डल ने प्रकाशक बंधुओं, ज्योतिषाचार्यों को साधुवाद देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आचार्य द्वारा चलाई गई प्रथा ही परम्परा कहलाती है वह शास्त्रों के आधार पर होती है। जो कोई शिष्य अपने आचार्य की परम्परा को ज्यों का त्यों बनाये रखाता है उसको ही गुरुभक्त कहते हैं।

समाचार डायरी // साँई टेऊँराम चौथ पर्व पर विशाल पौष बड़ा महोत्सव का आयोजन हुआ

जयपुर ।आस्था के पावन स्थान श्री अमरापुर स्थान जयपुर में महर्षि आचार्य १००८ श्री सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का मासिक जन्मोत्सव चौथ पर्व ५ जनवरी रविवार को पूर्ण श्रद्धा भाव से मनाया गया। उत्सव के उपलक्ष में प्रातः काल नित्य नियम प्रार्थना, संत महात्माओं द्वारा भजन संकीर्तन आचार्य श्री की महिमा का गुणगान, आरती आदि कार्यक्रमों हुआ । सायंकाल के समय महिला मंडल द्वारा सामूहिक चालीसा का पाठ एवं संतो द्वारा संगीतमय ब्रह्म दर्शनी का पाठ किया गया। चौथ महोत्सव पर गुरुकुल के बटुक ब्राह्मणों द्वारा स्वस्ति वाचन पाठ हुआ। आरती के पश्चात् आचार्य श्री के श्रीविग्रह के समक्ष ५६ भोग थाल अर्पित कर विश्व शांति के कल्याण हेतु प्रार्थना की गई । समाधि स्थल श्री मंदिर को सुंदर ऋतु पुष्पों से श्रृंगारित कर मंदिर प्रांगण में आकर्षक रंगोली बनाई गई। महोत्सव में चाकसू, खैरथल, दिल्ली, अजमेर, चोमू, अमदाबाद , हिम्मत नगर, आदि शहरों के सैकड़ों भक्तों ने बाबा के द्वार पर माथा टेककर अपनी हाजरी लगाई !! सरस निकुंज के अलबेली शरण जी महाराज, छोटे भैया, बटुक ब्राह्मणों का भोजन प्रसाद हुआ !! दिनभर भक्तों का दर्शनों के लिए तांता लगा रहा! सभी भक्तों को पौष बड़ा प्रसादी वितरण किया गया !!

चौथ उत्सव पर नि:शुल्क योग साधना शिविर का भी आयोजन किया गया

जयपुर । श्री अमरापुर स्थान जयपुर में ५ जनवरी रविवार को चौथ पर्व पर श्री अमरापुर सेवा समिति एवं जेन दीन योग साधना समिति के संयुक्त तत्वाधान में प्रातः८ बजे से दोपहर १२ बजे तक शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में सैकड़ों भक्त लाभान्वित हुए, इससे पूर्व पावन शनिवार को श्री अमरापुर सेवा समिति और किशनीबाई वसंदानी ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में नि:शुल्क हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया। शिविर के अंतर्गत विटामिन डी, खनिज स्तर लिपिड प्रोफाल, हड्डियों की जांच आदि की निःशुल्क जांच आधुनिक तकनीकों की मशीनों से की गई। जांच के अंतर्गत किसी भी प्रकार का ब्लड सैंपल नहीं लिया गया। शिविर में लगभग ६० से अधिक भक्तों ने लाभ उठाया।

मकर संक्रांति पर श्री अमरापुर दरबार में पंतगों का श्रृंगार (झांकी) दर्शन

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

मोहरूपी घोर अन्धाकार को नाश करने के लिये आत्म–ज्ञान रूपी दीपक की ही आवश्यकता होती है । यह आत्म–ज्ञान रूपी दीपक ब्रह्मनेष्ठी और ब्रह्मक्षोत्रिय देहधारी सद्गुरु ही दे सकता है ।

महाशिवरात्री पर्व धूमधाम से मनाया गया

जयपुर। आस्था के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में २६ फरवरी बुधवार को महाशिवरात्रि का पावन पर्व श्रद्धा भाव से मनाया गया। उत्सव के उपलक्ष में प्रातः काल ६ बजे श्री अमरापुरेश्वर महादेव मंदिर में प्रातः ६ बजे से एक पहर एक घटी २४ मिनट की विशेष पूजा का आयोजन किया गया , जिस में देवों के देव भगवान महादेव का गंगा जल एवं त्रिवेणी संगम के जल से विशेष अभिषेक किया गया । इस विशेष पूजा में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

प्रातः ७ बजे विशेष पूजा अर्चना के उपरांत नित्य नियम प्रार्थना, संत महात्माओं द्वारा भजन संकीर्तन, प्रवचन कैसेट, हवन यज्ञ अनुष्ठान , ध्वज वंदना आदि का कार्यक्रम हुआ।

श्री अमरापुरेशवर महादेव मंदिर में संतो के सानिध्य में प्रातः १० से ११ बजे तक सामूहिक पूजा, अभिषेक, कर भोले बाबा को बिल्व पत्र, आक धतूरे की माला, रुद्राक्ष की माला अर्पित कर आरती की गई।

श्री अमरपुरेश्वर महादेव मंदिर में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भोले बाबा की मनमोहक सुंदर बर्फ की झांकी सजाई जाएगी। उत्सव के उपलक्ष में विशाल भंडारे का आयोजन भी किया गया। हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भंडारे के प्रसाद का आनंद लिया। दिन भर भक्तों का दर्शनों के लिए तांता लगा रहा!!

जयपुर समेत अन्य शहरों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी महाशिवरात्री का पावन पर्व बड़े ही उत्साह-उमंग के साथ मनाया गया।

होली उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

धर्मशाला/जयपुर । रंगो का उत्सव होली महापर्व श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में सन्तों एवं श्रद्धालुओं द्वारा प्रेम प्रकाश स्वर्गाश्रम धर्मशाला में पुष्पों की होली खेलकर मनाया गया । पूज्य महाराजश्री द्वारा भजन गाकर भक्त प्रहलाद की महिमा का वर्णन किया गया । इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने भी भजन गाकर एक दूसरे को होली की शुभकामनाएं दी ।

इस अवसर पर श्री अमरापुर स्थान जयपुर में भी फागोत्सव/होली उत्सव बड़े ही धूमधाम से सन्तों के सानिध्य में पुष्पों की होली खेलकर मनाया गया ।

संतो के संग होली खेलो...पीवो प्रेम का प्याला रे....

प्रातः काल की पावन वेला में नित्य नियम प्रार्थना, संत महात्माओं द्वारा भजन संकीर्तन आचार्य श्री की महिमा का गुणगान किया गया। तत्पश्चात् होली उत्सव के उपलक्ष में संतो द्वारा आचार्य श्री के विग्रहो पर पुष्प माला अर्पित कर केसर तिलक लगाया। होली महोत्सव भजनों पर श्रद्धालु झूमने लगे । सन्तों द्वारा सभी के ऊपर पुष्प वर्षा कर होली मनायी गयी । इस अवसर पर हजारों की संख्या में प्रेमीगण उपस्थित थे । फूलों की सुगंध से अमरापुर धाम वृंदावन सा प्रतीत हुआ और उस भक्ति में भगत भावविभोर हो गए।

श्री मंदिर समाधि स्थल को ऋतु पुष्पों से श्रृंगारित किया गया । सन्तों द्वारा सत्संग में भक्त प्रहलाद की महिमा का गुणगान किया गया कि किस प्रकार भक्त प्रहलाद ने इतने कष्ट-विपत्तियां आने के बाद भी भगवान पर पूरा भरोसा रखा ।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिस गंदे शरीर पर गर्व करते हो वह तो एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा ।

सद्गुरू शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जब कोई सांसारिक पदार्थों एवं कार्यों का त्याग करता है
तब वह परमात्मा के निकट होता है।

मेरे सत्गुरु मैं तो धन्य हुआ, प्रयाग में आकर

मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, प्रयाग में आकर.

अलमस्त सा मन,मेरा तृप्त हुआ, गुरू दर्शन पाकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, प्रयाग में आकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, अमरापुर आकर.।

बड़ी कसक और बड़ी तड़फ थी, कब आऊँगा,
बहुत समय से चाह थी कब, दर्शन पाऊँगा,
श्री गुरू चरणों की रज को, अपने शीष चढ़ाकर,
मेरे सत्गुरू मैं धन्य हुआ, तेरा दर्शन पाकर,
मेरे सत्गुरू मैं धन्य हुआ, प्रयाग में आकर.।
अलमस्त सा मन,मेरा तृप्त हुआ३

माना,तीनों नदियों का,संगम है अति पावन,
है प्रेम प्रकाशी सन्तों की टोली, मन भावन,
बाबा टेऊँराम की महिमा को जरा, देखो गाकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, तेरा दर्शन पाकर,
हे सत्गुरू मैं धन्य हुआ, प्रयाग में आकर.।
अलमस्त सा मन,मेरा तृप्त हुआ३

सच मानो मेरे दिल को,इतना चैन मिला है,
लगता है अब आकर के,अपना भाग्य खुला है,
रात अमावस में ज्यों, मुझको मिला दिवाकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, तेरा दर्शन पाकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, प्रयाग में आकर.।
अलमस्त सा मन,मेरा तृप्त हुआ३

ये नजरें मेरी थकती ना, गुरू का दर्शन पाकर,
मैं,बार–बार आना चाहूँ, तेरे इस दर पर,
तुम्हें बारम्बार में निरखूँ, तेरा बनके चाकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, तेरा दर्शन पाकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ,प्रयाग में आकर.।
अलमस्त सा मन,मेरा तृप्त हुआ, गुरू दर्शन पाकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, प्रयाग में आकर,
मेरे सत्गुरू मैं तो धन्य हुआ, अमरापुर आकर.।

मेरे सत्गुरू, दीन दयाल,मैं क्यों घबराऊँ

मेरे सत्गुरू, दीन दयाल, मैं क्यों घबराऊँ,
किया, प्रेम से मालामाल, मैं क्यों घबराऊँ,
मेरा हरपल रखते ख्याल,ओ.......
मेरा हरपल रखते ख्याल, मैं क्यों घबराऊँ,
दे नाम है किया निहाल, मैं क्यों घबराऊँ.।

नाता है जोड़ा जबसे, सत्गुरू आप से,
सब कुछ छोड़ा मैने, सत्गुरू आप पे, सब...
अब रहा ना कोई मलाल, मैं क्यों घबराऊँ,
मेरे सत्गुरू, दीन दयाल, मैं क्यों घबराऊँ,
किया, प्रेम से मालामाल, मैं क्यों घबराऊँ,
मेरा हरपल रखते ख्याल,ओ.....
मेरा हरपल रखते ख्याल, मैं क्यों घबराऊँ,
दे नाम है किया निहाल, मैं क्यों घबराऊँ.।

जब–जब रोया हूँ मैं, तुमनें हंसाया,
रोते हुओं को तुमने,गले से लगाया, रोते..
अब रहा ना कोई सवाल,मैं क्यों घबराऊँ,
मेरे सत्गुरू, दीन दयाल, मैं क्यों घबराऊँ,
किया, प्रेम से मालामाल, मैं क्यों घबराऊँ,
मेरा हरपल रखते ख्याल,ओ.....
मेरा हरपल रखते ख्याल, मैं क्यों घबराऊँ,
दे नाम है किया निहाल, मैं क्यों घबराऊँ.।

मुझे है भरोसा तुम संग, तर जाऊँगा,
निश्चय है आखिर अमरापुर आऊँगा, निश्चय...
तुम काटोगे जंजाल, मैं क्यों घबराऊँ
मेरे सत्गुरू, दीन दयाल, मैं क्यों घबराऊँ,
किया, प्रेम से मालामाल, मैं क्यों घबराऊँ,
मेरा हरपल रखते ख्याल,ओ......
मेरा हरपल रखते ख्याल, मैं क्यों घबराऊँ,
दे नाम है किया निहाल, मैं क्यों घबराऊँ.।

भक्तों पे जब–जब कोई, विपदा है आई,
सत्गुरू जी तुमनें हरदम,प्रीत निभाई, सत्गुरू....
करी रक्षा बन कर ढाल, मैं क्यों घबराऊँ,
मेरे सत्गुरू, दीन दयाल, मैं क्यों घबराऊँ,
किया, प्रेम से मालामाल, मैं क्यों घबराऊँ,
'वधवा' का रखना ख्याल,ओ......
'वधवा' का रखना ख्याल,मैं क्यों घबराऊँ,
दे नाम है किया निहाल, मैं क्यों घबराऊँ......

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा, समालखा मण्डी (हरियाणा)

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

सेवा का जो कार्य है वह बहुत कठोर होता है जो योगियों को भी दुर्लभ मिलता है, इसे अपना कर्तव्य समझकर ही करना चाहिए।

अमरापुर गमन

पुजारी बाबा श्री प्रतापराम जी

जयपुर -शांति चित्त, सरल हृदय, अमरापुरधाम के पुजारी श्रद्धेय श्री प्रतापराम जी ८६ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक ३ फरवरी २०२५ (बसंत पंचमी के पावन दिवस) को प्रातःकाल की पुनीत वेला में इस पंच भौतिक देह का परित्याग कर श्री गुरुचरणों में लीन हो गए। आप दूरसंचार विभाग में कार्यरत् थे। शेष समय में आप प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष तपोमूर्ति पूज्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सान्निध्य में अमरापुर धाम जयपुर की सेवा सुश्रुषा करते रहे। आप नित्य प्रातः सत्संग में ''श्री योग वशिष्ठ ग्रन्थ'' का पाठ किया करते थे साथ ही प्रातः एवं सायं सत्संग हॉल की सोहनी सेवा (झाड़ू बुहार) भी किया करते थे। परमादरणीय पूज्यपाद् सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जयपुर प्रवास के दौरान जब पूज्य गुरुवर सायंकालीन सत्संग के पश्चात् पैदल सैर करके आते थे तब आप उनके सम्मुख ''पारस भाग (पारसमणी), श्री पक्षपात रहित अनुभव प्रकाश इत्यादि सद्ग्रंथों का वाचन किया करते थे। सेवा निवृति पश्चात् जयपुर के बाहर जब भी हरिद्वार में श्री सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्मोत्सव एवं जहां भी कुम्भ मेले आयोजित होते थे वहां पर आप प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र छावनी में श्री मंदिर में पुजारी का सेवा कार्य पूर्ण लग्न व निष्ठा के साथ करते रहे। आप सौभाग्यशाली रहे कि आपको प्रेम प्रकाश पीठाधीश्वर त्रय के श्रीचरणों की सेवा का मंगल अवसर प्राप्त हुआ ही साथ ही साथ गत् २५ वर्षों से जीवन के अंतिम क्षणों तक वर्तमान प्रेम प्रकाश पीठाधीश्वर पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में रहकर श्री अमरापुर धाम में श्री मंदिर एवं पूज्य समाधी साहिब की पूजा-अर्चना, सेवा शुश्रुषा कर मानव जीवन को धन्य किया। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन अत्यंत सादगी पूर्ण व्यतीत किया।

श्रीमती प्रीती वाधवानी

बेलीज। श्री ताराचन्द टेकचन्दानी की सुपुत्री श्रीमती प्रीती वाधवानी धर्मपत्नी श्री विनोद वाधवानी, ४७ वर्ष की आयु में दिनांक ०३ जनवरी २०२५ को इस नश्वर शरीर का त्याग कर पूज्य आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी।

श्रीमती जयदेवी जी

नई दिल्ली। श्रीमती जयदेवी जी, ७० वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक ३१ दिसम्बर २०२४ को इस भौतिक शरीर का त्याग कर पूज्य आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी।

दादा श्री गुरुमुखदास जी

जयपुर - दादा श्री गुरुमुखदास जी ७५ वर्ष की आयु में दिनांक २३ मार्च २०२५ को इस नश्वर देह का परित्याग कर श्री अमरापुर धाम सिधारे। आप मानसरोवर जयपुर स्थित ''स्वामी टेऊँराम चिकित्सालय में सेवा करने के साथ-साथ नित्य प्रति श्री अमरापुर स्थान आकर पूर्ण श्रद्धाभाव से जीवन के अंतिम क्षणों तक सेवा शुश्रुषा करते रहे।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

सब जीवों को परलोक के मार्ग में काम आने वाला सामान अभी से ही लेना चाहिये। सामान वह खरीदना चाहिए जो कभी भी पुराना न हो, न ही बेचने पर घाटा पड़े। वह है निष्काम सत्कर्म एवं नाम-स्मरण

दादा श्री देवीदास कृष्णानी जी

हरिद्वार - श्री गुरुचरणानुरागी दादा श्री देवीदास कृष्णानी जी, पुत्र - श्री खेमचन्द जी निवासी टण्डो आदम, सिन्ध, वर्तमान निवासी - सूखी नदी, खड़खड़ी, हरिद्वार ७५ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक २१ मार्च २०२५ शुक्रवार को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दिव्य श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे। आप पूर्व में प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा पर सेवा कार्यों में संलग्न रहे। वर्ष १६६६ से जीवन के अंतिम समय तक प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार पर कोठार में सेवा कार्य पूर्ण निष्ठा के साथ करते रहे।

दादा श्री मनोहरलाल जी

रतलाम - प्रेम प्रकाश आश्रम ट्रस्ट, रतलाम के वयोवृद्ध कर्तव्यपरायण न्यासी दादा श्री मनोहरलाल जी पुत्र अमरापुरवासी श्री नत्थूराम जी, गीदर गोठ सिन्ध निवासी इस भौतिक देह का परित्याग कर दिनांक १६ मार्च २०२५ को दिव्य श्री गुरुचरणों में अमरापुर धाम पधारे। आप गत् ४०-४५ वर्षों से पूज्य गुरुजनों की सेवा सुश्रुषा में संलग्न रहे। आपने अमरापुरवासी दादा श्री शंकरलाल जी छेतिया जी के साथ मिलकर रतलाम में पूज्य गुरुजनों की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार किया तत्पश्चात् प्रेम प्रकाश आश्रम रतलाम के भवन निर्माण के समय से जीवन पर्यन्त पूज्य श्री गुरुचरणों की सेवा श्रद्धा और कृतज्ञता से ओत-प्रोत हृदय के साथ करते रहे।

श्रीमती कौशल्या देवी छाबड़ा जी

कोटा। श्रीमती कौशल्या देवी छाबड़ा जी, ७८ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक २८ फरवरी २०२५ को इस भौतिक शरीर का त्याग कर पूज्य आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी । आप पिछले ३५ वर्षों से श्री प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा के सेवा कार्यों में सेवारत थी ।

श्री सुदर्शन लाल जी

दिल्ली। श्री सुदर्शन लाल जी, ७६ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक २५ जनवरी २०२५ को इस भौतिक शरीर का त्याग कर पूज्य आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे ।

श्री भगवान दास गनवानी जी

जयपुर। श्री भगवान दास गनवासी जी पुत्र अमरापुरवासी श्री वीरुमल गनवानी जी, ६८ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक २५ जनवरी २०२५ को इस भौतिक शरीर का त्याग कर पूज्य आचार्य श्री के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे । आप पिछले १८ वर्षों से अमरापुर दरबार की धर्मशाला और गेट की सेवा में सेवारत थे।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सदगुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश — दुनिया में कहने वाले मनुष्य बहुत हैं, करने वाला कोई विरला है।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

शास्त्रों एवं संतो की वाणी का अभ्यास करने से आपके मन का दर्पण साफ होगा। यदि मन निर्मल है तो आप प्रभु का दर्शन कर सकते हैं।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर
सतगुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज
का यात्रा कार्यक्रम

27–28 मार्च 2025	लखनऊ
29–30 मार्च 2025	कानपुर
31 मार्च से 02 अप्रेल 2025	प्रयागराज
03 अप्रेल 2025	आगरा (काला महल)
04–05 अप्रेल 2025	आगरा (केदार नगर)
06–07 अप्रेल 2025	हरिद्वार
08 अप्रेल 2025	यात्रा
09–10 अप्रेल 2025	अकोला
11–12 अप्रेल 2025	जलगांव
13–14 अप्रेल 2025	हरिद्वार
15 अप्रेल 2025	यात्रा
16 अप्रेल 2025	यवतमाल
17–18 अप्रेल 2025	अमरावती
19–20 अप्रेल 2025	नागपुर
21–25 अप्रेल 2025	इन्दौर
26–27 अप्रेल 2025	उज्जैन
28–29 अप्रेल 2025	रतलाम

व्रत–पर्व–उत्सव

10 मार्च 2025– सोमवार– एकादशी
13 मार्च 2025– गुरुवार– पूर्णिमा, होलिका दहन
14 मार्च 2025– शुक्रवार– होली उत्सव, धुलेण्डी
17 मार्च 2025–सोमवार– गणेश चर्तुर्थी
26 मार्च 2025– बुधवार– एकादशी
29 मार्च 2025– शनिवार– अमावस्या
30 मार्च 2025– रविवार– चन्द्र दर्शन, चेट्रीचण्ड
30 मार्च 2025– रविवार– चैत्र नवरात्रा प्रारम्भ
03 अप्रेल 2025– गुरुवार– चौथ (मंगलमूर्ति सतगुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
05 अप्रेल 2025– शनिवार– श्री दुर्गाष्टमी
06 अप्रेल 2025– रविवार– श्री रामनवमी
08 अप्रेल 2025– मंगलवार– एकादशी
11 अप्रेल 2025– शुक्रवार– चैत्र मेला दिवस जयपुर
12 अप्रेल 2025– शनिवार– पूर्णिमा, श्री हनुमान जयन्ती
16 अप्रेल 2025–बुधवार– गणेश चर्तुर्थी
24 अप्रेल 2025– गुरुवार– एकादशी
27 अप्रेल 2025– रविवार– अमावस्या
29 अप्रेल 2025– मंगलवार– चन्द्र दर्शन
30 अप्रेल 2025– बुधवार– अक्षय तृतीय, आखातीज

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता। वह अपनी अबाध गति से अपने पथ पर निरन्तर चलता ही रहता है। जहाँ तक पढ़ने, सुनने, देखने और मन की गति है, वह सब समय के अधीन है

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

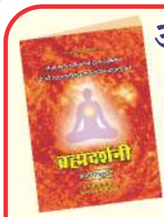

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं दिसम्बर २०२४ अंक खां अगिते-

।। दशपदी - 18 ।।

गुरु चरनों में जाकां प्रेमा, गुरु का मन्त्र जपे नित नेमा।
गुरु की आज्ञा कबहुँ न टाले, गुरु के भाणे में नित चाले।
गद् गद् हो गुरु के गुन गावे, गुरु पद की रज सीस चढ़ावे।
गुरु आगे ना आप जनावे, दुविधा दुर्मति कपट नसावे।
गुरु सेवा में होवे सन्मुख, कह टेऊँ सो जानो गुरुमुख।। 2 ।।

इन दशपदीअ में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज 'गुरमुख' जा उहिञाण/लक्षण बुधाईंदे चवनि था, "जेको पंहिंजे गुरूअ जे चरणनि सां प्रेमु करे थो, जेको नेम सां सदाईं गुरूअ द्वारां मिलियल मंत्र जो, गुर-मंत्र जो जपु करे थो; जेको गुरुअ जी आज्ञा जो कड॒हिं बि उलंघनु नथो करे; जेको सदाईं गुरूअ जे भाणे ते (इच्छा अनुसार) हले थो; जेको गद् गद् थी करे, खुशीअ सां गुरुअ जा गुण गा॒ए थो; जेको गुरुअ जे चरणनि जी मिटी पंहिंजे मस्तक ते लगा॒ए थो; जेको गुरूअ जे अगि॒यां पाण खे कोन थो डे॒खारे ऐं पंहिंजूं दुविधा संशय, कपट कूड़ दोलाब ऐं खोटा ख्याल हटाए छदे॒ थो । जेको गुरूअ जी शेवा करण में सदाईं हाज़िरु रहे थो, तंहिंखे **'गुरुमुख'** समुझणु घुरिजे. "

'गुरुमुख/गुरमुख' शब्दु कंहिंजे लाइ थो वापराइजे? गुरमुखु कंहिंखे चवणु घुरिजे? गुरमुख जा कहिड़ा गुण आहिनि? गुरुमुखु उहो मनुषु हूंदो आहे, जेको गुरूअ जे अनुसार हलंदो आहे ऐं पाप कर्मनि, दुष्ट कर्मनि जो त्यागु करे गुरु-ज्ञान जी जोति जे प्रकाश में सचाईअ जो रस्तो अपनाए पंहिंजो जीवनु जीअंदो आहे. इन लाइ हू केतिरा ई कष्ट पिणु सहंदो आहे. गुरमुखु सत्गुरूअ जे उपदेश में श्रद्धा रखी संसार में रहंदो आहे. हुन जो जीवनु वैरा॒ग सां भरियलु ऐं माया-मोह खां परे हूंदो आहे. हुन जो सजो॒ ध्यानु गुरूअ तरफ़ि हूंदो आहे. गुरु ऐं गुरमुख जे विच में कोई परदो या दीवार कान हूंदी आहे. हू गुरूअ जी आज्ञा जो पालनु कंदड़ु हूंदो आहे ऐं पंहिंजे मन खे विच में कोन आणींदो आहे. हू विवेक सां भगि॒ती-मार्ग ते हलंदड़ु हूंदो आहे. भगि॒तीअ जो अर्थु आहे, गुरूअ जी आज्ञा जो पालनु करणु. शिष्य खे गुरुमुखु हुअणु घुरिजे. संत कबीर जे शब्दनि में.

गुरुमुख गुरु चितवत रहे, जैसे मणिहिं भुजंग।
कहैं कबीर बिसरें नहीं, यह गुरुमुख को अंग।।

(हलदंड़ु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।

कार्यालयः प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)

सम्पादक : प्रहलाद सबनानी | प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें–

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)